16
अध्याय

अन्य स्वास्थ्य संस्थान

16-1 vf[ky Hkkjrh; Hkkfrd fpfdRlk ,o iquokl lLFkku ¼,vkbvkbih,evkj½] eqEcb

अखिल भारतीय भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास संस्थान की स्थापना संयुक्त राष्ट्र संघ की तकनीकी विशेषज्ञता और मानवशक्ति सहयोग से एक प्रायोगिक परियोजना के तौर पर वर्ष 1955 में हुई थी, जो 1959 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आया।

एआईआईपीएमआर एक शीर्ष संस्थान है और गंभीर तथा स्थाई रूप लोकोमोटर निःशक्तता से ग्रस्त व्यक्तियों को समग्र पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता हेतु मान्यता प्राप्त है।

16-1-1 okf"kd lkf[;dh ¼vily 14&ekp 15½

		vkihMh	fQft;kfFkjih	0;kolkf;d mipkj	jfM;kykth	iFkkykth	okd
1.	पीडब्ल्यूडी की संख्या (आकलित और उपचार प्राप्त)	33916	16989	16326	8613	25910	2494
2.	की गई शल्यक्रियाएं (बड़ी और छोटी)	3460	–	–	–	–	–

इसके अतिरिक्त, 6314 सहायक यंत्र और उपकरण प्रदान किए गए थे। 3542 प्रमाण पत्र जारी किए गए थे।

0;kolkf;d if'k{k.k dk;'kky

क) रोजगार हेतु सहायता प्राप्त करने वाले, प्रशिक्षित और मूल्यांकित तथा विभिन्न संगठनों में लगाए गए उम्मीदवारों की संख्या – 244

ख) मोबिलिटी एड और बैठने के उपकरणों को तैयार करना – 84

16-1-2 {kerk eo of)

- बायो–मीट्रिक उपस्थिति प्रणाली सक्षम आधार व्यवस्था करना।
- प्लास्टिक आर्थोसिस के फ्रेब्रिकेशन में वृद्धि के लिए हीटिंग लो टेम्परेचर थर्मोप्लास्टिक हेतु रोल–आउट ट्रॉली व वाटर बॉथ के साथ इंफ्रारेड ओवन की स्थापना
- ऑप्शनल लॉकिंग तंत्र वाले पॉलीसेंट्रिक नी ज्वाइंट के साथ इण्डोस्केलेटल ट्रांस–फेमोरल प्रोस्थेसिस का प्रावधान।
- बाइलैट्रल एम्प्यूटीज हेतु थर्मोप्लास्टिक नी पैड
- एआरएमईओ–वर्चुअल रियल्टी का उपयोग करते हुए एक लक्ष्य निर्धारित गतिविधि की सुविधा प्रदान करने के लिए कम्प्युटराइज्ड ऑटोमेटेड आर्म थिरेपी प्रणाली
- शरीर के ऊपरी भाग को सुदृढ़ करने वाले व्यायामों हेतु आर्म एर्गोमीटर।
- बच्चों के मामले में सुनने की क्षमता की जांच के लिए ओटो एकॉस्टिक एमिशन और ऑडिटोरी ब्रेन स्टेमरिस्पांस स्कैनर।

16-1-3 inku dh xb fo'k"k lok

- वृद्ध व्यक्तियों हेतु बोन डेंसिटोमिट्री और सेंसरी मूल्यांकन कैम्प।

16-1-4 vuql/kku vkj fodkl% dN egRoi.k vuql/kku vkj fodkl xfrfof/k;k g%

- प्लेनटर फेसाइटिस और ह्यूमरस का लैटरल एपीकांडाइलिटिस जैसे विभिन्न मुस्कयूलो स्केलेटल स्थितियों में प्लेट्लेट रिच प्लाज्मा के उपयोग की प्रभावकारिता।

- मधुमेह के रोगियों में सेंसरी मोटर का प्रचालन।
- डेमेंसिया रोगियों पर काग्नीटिव स्टीमुलेशन थिरेपी।
- एक वर्टेब्रल आर्थोसिस का विकास।
- एक कॉयल स्प्रिंग लोडेड एंकल ज्वाइंट का विकास।

oKkfud izdk'ku ,oa vuqla/kku

Ø- la-	foHkkx	LVkQ funsf'kr vuqla/kku				
		iLrqr 'kks/k&i=	izdkf'kr 'kks/k&i=	iz.kkyh 'kks/k fuca/k	vkef=r 0;k[;krk	Hkkx fy, x, dk;Z'kkyk@ laxks"Bh@ lEesyu
1.	चिकित्सा क) पीएमआर ख) रेडियोलोजी	 12 02	 02 –	 02 –	 – –	 – –
2.	भौतिक चिकित्सा विभाग	03	04	15	–	–
3.	व्यावसायिक थैरेपी	–	01	08	–	04
4.	जोड़ एवं हड्डी संबंधी	–	–	18	–	02

16-1-5 'kS{kf.kd dk;Zdyki

Ø- la-	ikB;Øe dk uke	}kjk ekU;rk ikIr@lac) ikB;Øe	vof/k	izo'k {kerk ¼,@okb½ vizy 14&ekpZ 15	ukekafdr Nk= ¼2014&2015½		2014 dh ijh{kk eas mRrh.kZ Nk=
1	एमडी (काय चिकित्सा व पुनर्वास) एमडी (पीएमआर)	एमयूएचएस, नासिक	3 वर्ष	02	प्रथम वर्ष	01	01
					द्वितीय वर्ष	01	
					तृतीय वर्ष	01	
2	फिजियोथिरेपी में स्नातकोत्तर (एमपीटीएच)	एमयूएचएस, नासिक	3 वर्ष	06	प्रथम वर्ष	06	04
					द्वितीय वर्ष	05	
					तृतीय वर्ष	04	
3	व्यावसायिक थिरेपी में स्नातकोत्तर	एमयूएचएस, नासिक	3 वर्ष	06	प्रथम वर्ष	03	01
					द्वितीय वर्ष	00	
					तृतीय वर्ष	01	
4	प्रोस्थेटिक और आर्थोटिक्स में	एमयूएचएस, नासिक	2 वर्ष	04	प्रथम वर्ष	04	04
					द्वितीय वर्ष	04	
5	प्रोस्थेटिक और आर्थोटिक्स में स्नातक (बीपीओ)	एमयूएचएस, नासिक / आरसीआई	4 वर्ष	30	प्रथम वर्ष द्वितीय वर्ष	22 34	08
					तृतीय वर्ष	23	
					चुतर्थ वर्ष	16	
					प्रषिक्षु	08	

- vU; izf'k{k.k xfrfof/k;ka

  – ताजिकिस्तान सरकार के सहयोग से डब्ल्यूएचओ कार्यालय ताजिकिस्तान द्वारा नामित दो चिकित्सकों को अक्टूबर, 2014 से छः माह के लिए काय चिकित्सा और पुनर्वास में प्रशिक्षित किया गया था।

  – अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम – स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और यूनीसेफ द्वारा एक पहल राष्ट्रीय बाल सुरक्षा कार्यक्रम (आरबीएसके) हेतु 12 से 27 नवंबर, 2014 के बीच पूरे भारत से 14 फिजियोथिरेपिस्ट और व्यावसायिक थिरेपिस्ट के पहले बैच को प्रशिक्षित किया गया।

16-1-6 fofHkUu fot

i) डॉ. पवेल उर्सु, डब्ल्यूएचओ प्रतिनिधि और ताजिकिस्तान के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने 9.5.2015 को दौरा किया।

ii) श्री जगत प्रकाश नड्डा, केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री– 15.1.2015

16-1-17 lwpuk dk vf/kdkj dk dk;kZUo;u

प्राप्त और उत्तर दिए गए आरटीआई आवेदनों की संख्या – 19

16-1-18 fu%'kDr 0;fDr;ksa dk vkadMk

depkfj;ksa dh la[;k		ihMCY;w depkfj;ksa dh la[;k
समूह क	– 50	02
समूह ख	– 55	00
समूह ग	– 166	10
dqy	271	12

अधिक निःशक्त जनों तक पहुंचने के उद्देश्य से जिला अस्पतालों में अनुषंगी केंद्र आरंभ करने के प्रस्ताव द्वारा संरचना के निर्माण व जनशक्ति की क्षमता में वृद्धि करके संस्थान पहल कर रहा है।

16-2 vf[ky Hkkjrh; okd~ Jo.k laLFkku ¼,vkbZvkbZ,l,p½] eSlwj

16-2-1 izLrkouk

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान (एआईआईएसएच) देश में संप्रेषण व इसके विकारों से संबंधित एक अग्रणी शिक्षा संस्थान है जो संप्रेषण विकारों के विशय में प्रशिक्षण अनुसंधान, चिकित्सीय परिचर्या तथा जन शिक्षा प्रदान करता है। संस्थान ने 2015 में राष्ट्र को समर्पित सेवा के पचास वर्ष सफलतापूर्वक पूरे किए। संस्थान द्वारा नवंबर, 2015 तक चलाई गई गतिविधियां निम्नलिखित हैं:–

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान

¼d½ vdknfed xfrfof/k;ka ¼ संस्थान 16 अकादमिक कार्यक्रमों का संचालन करता है तथा विभिन्न कार्यक्रमों में 480 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। उक्त अवधि के दौरान गतिविधियां आयोजित की गईं जैसे–विख्यात विद्वानों द्वारा अतिथि व्याख्यान, अभिमुखी/लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम, जर्नल क्लब और क्लीनिकल सम्मेलन प्रस्तुतीकरण। इसमें कैलिफोर्निया स्टेट विश्वविद्यालय, यूएसए के इमेरिटस ऑफ स्पीच लैंगवेज पैथोलॉजी के प्रोफेसर द्वारा साक्ष्य आधारित अभ्यास पर एक अतिथि व्याख्यान शामिल है। इसके अतिरिक्त, आईएसओ 9001–2008 मानक के अनुरूप संकाय अंशांकन किया गया था।

¼[k½ fu"ikfnr vuqla/kku ¼ उक्त, अवधि के दौरान संस्थान में कुल 24 परियोजनाएं आरंभ की गई और 3 अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की गईं। विभिन्न विभागों में भी 47 परियोजनाएं भी चल रही हैं। अनुसंधान परियोजना का संस्थान द्वारा वित पोषण के अतिरिक्त, विज्ञान व तकनीकी विभाग भारत सरकार और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद जैसे संगठनों द्वारा प्रदान किया गया था। उक्त अवधि के दौरान संस्थान के मानव जेनेरिक प्रयोगशाला में व्यापक समानांतर तरीके से डीएनए की न्यूक्लिओटाइड श्रृंखला का पता लगाने के लिए एक अत्याधुनिक सीक्वेंसिंग प्रयोगशाला आंरभ की गई थी।

¼x½ Dyhfudy lsok,a ¼ संस्थान ने संप्रेषण विकृति वाले कुल 40380 लोगों को व्यापक क्लीनिकल सेवाएं प्रदान कीं। क्लीनिकल सेवाओं में वाक् भाषा व श्रवण रोग, रोगों से जुड़े मनोवैज्ञानिक व ओटोर्हिनोलरिंगोलोजिकल रोग संबंधी मूल्यांकन व पुनर्वास शामिल हैं। इसके अतिरिक्त विस्तार और वैकल्पिक संचार, ऑटिज्म स्पैक्ट्रम विकार, कटे होंठ तालु और अन्य क्रनियोफेसियल, विसंगति, अबाध बोलना, अध्ययन अक्षमता, श्रवण प्रशिक्षण, मोटर वाक रोग विकार, तंत्रिका मनोविज्ञान विकार, पेशेवर वाक् परिचर्या वाक् विकार और वर्टिगो में सुधार करने के लिए विशिष्ट नैदानिक सेवाएं प्रदान की जाती हैं। अप्रैल से नवंबर, 2015 के दौरान कोर नैदानिक सेवाओं का ब्यौरा नीचे दिया गया है:

dkj unkfud lsok,a	jksfx;ksa dh la[;k	Fkzsjih l=
श्रवण मूल्यांकन/श्रवण प्रशिक्षण	8300	6105
वाक् तथा भाषा मूल्यांकन	5261	20350

¼?k½ vkmVjhp Dyhudy lsok,a ¼ उक्त अवधि के दौरान संस्थान ने जिपमेर, पुदुच्चेरी; नेताजी सुभाष चंद्र बोस मेडिकल कॉलेज (एनएससीबी), जबलपुर; और राजेन्द्र आयुर्विज्ञान संस्थान, बारीतायु, रांची में तीन नए नवजात शिशु जांच (एनबीएस) केंद्र खोले हैं। प्रखंड अस्पताल, सागरा तालुक, शिवमोगा, कर्नाटक में एक नए आउटरीच सेवा केंद्र (ओएससी) का भी उद्घाटन किया गया था। चार आउटरीच नैदानिक केंद्रों में 1369 क्लाइंट को नैदानिक सेवाएं प्रदान की गई थीं। इसके अतिरिक्त, संप्रेषण विकारों हेतु मैसूर के स्कूलों के 1099 बच्चों तथा 15 अस्पतालों में 22682 शिशु और मैसूर में तीन प्रतिरक्षण केंद्र, चार

आउटरीच सेवा केंद्र तथा तीन नवजात जांच केंद्रों में जांच की गई थी। चार जांच कैंप आयोजित किए गए थे। संस्थान देशभर में स्थित संस्थान के नौ डीएचएलएस केंद्रों में टेली–कार्यकलाप सेवा भी उपलब्ध करा रही है।

¼3½ tu f’k{kk xfrfof/k ½ जन शिक्षा गतिविधियां जैसे सार्वजनिक व्याख्यान, शोर के संबंध में जागरूकता रैली का आयोजन वर्ल्ड वॉयस डे, ऑटिज्म दिवस और विश्व अल्जाइमर्स दिवस जैसे स्मरणीय दिवसों का आयोजन किया गया तथा संप्रेषण विकारों की रोकथाम व नियंत्रण से संबंधित जनशिक्षा सामग्री तैयार की गई और वितरित की गई।

¼p½ vU; xfrfof/k;k vkj vk;kstu ½ संस्थान ने 9 अगस्त, 2015 को स्थापना का स्वर्ण जयंती वर्ष मनाया। इस अवसर पर संस्थान के तीन नवजात जांच केंद्रों का उद्घाटन किया गया था।

16-2-2 ctV h; lg;kx½ संस्थान को वर्ष 2015–16 हेतु बजट अनुमान के अनुसार कुल 73 करोड़ रूपए की राशि आबंटित की गई है।

16-3 vkly bfM;k bLVhV;wV vkQ gkbthu ,M ifCyd gYFk ¼,vkbvkbl,p ,M ih,p½] dksydkrk

16-3-1 ifjp;

ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हाइजीन एंड पब्लिक हेल्थ को दिनांक 30 दिसंबर, 1932 को स्थापित किया गया था। यह संस्थान अपनी तरह का अग्रगामी संस्थान है, जो जन स्वास्थ्य और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए समर्पित है एआईआईएच एंड पीएच में शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान को अपने क्षेत्र की प्रयोगशालाओं नामतः शहरी स्वास्थ्य केन्द्र, चेतला और ग्रामीण स्वास्थ्य इकाई एवं प्रशिक्षण केन्द्र, सिंगूर की अनूठी सहायता प्राप्त है। वर्तमान में इसने फरक्का बैराज परियोजना अस्पताल को अपनी जन स्वास्थ्य गतिविधियों को आगे विस्तृत तथा सुदृढ़ करने के लिए अपने क्षेत्राधिकार में शामिल किया है। संस्थान के कोलकाता में 2 परिसर हैं। प्रमुख परिसर 110, चितरंजन एवेन्यू, कोलकाता–700073 में है और दूसरा परिसर बिधान नगर (जेसी ब्लॉक, सेक्टरः 3, साल्ट लेक) कोलकाता है। इसमें 11 शैक्षणिक विभाग हैं। इनके अलावा, संस्थान की दो फील्ड प्रैक्टिस यूनिटें हैं।

16-3-2 v/;kiu vkj if’k{k.k dk;Zdyki

संस्थान अपने नियमित पाठ्यक्रमों और अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से लोक स्वास्थ्य के विभिन्न विषयों में अध्यापन और प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न पाठ्यक्रमों का ब्यौरा नीचे दिया गया हैः

Ø-l-	foHkkx	ikB~;Øe
1.	निवारक और सामाजिक चिकित्सा (पीएसएम)	एमडी (समुदाय चिकित्सा)
2.	पर्यावरण संरक्षा और सेनेट्री इंजीनियरिंग	लघु पाठ्यक्रम और अन्य पाठ्यक्रमों को सहायता
3.	माइक्रोबायोलोजी	मास्टर ऑफ वेटरिनरी पब्लिक हेल्थ (एमवीपीएच)
4.	एपिडेमियोलोजी	जन स्वास्थ्य प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीपीएचएन)
5.	बायोकेमिस्ट्री एंड न्यूट्रीशिन	एम.एससी. इन एप्लाइड न्यूट्रीशन, डिप्लोमा इन डाइटटिक्स
6.	पब्लिक हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन	डिप्लोमा इन पब्लिक हेल्थ (डीपीएच)
7.	मेटरनल एंड चाइल्ड हेल्थ	लघु पाठ्यक्रम और अन्य पाठ्यक्रमों को सहायता
8.	ओक्यूपेशनल हेल्थ	लघु पाठ्यक्रम और अन्य पाठ्यक्रमों को सहायता
9.	हेल्थ प्रमोशन एंड हेल्थ एजूकेशन विभाग	डिप्लोमा इन हैल्थ प्रोमोषन एंड एजुकेशन (डीएचपीई)
10.	सांख्यिकी	स्वास्थ्य सांख्यिकी में डिप्लोमा, लघु पाठ्यक्रम और अन्य पाठ्यक्रमों को सहायता
11.	पब्लिक हेल्थ नर्सिंग	लघु पाठ्यक्रम और अन्य पाठ्यक्रमों को सहायता

16-3-3 ubl igy vkj xfrfof/k;k

- इंडियन जर्नल आफ हाइजीन एंड पब्लिक हेल्थः ई–जर्नल, इंडियन जर्नल ऑफ हाइजीन एंड पब्लिक हेल्थ के प्रथम संस्करण का शुभारंभ किया गया।
- शैक्षणिक सेल, जन स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा इकाई और वैज्ञानिक सलाहकार समिति का गठन।

- संस्थागत आचार संहिता समिति का पुनर्गठन
- गैर–चिकित्सा पाठ्यक्रमों के लिए वजीफाः दो से अधिक दशकों के अंतराल के बाद गैर–चिकित्सा स्नातकोत्तर छात्रों के लिए वजीफे का संशोधन किया गया।
- स्वास्थ्य सांख्यिकी पाठ्यक्रमों में डिप्लोमा का पुनरूद्धार
- जेई टीकाकरण के लिए विशेष अभियान : एनएचएम योजना के तहत 07.12.2015 से 29.12.2015 की अवधि के दौरान आरएचयू एवं टीसी, सिंगूर के सेवा क्षेत्र की वयस्क जनसंख्या (15–65) में जेई टीकाकरण की योजना बनाई गई है। इसमें लगभग 70000 जनसंख्या को कवर करने का अनुमान है।
- पोलियो उन्मूलन के लिए आईपीवी का आरंभ : दिनांक 01.01.2016 से आरएचयू एवं टीसी के सेवा क्षेत्र में नेमी टीकाकरण के तहत 14 सप्ताह की आयु में पोलियो उन्मूलन के लिए आईपीवी को आरंभ किया गया तथा तदनुसार प्रशिक्षण दिया गया।
- यूएचसी एवं टीसीः केएमसी वार्ड सं0 81 और 82 में स्थित, 1938 घरों की कुल संख्या वाले दो मलिन बस्तियों को एमसीएच सेवा क्षेत्र में शामिल किया गया है।
- बिहार के कालाजार स्थानिकमारी वाले जिलों में क्षमता निर्माण कार्यक्रम के लिए राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी) एवं एआईआईएच एवं पीएच के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। दिनांक 22–29 अगस्त, 2015 के दौरान कालाजार उन्मूलन कार्यक्रम के लिए बिहार के तीन जिलों से बेसलाइन आंकड़ा एकत्रीकरण का आयोजन किया गया।
- संगत इकाई द्वारा 707 व्यक्तियों को पीत ज्वर टीका दिया गया था।
- शहरी स्वास्थ्य इकाई एवं प्रशिक्षण केंद्र, चेतला, 1.2 लाख जनसंख्या को कवर करता है जिसमें लगभग 35,000 मलिन बस्ती की जनसंख्या शामिल है। यह केंद्र लाभार्थियों को प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं और एमसीएच, स्त्री रोग और प्रसव संबंधी, त्वचा व वीडी, पेशेवर स्वास्थ्य, आरएनटीसीपी, एनसीडी, विद्यालय स्वास्थ्य, पोषण और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला सेवाओं से संबंधित विशेषज्ञता क्लीनिक सेवाएं भी प्रदान करता है।

16-3-4 ctV vkoVu ¼2015&16½

;ktuk	xSj&;ktuk	dqy
16.00 करोड़	46.70 करोड़	62.70 करोड़

16-4 dsanzh; dq"B jksx f'k{k.k vkSj vuqla/kku laLFkku ¼lh,yVh o vkjvkbZ½] pSaxyiV~V

16-4-1 ifjp;

क्षेत्रीय कुष्ठ रोग प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान को मूल रूप में भारत सरकार द्वारा वर्ष 1924 में स्थापित लेडी विलिंगटन लेप्रोसी सेनेटोरियम को नियंत्रण में लेते हुए शासी निकाय के अंतर्गत वर्ष 1955 में स्थापित किया था। बाद में भारत सरकार ने 1974 में इसे स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के संबद्ध कार्यालय, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय का अधीनस्थ कार्यालय बना दिया, जिसका उद्देश्य कुष्ठ रोगियों की नैदानिक जांच, उपचार एवं रेफरल सेवाएं प्रदान करना, कुष्ठ उन्मूलन/नियंत्रण के प्रशिक्षित जनशक्ति विकास करना और साथ ही कुष्ठ एवं इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान करना है।

इसमें महामारी विज्ञान और सांख्यिकी, औषधि, माइक्रोबायालॉजी और पशुसदन सुविधाओं वाली बायोकेमेस्ट्री प्रयोगशालाओं, सर्जरी और फिजियोथिरेपी के अलग–अलग खंड हैं। अस्पताल की स्वीकृत क्षमता 124 बिस्तरों की है। संस्थान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं%

(i) कुष्ठ होने, उसके प्रसार और जटिलता से संबंधित आधारभूत समस्याओं में अनुसंधान की पहल करना।

(ii) एन एल ई पी कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक श्रमिकों को प्रशिक्षित करना।

(iii) कुष्ठरोग के निदान, संक्रमण, पुनः होना और रिंकस्ट्रक्टिव ऑफ सर्जरी के लिए विशेष सेवाएं उपलब्ध कराना।

(iv) राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम की मॉनीटरिंग और मूल्यांकन करना।

(v) देश में राष्ट्रीय कुष्ठ–रोधी कार्य को बढ़ावा देने के लिए एक मूलभूत केन्द्र के रूप में कार्य करना।

16-4-2 unkfud iHkkx

नैदानिक प्रभाग में 8 अंतरंग वार्ड एवं ओपीडी और नर्सिंग अनुभाग हैं।

jkxh ifjp;kZ lsokvksa ij MkVk bl izdkj gS%

vUrjax lsok,a

कुल भर्ती किए गए	=	509
कुल डिस्चार्ज किए गए	=	515
मौतों की संख्या	=	006

cfgjax jksxh

नए कुष्ठ रोगियों की कुल संख्या	=	48(पीबी–12+ एमबी–36)
कुल उपचारित पुराने रोगियों की संख्या	=	4025
अन्य मामलों की कुल संख्या	=	1030
जीएलसी ब्लाक के कुल रोगी	=	2064
उपचार किए गए कुल मरीज	=	7167

16-4-3 'kY; fØ;k iHkkx

शल्य क्रिया प्रभाग में फीजियोथिरेपी अनुभाग, कृत्रिम अंग एवं फुटवियर अनुभाग और माइक्रो सेल्यूलर रबर (एमसीआर) शीट विनिर्माण इकाई शामिल हैं। शल्य क्रिया प्रभाग में मेजर और माइनर ओटी तथा एक्स–रे सुविधाएं हैं।

शल्य क्रिया प्रभाग निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करता है:–

i) रिकन्स्ट्रक्टिव सर्जरी (आरसीएस),

ii) निःशक्तता रोकथाम और चिकित्सा पुनर्वास (डीपीएमआर) क्रियाकलाप

iii) प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग

iv) तमिलनाडु में शिविर आधारित आरसीएस सर्जरी

v) 9 मेजर सर्जरी सहित कुल 96 शल्य चिकित्साएं की गई।

16-4-4 fQft;ksFksjih vuqHkkx

इसमें असंवेदनशील हाथ एवं पैर वाले मरीजों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करके उन्हें फिजियोथिरेपी सेवाएं उपलब्ध करायी जाती हैं और प्रशिक्षण क्रिया–कलाप में सहयोग प्रदान करता है और फिजियोथिरेपी अनुभाग द्वारा फिजियोथिरेपी तकनीशियन प्रशिक्षण में इसकी नोडल भूमिका है।

उपयोग की जा रही उपचार पद्धतियों में हाथ व पैर के व्यायाम, वैक्स थिरेपी, ऑयल मसाज, शार्ट वेव डायथर्मी, अल्ट्रासाउण्ड थिरेपी; ट्रांस्कुटेनियस नर्व स्टिमुलेशन, इंफ्रारेड उपचार, इन्टरफेरेन्सियल थिरेपी और मांसपेशियों व तंत्रिका तंत्र की इलेक्ट्रिकल स्टीमुलेशन शामिल हैं। प्रभाग ने 4037 मामले हैण्डल किए।

Ø-la-	fooj.k	dqy
1.	नए मामले	134
2.	आकलन	407
3.	हाथ के व्यायाम	750
4.	पैर के व्यायाम	525
5.	वैक्स थिरेपी	958
6.	स्प्लिंट	292
7.	इलेक्ट्रोथिरेपी	675
8.	प्रशिक्षण	187
9.	सामान्य मामले	109

16-4-5 ekbØks&lsY;qyj jcj ¼,elhvkj½ fey

माइक्रो–सेल्यूलर रबर (एमसीआर) मिल एक छोटी उत्पादन इकाई है जो कुष्ठ रोगियों के लिए फुटवियर के विनिर्माण में उपयोग किए जाने हेतु आवश्यक मात्रा में एमसीआर शीटों का उत्पादन करती है। एमसीआर उत्पादन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने का काम शुरु किया गया है। केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चेन्नई की मदद से उत्पादन क्षमता के अनुसार डिसपरसन नीडर संस्थापित किया गया था। हम विभिन्न राज्यों कुष्ठ समितियों को एमसीआर शीट उपलब्ध करा रहे हैं।

एमसीआर शीट उत्पादन	=	800
अन्य संस्थानों/राज्यों/एनजीओ को आपूर्ति किए गए एमसीआर	=	266

16-4-6 —f=e vx vkj QVo;j lVj

कृत्रिम अंग और फुटवेयर सेंटर कुश्ठ रोग से विकृत अंग वाले रोगियों हेतु विभिन्न प्रकार के ब्रेसेस और प्रोस्थेसिस का उत्पादन करता है और आपूर्ति करता है।

सामान्य और परिवर्तित माइक्रोसेलर रबर सैंडले	=	619 जोड़े
ऑरथोटिक और प्रोस्थेटिक उपकरण	=	11 नग
ऑरथोटिक और प्रोस्थेटिक की मरम्मत	=	25 नग
परिवर्तित आर्क स्पोर्ट और मेटाटार्सल बार	=	108 नग

16-4-7 i;kx'kkyk iHkkx

प्रयोगशाला प्रभाग बुनियादी रूप से कुष्ठ रोग संबंधी तथा अन्य नेत्री जांच के लिए बाह्य/अंतरंग विभागों से मामले की जांच करता है तथा कुष्ठ रोग की बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान गतिविधियों में भी शामिल है।

इस प्रभाग के मोलीक्यूलर बायोलॉजी खंड, को डीएनए के पृथक्करण, पीसीआर संवर्धन और जैल प्रलेखन की मूलभूत सुविधाओं के साथ उन्नत किया गया है। इन सुविधाओं का उपयोग विभिन्न संस्थागत परियोजनाओं के लिए तथा सहयोगी व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम परियोजनाओं में भी किया जा रहा है।

विभिन्न एनिमल कोलोनियों के साथ एक अलग एनिमल हाउस भी उपलब्ध है जिसमें एम.लेप्री के लिए व्यवहार्यता एवं औषध ग्राह्यता परीक्षणों हेतु माउस फुट पैड इनोक्युलेशन सहित पशुओं की प्रायोगिक जांच का प्रावधान भी है।

क्लीनिकल पैथोलोजी	=	2108
हिमेटोलोजी और और स्किन स्मियर	=	2096
माइक्रोबायालॉजी	=	0269
हिस्टोपैथोलॉजी व मोलिक्यूलर बायोलॉजी	=	70
बायोकेमिस्ट्री	=	4118

16-4-8 tkuifnd jkx vkj lkf[;dh iHkkx

इस प्रभाग के अंतर्गत तकनीकी, प्रशिक्षण, सांख्यिकी और इलेक्ट्रानिकल डाटा प्रोसेसिंग यूनिट शामिल हैं। यह प्रभाग प्रचालन अनुसंधान, एनएलईपी की निगरानी एवं मूल्यांकन, निगरानी, क्रियाकलाप, सोफ्टवेयर विकसित करने और मेडिकल एवं पैरामेडिकल पेशेवरों को कुष्ठ रोग में प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य करता है।

16-4-9 ,u,ybih dk;dykik dh fuxjkuh ,o eY;kdu

अप्रैल, 2015 से नवम्बर, 2015 तक इस प्रभाग ने निम्नलिखित निगरानी व मूल्यांकन कार्यकलाप किए :

- तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल व पुदुच्चेरी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में निगरानी व मूल्यांकन कार्य–कलापों के लिए आयोजना।
- तमिलनाडु– 9 जिले (नागापट्टिनम, मदुरई, विरधू नगर, नामाकल, तेनी, करूर व तिरूवारूर, कन्याकुमारी और नीलगिरी)।
- केरल– एसएलओ, केरल के साथ प्राथमिक बैठक और कोझीकोड जिले में निगरानी।
- कर्नाटक– बेंगलुरू (ग्रामीण)।

16-4-10 MkVk fo'yk"k.k

- अनुपस्थिति और चूककर्ता का सीएलटीआरआई ओपीडी से डाटा निष्कर्षण।
- ओपीडी रोगी प्रोफाइल सॉफ्टवेयर बनाया जा रहा है।
- तिरूकालुकुन्द्रम क्षेत्र में रिपोर्ट किए गए नए कुष्ठ रोगियों के परिवार और पड़ोसियों से सम्पर्क अध्ययन की डाटा प्रविष्टियां।

16-4-11 if'k{k.k

यह संस्थान राज्य/जिला कुष्ठ अधिकारी (5 दिन), चिकित्सा अधिकारी (5 दिन), स्नातकोत्तर फिजियोथिरेपी तकनीशियन (9 माह), गैर–चिकित्सा पर्यवेक्षक (2 माह), स्किन स्मियर प्रशिक्षण (5 दिन), स्किन स्मियर रिफ्रेशर प्रशिक्षण (2 दिन), जैव–प्रौद्योगिकी छात्रों, मास्टर जनस्वास्थ्य छात्रों और सीआरआरआई को सक्रिय रुप से प्रशिक्षण उपलब्ध करा

रहा है। विभिन्न मेडिकल, पेरामेडिकल और बायोटेक्नोलोजी संस्थाओं के लिए शैक्षणिक दौरे का प्रशिक्षण कार्यक्रम। कुल 187 व्यक्ति प्रशिक्षित किए गए।

16-4-12 ctV % वर्ष 2015–16 के लिए 13.75 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

16-5 {k=h; d"B if'k{k.k ,o vuql/kku lLFkku ¼vkj,yVhvkjvkbZ½ jk;iqj

आरएलटीआरआई, रायपुर की स्थापना वर्ष 1979 में की गई थी जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के केन्द्रीय कुष्ठ प्रभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में कुष्ठ रोगियों के लिए प्रशिक्षण, अनुसंधान और उपचार उपलब्ध कराना है।

16-5-1 jksxh ifjp;kZ

संस्थान में अंतरंग रोगी सेवा के लिए 60 बिस्तर हैं और इसमें कुश्ठ रोग और पोलियो संबद्ध विकृति से जुड़े कई रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी की जाती हैं। इसमें प्रदान की जा रही रोगी परिचर्या सेवाओं के ब्यौरे निम्नानुसार हैं।

- ओपीडी में आने वाले कुल रोगी - 6602
- नए अभिज्ञात कुष्ठ मामले - 715
- वार्ड में भर्ती किए गए रोगियों की कुल संख्या - 564
- की गई प्रयोगशाला जांच की कुल संख्या - 13136
- भौतिक चिकित्सा प्राप्त करने वाले रोगियों की संख्या - 870
- रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी की संख्या - 133

16-5-2 çf'k{k.k

Ø- l-	çf'k{k.k dk uke	çf'k{k.k dh vof/k	çf'k{k.k cp l[;k	çf'kf{kr çfrHkkfx;ksa dh l[;k
1	वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक	3 दिन	1	15
2	राष्ट्र स्तरीय एसएलओ/ डीएलओ/बीएमओ/एमओ का प्रशिक्षण	5 दिन	8	95
3	मेडिकल कॉलेज छात्रों को प्रषिक्षण	1 दिन	10	194
4	बीपीटी इंटर्न छात्रों को प्रशिक्षण	1 सप्ताह	9	17
5	स्किन स्मीयर में प्रयोगशाला तकनीकशियनों को प्रशिक्षण	5 दिन	4	33
6	गैर –चिकित्सा पर्यवेक्षक/ गैर चिकित्सा सहायक	3 दिन	4	165
7	नर्सिंग छात्रों को प्रशिक्षण	1 दिन	2	55
	dqy		**40**	**574**

16-5-3 vkj,yVhvkjvkbZ dh v/khu fo'ks"k dk;Zdyki

(क) ये संस्थान छत्तीसगढ़ राज्य के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में काम करता है जिसमें एनएलईपी सहित सभी राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर राज्य और जिला स्तर पर निगरानी रखी जाती है।

(ख) 8 जिलों में एनएलईपी का तकनीकी पर्यवेक्षण: वर्ष के दौरान एनएलईपी कार्यक्रमों के आकलन हेतु 8 जिले कवर किए गए थे जिसमें जिला अस्पतालों के अलावा, 32 सीएचसी, 43 पीएचसी और 38 एसएचसी का भी दौरा किया गया और संबंधित जिलों को पाई गई कमियों को दूर करने के लिए सुझाव दिए गए।

16-6 {k=h; d"B jksx çf'k{k.k ,o vuqla/kku lLFkku ¼vkj,yVhvkjvkbZ½ vLdk

16-6-1 ifjp;

संस्थान की स्थापना वर्ष 1977 में की गई थी। संस्थान कुष्ठ रोग मामलों तथा रिएक्शन व अल्सर के समस्याजनक, जटिल और इंटरेक्टेबल मामलों का निदान करने में कठिनाई के प्रबंधन हेतु रेफरल केन्द्र के रूप में भी कार्य करता है। विभिन्न अन्य षल्य क्रियाएं नियमित रूप से की जाती रही हैं और विगत में आरसीएस (रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी) कैम्प भी लगाए गए हैं। यह संस्थान कुष्ठ कारकों के उन्मूलन के लिए नोडल प्रशिक्षण और अनुसंधान के रूप में भी कार्य करता है।

16-6-2 jkxh ifjp;k

प्रदान की जा रही सेवाएं संक्षेप में नीचे दी जा रही हैं:

- ओपीडी उपस्थिति – 1425
- अंतरंग कुल भर्ती – 168
- बड़ी सर्जरी – 21
- लघु सर्जरी – 14
- कुल प्रयोगशाला जांच – 143.7

16-6-3 çf'k{k.k

ओडिशा के विभिन्न जिलों में 3 बैच में 87 चिकित्सा अधिकारी., आयुष में 4 बैच में 137 चिकित्सा अधिकारी और 1 बैच में 28 एमपीएच प्रशिक्षित किए गए।

16-7 {k=h; dq"B çf'k{k.k vkSj vuqla/kku laLFkku ¼vkj,yVhvkjvkbZ½] xkSjhiqj

16-7-1 ifjp;

क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आरएलटीआरआई), गौरीपुर, बंकुरा भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए स्थापित 50 बिस्तर वाला अस्पताल है:

(क) विभिन्न भारतीय राज्यों विशेषत: पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में कुष्ठ उन्मूलन के लिए एनएलईपी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए पर्याप्त प्रशिक्षित जन शक्ति का सृजन।

(ख) कुष्ठ रोग पर प्रचालन संबंधी अनुसंधान करना। संस्थान गौरीपुर नामक गांव में स्थित है जो बंकुरा जिले (12किमी) कोलकाता शहर (240 किमी), दुर्गापुर नगर (56 किमी), खड़गपुर जंक्शन (130 किमी.) आदि से जुड़ा हुआ है।

16-7-2 dk;Zdyki

एनएलईपी प्रबंधन के बदलते परिवेश में वर्तमान समय में, संस्थान वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारियों के लिए एनएलईपी पर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण (टीओटी) पाठ्यक्रम (डीएलओ व बीएमओ) निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पूरे वर्ष चलाता है। इसके अलावा यह सप्ताह में तीन दिन ओपीडी सेवाएं चलाता है और जटिल अल्सर मामलों और आवर्ती प्रकृति की रिएक्शन समस्याओं पर 30 बिस्तरों वाला अंतरंग केंद्र चलाते हैं। संस्थान एक प्रयोगशाला, एक एक्स–रे यूनिट और एक फीजियोथेरेपी यूनिट चलाते हैं। फील्ड यूनिट लगभग 3 लाख जनसंख्या को कवर करते हुए वर्ष के दौरान आईईसी गतिविधियां चलाती है ताकि स्वेच्छा से मामले रिपोर्ट किए जाएं जिससे शीघ्र पता लग सके, तथा अपंगता की रोकथाम हो सके और कुष्ठ रोग को समाज में एक सामान्य बीमारी के रूप में दर्जा देते हुए इससे जुड़े कलंक को हटाया जा सके।

विभिन्न प्रकार के कुष्ठ प्रशिक्षणों के लिए इस संस्थान के पास प्रशिक्षण कार्यकलापों के लिए श्रेष्ठ अवसंरचना है। यथा प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण (टीओटी) और ये 2011–12 से नियमित रूप से आयोजित की जा रही है। एनएलईपी पर पीएमडब्ल्यू प्रशिक्षण कोर्स के एक बैच को फरवरी, 2016 माह में आयोजित करने का कार्यक्रम है। इसके अलावा एनएलईपी पर चिकित्सा अधिकारियों के लिए 3 दिन के प्रशिक्षण को हमारे 2016–17 के प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

यह संस्थान इसकी स्थल स्थिति और संसाधनों के कारण कुष्ठ रोग के क्लीनिकल और महामारी अध्ययन के लिए एक आदर्श स्थान है। इस संस्थान की 31–12–2015 तक की निष्पादन रिपोर्ट निम्नानुसार है:

1- vrjax ços'k% 129, डिस्चार्ज–120, बिस्तर उपयोग दर–56.55, बिस्तर टर्न ओवर दर–4

2- vkihMh% नए मामले 18, अन्य मामले 10, पुराने मामले–968, एमडीटी प्रदत्त–211, संदर्भित रोगी–447, सामान्य रोगी उपस्थिति – 643, आरएफटी– 18, रिलैप्स– 6

3- QhYM@vkbZbZlh dk;Zdyki% ग्रुप चर्चा –104, लीफ्लेट वितरण–905, आईईसी कार्यक्रम –18, ग्रामीण कवर–18, स्कूल सर्वेक्षण–07, छात्र जांच–459, संदिग्ध मामले–06

4- ç;ksx'kkyk ,dd%& स्लिट स्किन स्मीयर–665 (इनमें से 395 अन्य अस्पतालों से भेजे गए थे) जैव रसायन 507, क्लीनिकल पैथोलोजी–331

5- Hkkfrd fpfdRlk ,dd%& प्लास्टर –2, व्यायाम–2688, मसल्स स्टीमूलेशन–14, इंफ्रा–रे – 147

6- çf'k{k.k%& एक टीओटी कार्यक्रम आयोजित किया गया। 9 प्रतिभागियों ने टीओटी कार्यक्रम में हिस्सा लिया। 9 प्रतिभागियों में से 3 असम से थे और 6 पश्चिम बंगाल राज्य से थे।

16-8 oYyHkHkkbZ iVsy pLV lLFkku ¼ohihlhvkbZ½] fnYyh

16-8-1 ifjp;

वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीच्यूट (वीपीसीआई) एक अनोखा पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान है जो जो वक्ष रोगों और संबंधित विज्ञान के अध्ययन के लिए समर्पित है।

2014–15 के दौरान उपलब्धियां/कार्यकलाप

16-8-2 jksxh ifjp;k

- नैदानिक प्रयोगषालो : 22655

निम्नलिखित के संबंध में विशेषज्ञ जांच का प्रबंधनः

- फुफ्फुस फंक्शन परीक्षण : 20084
- धमनीय रक्त जांच : 12820
- ब्रांकोस्कोपी : 342
- ब्रांकोलव्योलर लेवैज : 75
- सीटी स्कैन : 3585
- इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम : 6268
- पोलीसोमनोग्राम : 167
- एचआईवी परीक्षण : 59795

16-8-3 f'k{k.k

- वीपीसीआई में फुफ्फस चिकित्सा स्नातकोत्तर एमडी छात्र। फेफड़ों के कैंसर पर एमडी थीसिस के सह पर्यवेक्षक
- एफएएमएस डीयू वीपीसीआईए में पीएचडी छात्रों का नामांकन
- एमएससी जीवन विज्ञान के अधोस्नातक छात्र
- विभाग में विभिन्न प्रोजेक्टों पर कार्य कर रहे वरिष्ठ और कनिष्ठ अनुसंधान फेलो
- फेफड़ा रोग संबद्ध मोलीक्यूलर निदान सीएमई कार्यक्रम 11 जुलाई, 2014 को आयोजित किया गया।

16-8-4 ctV

वर्ष 2014–15 व 2015–16 का अनुमोदित बजट

(करोड़ रुपए में)

o"kZ	;kstuk	;kstuRrj
2014-15	16.90	26.50
2015-16	17.60	31.35

16-9 jk"Vªh; rifnd ,oa 'olu jksx lLFkku] ubZ fnYyh

16-9-1 ifjp;

राष्ट्रीय तपेदिक एवं श्वसन रोग संस्थान (एन आई टी आर डी) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान है। यह संस्थान तपेदिक और श्वसन रोगों के क्षेत्र में निदान, उपचार, शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए शीर्षस्थ संस्थान है। संस्थान में 15 विभाग है।

माइक्रोबायोलॉजी विभाग, जिसमें एक राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला है, लाइन प्रोब ऐस्से, एमजीआईटी सिस्टम, जीन एक्सपर्ट और बीएसएल–।।। सुविधा जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवा कर भर्ती किए गए एवं बहिरंग रोगियों–दोनों को गुणवत्तापरक नैदानिक देखभाल सेवा प्रदान करता है और इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) एवं ग्लोबल लैबोरेटरी इनीशिएटिव (जीएलआई) द्वारा डब्ल्यूएचओ/जीएलआई टीबी सुप्रानेशनल रिफरेंस लैबोरेटरी नेटवर्क के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। बाल रोग, रेस्पायरेटरी क्रिटिकल केयर एवं थोरेसिक सर्जरी जैसे अन्य विभाग बच्चों, गंभीर एवं थोरेसिक सर्जरी के जरूरतमंदों को क्रमशः टीबी एवं श्वसन तंत्र संबंधी बीमारियों के प्रबंधन को सुसाध्य बनाते हैं।

16-9-2 jksxh ifjp;k

यह संस्थान टीबी एवं विभिन्न श्वसन तंत्र संबंधी गैर–तपेदिक रोगों के निदान हेतु प्रतिदिन एक ओपीडी संचालित करता

है। संस्थान टीबी और मल्टी–ड्रग रेजिस्टेंट (एमडीआर) टीबी के प्रबंधन में क्रमषः डॉट्स एवं ड्रग रेजिस्टेंट टीबी की कार्यक्रमगत प्रबंधन (पीएमडीटी) कार्यनीतियों का कार्यान्वयन करता रहा है। संस्थान का जन स्वास्थ्य विभाग 8 नामोदिष्ट माइक्रोस्कोपिक केन्द्रों तथा 10 डॉट केंद्रों के जरिए दक्षिणी दिल्ली में 8 लाख की आबादी में क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी) चलाता है। निद्रा क्लिनिक फेफड़ों के कैंसर क्लिनिक, थोरासिक सर्जरी क्लिनिक, एलर्जी क्लिनिक, तंबाकू मुक्ति क्लिनिक, पलमोनरी पुनर्वास क्लिनिक और लेजर थैरेपी क्लिनिक तथा संवेदनाहरण पूर्व क्लिनिक जैसे विशेष क्लिनिक विभिन्न गैर ट्यूबरकूलर श्वसनीय रोगों पर फोकस करते है। यह संस्थान वार्डों और आईसीयू में 470 पलंगों के जरिए क्षय रोग और श्वसनीय रोगों के गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों को अंतरग उपचार प्रदान करता है। 24 घंटे श्वसनीय आपातकालीन सुविधाओं की उपलब्धता से इन रोगियों के लिए गहन परिचर्या प्रदानगी सुगम बनाती है।

पलमोनरी फंक्शन टेस्ट प्रयोगशाला, ब्रोंकोस्कोपी प्रयोगशाला और स्लिप लैब के अलावा माइक्रोबायोलॉजी, पैथोलॉजी, जैव रसायन और रेडियोलॉजी विभागों द्वारा नैदानिक सेवाएं मुख्य तौर पर प्रदान की जाती है।

अप्रैल 2015 से दिसंबर 2015 की अवधि के दौरान प्रति दिन 171 नए पंजीकरणों की औसत के साथ एनआईटीआरडी–ओपीडी में कुल 37821 नए वक्ष सिम्पटोमेटिक्स आए। कुल ओपीडी उपस्थिति 1.6 लाख थी जिसका औसत प्रतिदिन 659 रोगी था। 6423 रोगियों में टीबी पाया गया और उन्हें एनआईटीआईडी–ओपीडी से एनआईटीआरडी–डॉट्स केन्द्रों (18 प्रतिशत) अथवा दिल्ली में वक्ष क्लिनिक (53 प्रतिशत) अथवा पड़ोसी राज्यों (29 प्रतिशत) में भेजा गया। कवक विज्ञान विभाग द्वारा कुल 57794 स्मियर माइक्रोस्कोपिक टेस्ट किए गए। 3989 पलमोनरी तथा 2541 एक्सट्रा पलमोनरी स्पेसिमैन के लिए कन्वेन्शनल कल्चर हेतु आवेदन किया गया जबकि 8510 पलमोनरी और 2097 एक्सट्रा पलमोनरी स्पेसिमैन के लिए एमजीआईटी लिक्विड कल्चर हेतु आवेदन किया गया। कुल 476 और 2400 जांचों में क्रमशः कन्वेन्शनल और एमजीआईटी पद्धतियों द्वारा 1 और 2 लाइन औषधों संबंधी औषध सुग्राहिता जांच की गई। 4037 नमूनों के संबंध में प्रतिरोधी क्षय रोग के तत्काल आण्विक निदान के लिए लाइन प्रोब एस्से किया गया। निम्नलिखित वर्ष के दौरान निम्नलिखित अन्य मुख्य जांच की गईं :

- 148161 हेमोटोलॉजी परीक्षण
- 230899 जैव रसायन परीक्षण
- 4443 साइटोलॉजी परीक्षण
- 755 हिस्टोपैथोलॉजी परीक्षण
- 54579 एक्स–रे
- 2708 अल्ट्रासाउंड
- 1478 सीटी स्कैन
- 129 बॉडी प्लेथीजेमोग्राफीज सहित 5292 टीएफटी
- 673 प्रक्रियाओं सहित 382 ब्रांकोस्कोपीस
- 2797 ईसीजी
- 127 स्लीप अध्ययन

संस्थान में रोगियों का उपचार तथा अस्पताल में भर्ती निम्नानुसार हैः

- 5926 अतंरंग भर्ती
- 7904 इमरजेंसी वार्ड में रोगियों की उपस्थिति
- 656 आईसीयू में भर्ती
- 472 मेजर थेरेसिक सर्जरी
- 743 रोगी जो एआरटी केंद्र में पंजीकृत रोगियों में से एआरटी थेरेपी के लिए थे।

16-9-3 if'k{k.k

- इस संस्थान में देश के भीतर और देष के बाहर के प्रशिक्षणार्थियों को क्षय रोग और श्वसन रोगों के विभिन्न फील्ड में प्रशिक्षण देने की अवसंरचना उपलब्ध है। प्रशिक्षण देने के लिए यह विश्व स्वास्थ्य संगठन का सहयोगी केंद्र है। इसके अलावा यह संस्थान स्नातकोत्तर डीएनबी (श्वसन रोग) डिग्री कोर्स के लिए 1999 से एक मान्यता प्राप्त केंद्र है और इस वर्ष के दौरान इस समय 16 डीएनबी छात्र कोर्स कर रहे हैं। इसके अलावा 2 छात्र 3 वर्षीय थ्रोसिक सर्जरी की उप–विशेषज्ञता में डीएनबी कोर्स कर रहे हैं जो हाल ही में शुरू किया गया है। इस संस्थान में शिक्षण और अनुसंधान कार्यकलाप नियमित रूप से किए जा रहे हैं।

- आरएनटीसीपी के तहत देश के अन्य राज्यों से मेडिकल और पैरामेडिकल कार्मिकों को विभिन्न प्रशिक्षण प्रदान करने में यह संस्थान सक्रियता से संलिप्त है। इस संस्थान में राजकुमारी अमृतकौर कॉलेज ऑफ नर्सिंग के नर्सिंग छात्रों और नई दिल्ली के क्षय रोग केंद्रों के स्वास्थ्य विजिटरों को क्षय रोग के प्रबंधन का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस अवधि के दौरान स्वास्थ्य परिचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के 800 से अधिक प्रतिभागियों (नर्सिंग छात्रों सहित) ने इस संस्थान में प्रशिक्षण पाया। इसमें अंतर्राष्ट्रीय दी यूनियन द्वारा प्रशिक्षण भी शामिल है।

16-9-4 vuqla/kku vkSj izdk'ku

वर्ष के दौरान संस्थान में श्वसन रोगों की विभिन्न उप विशेषज्ञताओं के संबंध में नियमित रूप से कई अनुसंधान परियोजनाएँ चलाई गईं। इसमें डीएनबी और फीजियोथेरेपी में स्नातकोत्तर छात्र और संस्थान के संकाय द्वारा किए गए अनुसंधान भी शामिल थे। संस्थान के संकाय के 10 से ज्यादा प्रकाशन विभिन्न प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नलों अथवा पुस्तकों में प्रकाशित हुए। संस्थान ने त्रैमासिक न्यूज लेटर नियमित रूप से प्रकाशित करना जारी रखा।

16-10 jk"Vªh; {k;jksx laLFkku] caxyksj

16-10-1 ifjp;

1959 में स्थापित हुआ, राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान (एनटीआई) बंगलौर, दक्षिण पूर्व एशिया में क्षयरोग नियंत्रण के क्षेत्र में एक शीर्ष संगठन है। जो इस क्षेत्र में क्षयरोग नियंत्रण के लिए मानव संसाधन आवश्यकताओं को पूरा करता है। 1985 से, संस्थान प्रशिक्षण और अनुसंधान हेतु डब्ल्यूएचओ के सहयोग केन्द्र के रुप में कार्यरत है। संस्थान क्षयरोग नियंत्रण के विभिन्न घटकों पर संचालनात्मक अनुसंधान करा रहा है। इस संस्थान का जीवाणु विज्ञान विंग क्षय रोग नियंत्रण कार्यकलाप में बाह्य गुणवत्ता मूल्यांकन हेतु राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला है। यह देष भर में कल्चर और औषध रोधी टीबी के कार्यक्रम संबंधी प्रबंधन के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए मध्यवर्ती संदर्भ प्रयोगशाला स्थापित करने में भी सहयोग देता है।

16-10-2 çf'k{k.k

(क) यह संस्थान मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में मार्गदर्शन करता है। यह संस्थान देश के विभिन्न भागों में कार्यरत टीबी कार्यक्रम प्रबंधकों के लिए निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित संलिप्त कर रहा है:

çf'k{k.k dk uke	çf'k{k.kksa dh la[;k	çfrHkkfx;ksa dh la[;k
राष्ट्रीय संशोधित क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी) मॉड्यूरल प्रशिक्षण	5	157
आपूर्ति चेन प्रबंधन और प्रापण संबंधी प्रशिक्षण	1	27
बाह्य गुणवत्ता मूल्यांकन संबंधी प्रशिक्षण	2	30
कल्चर (सोलिड) और औषधि रोधी परीक्षण संबंधी प्रशिक्षण	1	16
बायनाकुलर के निवारक अनुरक्षण और लघु मरम्मत का प्रशिक्षण	1	15
एलईडी फ्लोरोसेंट माइक्रोस्कोपी प्रशिक्षण	1	9
प्रयोगशाला कार्मिकों के लिए व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (सॉलिड कल्वर, एलपीए व सीबीएनएएटी)	1	12
राष्ट्रीय संशोधित क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम से संबद्ध व्यवसायियों का राष्ट्रीय क्षय रोग प्रचालन अनुसंधान प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	1	23
भारत में क्षय रोग परिचर्या के मानकों पर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण	1	29
आरएनटीसीपी के साथ कार्यरत व्यवसायियों की ओआर क्षमता निर्माण कार्यशाला–डब्ल्यूएचओ–भारत, दि यूनियन, सीटीडी व एंटीआई के सहयोग से संचालित	1	11
वित्त प्रबंधन प्रशिक्षण	1	17
पीएमडीटी (औषधि रोधी क्षय रोग प्रबंधन कार्यक्रम) प्रशिक्षण	1	25

¼[k½ dI;Vj çf'k{k.k ,dd] ekuo lalk/ku çHkkx

चल रहे भारत के प्रथम राष्ट्रीय क्षय रोगरोधी औषधि प्रतिरोधकता सर्वेक्षण के डाटा मॉड्यूल प्रबंधन के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी कंप्यूटर प्रशिक्षण एकक को सौंपी गई है। सर्वेक्षण के डाटा प्रबंधन मॉड्यूल में देश भर के लगभग 120 क्षय रोग केन्द्रों से एनटीआई में प्राप्त बलगम के नमूनों की बार कोडिंग, ऑप्टिकल मार्क की पहचान जैसी आईटी विशेषताओं का कार्यान्वयन शामिल है ताकि डेटा की सन्यता और अनुकूलित प्रयोगशाला सूचना प्रबंधन प्रणाली (एलआईएमएस) सुनिश्चित की जा सके। उक्त मॉड्यूल सही तरह से कार्य कर रहा है और इसकी आवश्यकता पड़ने पर इसे अद्यतन किया जाता है। इसकी कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियां निम्नानुसार है

- डीआरएस डाटा प्रबंधन मॉड्यूल का डिजाइन और विकास
- पत्राचार एवं पूरे एनडीआरएस से संबद्ध प्रारंभिक गतिविधियों का निष्पादन यथा स्टेशनरी का मुद्रण तथा अन्य संबद्ध मामले
- एनडीआरएस सॉफ्टवेयर मॉड्यूल से संबंधित प्रयोगशाला और प्रबंधन स्टॉफ का आंतरिक सुग्राह्यता कार्यक्रम प्रशिक्षण
- संस्थान में एनडीआरएस कार्यक्रम से संबंधित सीटीयू के प्रभारी द्वारा तीन प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण चलाए गए (टीओटी)
- तकनीकी सेवा करार और अन्य सर्वेक्षण संबंधित गतिविधियों से संबद्ध रोजमर्रा का पत्राचार और विश्व स्वास्थ्य संगठनों को अंतरिम रिपोर्ट भेजना
- एनडीआरएस प्रोजेक्ट से संबंधित आवधिक पत्राचार करना
- प्रधान अन्वेषक, सीटीडी और डब्ल्यूएचओ को भेजे जाने वाले एनडीआरएस डाटा को समेकित करके अंतरिम विश्लेषण और प्रस्तुतिकरण; तथा
- एनडीआरएस की मासिक रिपोर्टे समेकित करके सीटीडी और डब्ल्यूएचओ को अग्रेषित करना।

¼x½ ç;kx'kkyk çHkkx

- एसटीडीसी अथवा आईआरएलएस के सहयोग से राज्यों में बलगम स्मीयर माइक्रोस्कोपी नेटवर्क के लिए ईक्यूए प्रचालित करना। ईक्यूए की एनआरएल जिम्मेदारी निभाना यथा ऑनसाइट मूल्यांकन (ओएसई)। दस राज्यों की पैनल टेस्टिंग (प्रयोगशाला स्टॉफ का दक्षता परीक्षण) एक बार वर्ष में कम से कम 3–4 दिनों के लिए करना (एक से दो जिलों में दौरे सहित) और प्राथमिकता और आवश्यकता के अनुसार दौरे करना ताकि प्रयोगशाला का निष्पादन बेहतर हो। दौरे के दौरान आठ तैयार स्लाइड्स का पैनल टेस्टिंग में प्रयोग किया जाना है।
- राज्य स्तरीय कार्यक्रम प्रबंधकों के लिए गुणवत्ता कार्याशाला चलाना ताकि फील्ड में ईक्यूए संबद्ध प्रचालन और तकनीकी समस्याओं का समाधान किया जा सके।
- रेंडम ब्लाइंडेड री–चेकिंग (आरबीआरसी) प्रोड्यूसरों का क्रियान्वयन और सत्यापन और आरबीआरसी डाटा के विश्लेषण और एसटीडीसी के सहयोग से प्रयोगशाला के निष्पादन में सुधार।
- कल्चर और ड्रग ससेप्टिबली टेस्टिंग और सेकंड लाइन औषधि के निष्पादन हेतु दस राज्य स्तरीय क्षयरोग प्रयोगशालाओं का क्षमता निर्माण और सुदृढ़ीकरण।
- प्राथमिकता वाले राज्यों का क्षय रोग औषध रोध ी रोधकता का सर्विलांस करना और राज्यों से प्राप्त नमूनों की प्रोसेसिंग और औषध रोधी प्रचलन की सूचना एकत्र करना ताकि डॉट्स लॉजिस्टिक–डॉट्स और आरएनटीसीपी के कार्यक्रमों का विस्तार हो सके और राष्ट्र स्तरीय रोग व्याप्तता अध्ययनों/सर्वेक्षणों का संचालन और प्रतिभागिता हो सके।

- संस्थान की प्रयोगशाला टीम विभिन्न राज्यों की एसटीडीसी प्रयोगशालाओं का ऑनसाइट मूल्यांकन करती है ताकि इक्यूए और डीआरएस अध्ययन के लिए प्रयोगशाला गुणवत्ता स्थापित करने के लिए दिशा–निर्देश जारी किए जा सकें।
- आधुनिक नैदानिक तकनीकों के आधार पर प्रयोगशाला आधारित अनुसंधान अध्ययन यथा–जीन एक्सपर्ट, जेनेटिक विश्लेषक, एनटीएम के लिए एचपीएलसी, एलपीए और एमजीआईटी–960
- çf'k{k.k% मानव संसाधन विकास द्वारा विभिन्न श्रेणियों के लिए की संचालित प्रयोगशाला संबद्ध प्रशिक्षणों में प्रयोगशाला स्टॉफ ने भाग लिया
- jk"Vªh; vkS"k/k jks/kh lo{k.k ¼,uMhvkj,l½% प्रयोगशाला प्रभाग को प्रथम राष्ट्रीय क्षय रोग रोधी औषधि प्रतिरोधी सर्वेक्षण की जिम्मेदारी सौंपी गई।
- ikl l fd, x, ueu% अप्रैल, 2015से अक्टूबर 2015के दौरान विभिन्न राज्यों से विभिन्न पणधारियों द्वारा पीएमडीटी, इक्यूए, एनडीआरएस से प्राप्त और प्रोसेस किए गए नमूनों के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं:

Ekn	ueuks dh l[;k
पंजीकृत नमूने (स्पूटम+कल्चर, एक्सडीआर पीएमडीटी और ओपी)	3263
एलपीए हेतु पंजीकृत कर्नाटक से प्राप्त नमूनों की कुल संख्या (पीएमडीटी)	1365
कल्चर हेतु रखे गए नमूनों की कुल संख्या (ओपी+कर्नाटक–पीएमडीटी)	737
क्षमता परीक्षण हेतु एलजे का प्रयोग करते हुए पहली पंक्ति की औषधियों हेतु आनुपातिक पद्धति द्वारा किए गए संवेदनशील परीक्षण की कुल संख्या	733
क्षमता परीक्षण हेतु एलजे का प्रयोग करते हुए दूसरी पंक्ति की औषधियों हेतु आनुपातिक पद्धति द्वारा किए गए संवेदनशील परीक्षण की कुल संख्या	1385
पता लगाने के लिए किए गए परीक्षण की कुल संख्या	1051
एक्सडीआर की रोका वाले कल्चर के पंजीकृत नमूने	1018
एमजीआईटी के प्रयोग द्वारा औषधि की सुग्राहयता हेतु किए गए परीक्षणों की कुल संख्या	591
पता लगाने हेतु किए गए परीक्षण के तहत नमूनों की संख्या (इम्यूनो–चैरोमेटोग्राफिक परीक्षण)	535
किए गए लाइन प्रोब एस्से की कुल संख्या	796
किए गए एचपीएलसी की कुल संख्या	397
जीन एक्सपर्ट के तहत नमूनों की कुल संख्या	111
एनडीआरएस सर्वेक्षण हेतु पंजीकृत रोगियों की कुल संख्या	2298
एनडीआरएस सर्वेक्षण हेतु पंजीकृत नमूनों की कुल संख्या	4556
एनडीआरएस सर्वेक्षण हेतु रद्द किए गए नमूनों की कुल संख्या	341
एमडीआरएस सर्वेक्षण हेतु प्राइमरी कल्चर के लिए रखे गए नमूनों की कुल संख्या	2620
एमजीआईटी द्वारा डीएसटी हेतु रखे गए एनडीआरएस सर्वेक्षण की कुल संख्या	820
जीन एक्सपर्ट हेतु एनडीआरएस सर्वेक्षण नमूनों की कुल संख्या	30
रीलैप्स अध्ययन हेतु पंजीकृत रोगियों की कुल	331
रीलैप्स अध्ययन हेतु पंजीकृत नमूनों की कुल	588
प्राइमरी कल्चर हेतु रखे गए रीलैप्स अध्ययन नमूनों की कुल संख्या	588
सॉलिड कल्चर (एलजे) द्वारा डीएसटी हेतु रखे गए रीलैप्स अध्ययन नमूनों की कुल संख्या	118

¼?k½ i'kq ykc ;fuV

- एक सौ सतहत्तर पशुओं का स्वास्थ्यप्रद स्थिति में पालन किया गया था। अल्बिनो ग्यूनिया पिग्स के नए पैदा हुए सजातीय स्टॉक से, चल रहे पशु प्रयोगों के लिए आवश्यक शारीरिक वजन बढ़ाने हेतु वीन्ड पशुओं का पालन किया गया था।
- वीन्ड पशुओं का सतत रूप से वजन करना और पशुओं का वजन रिकॉर्ड करना। अल्बिनो ग्यूनिया पिग्स के स्टॉक में बीमारी के प्रकोप से बचने के लिए उचित निवारक उपाय किए गए। विरत प्रजनक के लिए आउटडोर शरण में बूढ़े पशुओं का रखरखाव संतोषजनक ढंग से किया गया था।
- प्रजनन और प्रयोगशाला पशुओं के समरूप स्टॉक का रख–रखाव (ग्यूनिया पिग्स)

16-10-3 egkekjh foKku ,oa vuqla/kku çHkkx

महामारी विज्ञान एवं अनुसंधान प्रभाग की प्रमुख जिम्मेदारियों में टीबी पर महामारी विज्ञान और ऑपरेशन अनुसंधान अध्ययनों का आयोजन और टीबी महामारी विज्ञान एवं ऑपरेशन रिसर्च में प्रशिक्षण देना शामिल हैं। रिपोर्टिंग की अवधि के दौरान प्रभाग के अनुसंधान गतिविधियों के तहत निम्नानुसार जानकारी दी जाती है:

1. आरएनटीसीपी के तहत उपचारित नव निदान थूक पॉजिटिव पीटीबी मरीजों में टीबी की पुनरावृत्ति का मल्टी केंद्रित कॉहोर्ट अध्ययन – एक सहयोगी अध्ययन;
2. बेंगलुरू शहर में निजी स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में टीबी के मामलों का पता लगाने की दक्षता और टीबी के मामलों का प्रबंधन में सुधार;
3. बेंगलुरू शहर के निजी चिकित्सकों के टीबी के निदान और उपचार में ज्ञान का अध्ययन;
4. "99 डॉट्स: तपेदिक रोग की निगरानी और पालन में सुधार करने के लिए मोबाइल फोन का उपयोग करते हुए एक नवीन परियोजना;
5. बंगलौर सिटी, कर्नाटक की मलिन बस्तियों में मामले का पता लगाने में सुधार करने के लिए एक सक्रिय टीबी रोग के मामले का पता लगाने (एसीएफ) के लिए सर्वेक्षण;
6. नियमित निगरानी प्रणाली में टीबी के मामलों की कम रिपोर्टिंग की सीमा का पता लगाने के लिए कर्नाटक राज्य में इन्वेंटरी अध्ययन।
7. तुमकुर जिले में बाल चिकित्सा टीबी इन्वेंटरी अध्ययन की योजना बनाने के लिए आधारभूत डेटा संग्रह।

çdk'ku fØ;kdyki% संस्थान का संकाय, टीबी पर प्रमुख पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित करता है। टीबी और छाती रोग पर राष्ट्रीय सम्मेलन में संस्थान द्वारा किए गए शोध अध्ययन के आधार पर प्रस्तुतियाँ और पोस्टर सत्र तैयार करना। एनटीआई बुलेटिन के आंतरिक प्रकाशन किए जाते हैं।

16-10-4 f'k{k.k fd, x, çe[k fØ;kdyki

नीचे उल्लिखित संगठनों के छात्रों ने 1 अप्रैल 2014 से 31 अक्टूबर 2015 के बीच संस्थान का दौरा किया और उन्होंने टीबी समस्या, टीबी नियंत्रण कार्यक्रम, इसकी रणनीति और भूमिका जो उनके द्वारा टीबी के नियंत्रण में निभाया जा सकता है, के बारे में अवगत कराया गया।

d- l-	fnukad	Nk=k dh J.kh	Nk=k dh l[;k	lLFkku
1	13-04-15	बीएससी (एन)	43	डॉ. श्यामला रेड्डी कॉलेज ऑफ नर्सिंग, बेंगलुरू
2	11-05-15	बीएससी (एन)	10	बीएमजे कॉलेज ऑफ नर्सिंग, बेंगलुरू
3	14-05-15	स्नातकोत्तर छात्र (एमपीएच)	06	आरजीआईपीएच एवं सीडीसी, बेंगलुरू
4	15-05-15	बीएससी (एन)	55	श्री देवराज ऊर्स कॉलेज ऑफ नर्सिंग, कोलार
5	25-05-15	एमएससी (एन) जीएनएम	03 32	पद्मश्री स्कूल ऑफ नर्सिंग, बेंगलुरू
6	26-05-15	बीएससी (एन)	55	सेंट जोन कॉलेज ऑफ नर्सिंग बेंगलुरू
7	27-05-15	बीएससी (एन)	50	एसजेबी कॉलेज ऑफ बेंगलुरू
8	28-05-15	जीएनएम	55	
9	12-06-15	हैल्थ वर्कर्स सोसायटी	20	एसओसीएचएआरए स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ एवं इक्विटी, बेंगलुरू
10	17-07-15	बीएससी (एन)	38	गार्डन सिटी कॉलेज ऑफ नर्सिंग, बेंगलुरू
11	30-07-15	स्नातकोत्तर मेडिसिन सोसायटी	05	राजारजेष्वरी मेडिकल कॉलेज, बेंगलुरू
12	13-08-2015	बीएससी (एन)	32	एसएसएसआईएचएमएस कॉलेज ऑफ नर्सिंग, बेंगलुरू
13	17-08-2015	एमएसडब्ल्यू छात्र	30	ऑक्सफोर्ट कॉलेज ऑफ आर्ट, बेंगलुरू
14	14-09-15	एमपीएच छात्र	20	पद्मश्री स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ, बेंगलुरू
15	18-09-15	एमडी मेडिसिन सोसायटी	13	सरकारी चिकित्सा कॉलेज, कालीकट, केरल
16	21-09-15	एमडी मेडिसिन सोसायटी	07	एएफएमसी, पुणे, महाराष्ट्र

16-10-5 ctV

योजना और गैर–योजना के तहत बजट का विवरण तथा अक्टूबर 2015 के अंत तक व्यय इस प्रकार है:

(रू. हजार में)

	ikIr ctV	0;;
गैर–योजना	83400	55309
योजना	27500	16265
dqy	**110900**	**71574**

16-11 ubZ fnYyh {k;jksx ¼,uMhVhch½ dsaæ] ubZ fnYyh

वर्ष 1940 में मॉडल टीबी क्लीनिक के रूप में छोटी सी शुरुआत से आज एनडीटीबी केंद्र टीबी और वक्ष रोगों के लिए राष्ट्रीय स्तर संस्थान के रूप में विकसित हो गया है। यहाँ एकीकृत रूप से स्वास्थ्य परिचर्या प्रशिक्षण, शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य को पूरा किया जा रहा है। पूरे देश में गुणवत्तापूर्ण डीओटी सेवाओं के विस्तार के उद्‌देश्य के साथ केन्द्र द्वारा टीबी तथा श्वसन रोगों के क्षेत्र में सेवाएं प्रदान करना जारी है। वर्तमान में संस्थान के पास निम्नलिखित गतिविधियां हैं:

1. क्षयरोगियों तथा संबद्ध रोग से ग्रस्त रोगियों के लिए रेफरल ओपीडी सेवाएं।
2. क्षयरोगियों और मधुमेह/क्षयरोग एवं एचआईवी, चिरकालिक अवरुद्ध वायुपथ रोग तथा तंबाकू मुक्ति क्लीनिक।
3. राज्य क्षयरोग प्रशिक्षण और प्रदर्शन केंद्र से संबद्ध कार्यकलाप।
4. इंटरमीडिएट संदर्भ प्रयोगशाला कार्यकलाप।
5. क्षयरोग तथा श्वास रोग के क्षेत्र में अनुसंधान

16-11-1 ubZ fnYyh {k;jksx dsUæ ds dk;Zdykiksa dk lkj

वर्ष 2015–16 के दौरान नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र के कार्यकलापों की एक झलक:

d½ cfgjax mifLFkfr%

ekud	o"kZ 2014&15	o"kZ 2015&16	
		flrEcj] 2015 rd dh miyfC/k;k¡	2015&16 ds fy, y{;
पंजीकृत नए बहिरंग रोगी	7843	5223	10000
रोगियों का फिर से जांच के लिए आना	6144	4556	9000
कुल	13987	9779	19000

[k- ubZ fnYyh {k;jksx dsUæ esa miyC/k fofHkUUk uSnkfud@mipkjkRed lqfo/kkvksa ds mi;ksx ds fy, jksfx;ksa dh mifLFkfr

ekud	o"kZ 2014&2015	o"kZ 2015&2016	
		flrEcj] 2015 rd dh miyfC/k;k¡	2015&16 ds fy, y{;
प्रयोगशाला जांच के लिए उपस्थित	34415	11492	23000
मास्टक जांच के लिए उपस्थित होना	5837	4142	8000
एनडीटीबी केन्द्र के डीओटी केन्द्र के अंतर्गत उपचार लाना	64	66	–
रेडियोलॉजिकल जांच	980	847	1650
विषेष क्लीनिक में उपस्थित होना (मधुमेह, एचआईवी, सीओएडी)	252	130	–

x- izf'k{k.k@vkbZvkj,y nkSjs@ izdk'ku

	2014&2015	flrEcj] 2015 rd dh miyfC/k;k¡
प्रशिक्षित कार्मिक	2084	1066
इक्यूए के लिए आईआरएल दौरे	22	12
चेस्ट क्लीनिक के लिए पर्यवेक्षण व मॉनीटरिंग	18	14
अनुसंधान और प्रकाशन	4	3

16-11-2 vuqla/kku ,oa çdk'ku

वर्ष 2014–15 के दौरान केंद्र के शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित शोध पत्र प्रकाशित या प्रस्तुत किए गए हैं:

- ''चिकित्सक के दृष्टिकोण के साथ तपेदिक में आण्विक निदान पर दोबारा गौर किया गया''– भारतीय तपेदिक जर्नल, 2014 में एक संपादकीय क्षय रोग इंडियन जर्नल, 2014 प्रकाशित किया गया। संजय राजपाल और वी.के. अरोड़ा आईजेटी, 2014%61%277–280

- ^^lpuk vkj lpkj çk|kfxdh & ^^LokLF; {k= e vuqi;kx** नामक लेखकों टीबी सील रिलीज के अवसर पर भारतीय क्षय रोग एसोसिएशन की स्मारिका में प्रकाशित किया गया।
- ^{k; jkx funku vkj çcU/ku e pukfr;k% fo'k"kK iuy dh flQkfj'k* प्रयोगशाला चिकित्सक जनवरी–जून, 2015/खंड 7/अंक की पत्रिका में संपादकीय प्रकाशित किया गया।
- पीएलओएस वन में प्रकाशन के लिए ^^cky fpfdRlk vkcknh e Vhch vkj Mh vkj& Vhch d funku d fy, dk;Øe dh 'krk d rgr fofHkUu ueuk ij ik;yfVx viÝV ,Dl iV ,eVhch vkjvkb,Q ijh{k.k** लेख स्वीकार किया गया।

16-12 jk"Vh; dUæ jkx fu;=.k

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन संस्थान है। निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवा के लोक स्वास्थ्य उपसंवर्ग के एक अधिकारी, संस्थान के प्रशासनिक और तकनीकी प्रमुख है। संस्थान का मुख्यालय दिल्ली में है और इसकी 8 शाखाएं अलवर (राजस्थान), बेंगलुरू (कर्नाटक), कोझिकोड (केरल), कुन्नूर (तमिलनाडु), जगदलपुर (छत्तीसगढ़), पटना (बिहार), राजमुंदरी (आंध्र प्रदेश) और वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में स्थित हैं। संस्थान के मुख्यालयों में कई केन्द्र/प्रभाग हैं अर्थात महामारी और परजीवी रोग केन्द्र (महामारी विज्ञान विभाग, और परजीवी रोग), माइक्रोबायोलॉजी डिवीजन, एड्स और संबंधित रोग और जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र), जूनोसिस प्रभाग, मेडिकल कीट विज्ञान और वेक्टर प्रबंधन केन्द्र तथा मलेरिया विज्ञान और समन्वय डिविजन, उभरते सार्वजनिक स्वास्थ्य की चुनौतियों के कारण, तीन नए केंद्रों/डिविजनों (गैर संचारी रोगों और जैव रसायन केन्द्र, पर्यावरण और व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य प्रभाग) का गठन किया हैं।

16-12-1 ,dh—r jkx fuxjkuh ifj;kstuk ¼vkbZMh,lih½

एकीकृत रोग निगरानी परियोजना (आईडीएसपी) को नवंबर, 2004 में विश्व बैंक की सहायता के साथ आरंभ किया गया था। परियोजना में गैर–संचारी रोग जोखिम कारकों के साथ–साथ संचरणीय रोग की संख्या के आंकड़ों को एकत्रित करने पर विचार किया गया, परन्तु बाद में अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विशेषज्ञों की संस्तुति पर 2007 में जानपदिक जनित रोगों पर ही ध्यान केंद्रित किया गया। परियोजना को रू. 640 करोड़ के परिव्यय पर सभी राज्यों के लिए एनएचएम के तहत एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम के रूप में घरेलू बजट के साथ 12वीं योजना में जारी रखा गया।

ifj;kstuk l?kVd%&

- केंद्र, राज्य एवं जिला सतर पर निगरानी एककों की स्थापना करके निगरानी, गतिविधियों का एकीकरण एवं विकेंद्रीकीरण।
- मानव संसाधन विकास– रोग निगरानी के सिद्धांतों पर राज्य निगरानी अधिकारियों, जिला निगरानी अधिकारियों, शीघ्र प्रतिक्रिया दल एवं अन्य मेडिकल एवं परामेडिकल स्टॉफ का प्रशिक्षण।
- आंकडे के संग्रहण, कोलेशन, समेकन, विश्लेषण एवं प्रसारण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग।
- जन स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं को सशक्त बनाना।
- जूनोटिक रोगों हेतु अन्तर्क्षेत्रीय समन्वय

vkbZMh,lih dk;kZUo;u dh orZeku fLFkfr

सभी राज्य एवं जिला मुख्यालयों (एसएसयू, डीएसयू) में निगरानी एककों को स्थापित किया गया है। राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी), दिल्ली में केंद्रीय निगरानी

एकक (सीएसयू) को एकीकृत किया गया है। इकाइयों में 407 जानपदिक विज्ञानी, 115 सूक्ष्म जैव विज्ञानी, 27 इंटोमोलोजिस्ट और 8 पशुचिकित्सा परामर्शदाताओं की भर्ती की गई है। राज्य/जिला निगरानी टीम (प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण) एवं शीघ्र प्रतिक्रिया दलों (आरआरटी) का प्रशिक्षण सभी 36 राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों में पूरा हो गया है।

राज्य स्तर सहभागियों के लिए प्रशिक्षण का मुख्य केंद्र रोग निगरानी, जानपदिक विज्ञान संकल्पनाएं एवं आंकड़े प्रबंधन के आधार पर है जबकि जिला प्रशिक्षण का मुख्य ध्यान आंकड़ों के सही संचयन, समेकन एवं रिपोर्टिंग तथा आउटब्रेक प्रतिक्रिया पर है। जिला निगरानी अधिकारियों के लिए आवश्यकता आधारित विशेष दो–सप्ताह का रोग निगरानी प्रशिक्षण कार्यक्रम (एफईटीपी) को आरंभ किया गया है। इस विशेष 2 सप्ताह एफईटीपी में 729 जिला निगरानी अधिकारियों को पहले ही प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (एनआईसी) की मदद से आंकड़े की प्रविष्टि, आंकड़े का स्थानांतरण, विश्लेषण एवं विडियो कांफ्रेंसिंग के लिए 776 स्थानों (सभी राज्य/यूटी एवं जिला मुख्यालयों, मेडिकल कॉलेजों, संक्रामक रोग अस्पतालों (आईडीएच) एवं अग्रणी स्वास्थ्य संस्थानों) में आईटी नेटवर्क की स्थापना की गई है। हाल ही में इसरो ने सेटेलाइट संपर्क को पुनः आरंभ करने के लिए जीएसएटी–3 से जीएसएटी–12 तक नेटवर्क का स्थानांतरण आरंभ किया है। 367 स्थापित स्थानों में से 130 स्थानों के मामले में नवंबर, 2014 तक नेटवर्क स्थानांतरित कर दिया गया है।

आईडीएसपी ने प्रशिक्षण सामग्री, दिशानिर्देश, रोग निगरानी से संबंधित स्वास्थ्य कार्मिक के लिए परामर्श देने जैसे निःशुल्क संसाधनों, रूझान विश्लेषण एवं आंकड़ों तक पहुंच एवं प्रसारण के लिए वन स्टाप पोर्टल (http://www.idsp.nic.in) को आंरभ किया है।

, l ,pvkl h ¼dk;uhfrd LokLF; ipkyu dn½

अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके राज्यों और जिलों की प्रकोप का पता लगाने और अनुक्रिया क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए आईडीएसपी के तहत कार्यनीतिक स्वास्थ्य प्रचालन केंद्र (एसएचओसी) की स्थापना की गई है। एनसीडीसी के सभी प्रभागों और तकनीकी गतिविधियों को शामिल करते हुए 47 मानक प्रचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) के साथ एक संक्रामक रोग प्रकोप योजना तैयार की गई है जो किसी संक्रामक रोग प्रकोप की अनुक्रिया के दौरान एचएसओसी के उपयोग से संबंधित है। एसएचओपी को और सुदृढ़ किया जा रहा है।

MkVk ic/ku

आईडीएसपी के अधीन सप्ताहिक आधार (सोमवार–रविवार) पर महामारी जनित रोगों पर आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। इस जानकारी को तीन विशिष्ट रिपोर्टिंग फोर्मेट पर एकत्रित किया जाता है अर्थात् ''एस'' (सस्पेक्टिड केस), ''पी'' (प्रीजम्पटिव केस) एवं ''एल'' (लेबोरेटरी पुष्ट केस), इन्हें क्रमशः स्वास्थ्य कर्मचारी, क्लिनिसिएन एवं प्रयोगशाला स्टाफ द्वारा भरा जाता है। साप्ताहिक आंकड़े रोगों के मौसम तत्व एवं प्रवृत्ति पर सूचना देते हैं। जब कभी, किसी क्षेत्र में बीमारी बढ़ जाती है तो इसके प्रकोप को कम एवं नियंत्रण करने के लिए रैपिड रिस्पोंस टीम (आरआरटी) द्वारा जांच की जाती है। संबंधित राज्य/जिला निगरानी एककों द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है तथा इस पर कार्रवाई की जाती है। वर्तमान में प्रमुख अस्पतालों से निगरानी आंकड़ों की रिपोर्टिंग पर जोर दिया जाता है। वर्तमान में देश में लगभग 90% जिले ई–मेल या पोर्टल के द्वारा महामारी वाली बीमारियों पर साप्ताहिक निगरानी आकंड़े भेजे जाते है।

ehfM;k Ldfux vkj lR;kiu idk"B

आईडीएसपी के तहत जुलाई 2008 में सत्यापन एवं प्रतिक्रिया के लिए संबंधित राज्यों/जिलों के साथ मीडिया एलटर्स को खोजने एवं बांटने के लिए मीडिया स्कैनिंग एवं सत्यापन प्रकोष्ठ की स्थापना की गई थी। जुलाई 2008 में इसकी स्थापना से नवंबर 2015 तक कुल 3487 मीडिया एलर्ट के बारे में रिपोर्ट दी गई है। अधिकांश एलर्ट डायरिया, भोजन जनित एवं वेक्टर जनित रोगों के संबंध में थे।

i;kx'kkykvk dk etcr cukuk

महामारी जनित रोगों के निदान के जिला प्रयोगशालाओं को मजबूत किया जा रहा है। अभी तक 29 राज्य में 105 प्रयोगशालाओं को चरणवार ढंग से कार्यशील किया गया है। इन लैबों में प्रशिक्षित कार्मिकों, अनिवार्य उपकरणों हेतु

निधि तथा रिएजेंट्स एवं उपभोज्य के लिए प्रति वर्ष प्रति लैब रू. 4 लाख के वार्षिक अनुदान की सहायता प्रदान की जा रही है।

चिह्निनत मेडिकल कॉलेजों एवं राज्यों में अन्य प्रमुख केंद्रों में विद्यमान कार्यशील लैबों का उपयोग करके एक राज्य आधारित रेफरल लैब नेटवर्क की स्थापना की गई है एवं उन्हें महामारी के फैलने के दौरान महामारी वाले रोग के लिए नैदानिक सेवाओं को प्रदान करने के लिए साथ वाले जिलों से जोड़ा गया है। 99 प्रयोगशालाओं को शामिल करते हुए 22 राज्यों में वर्तमान में यह नेटवर्क कार्यशील है।

इसके अतिरिक्त, देश में इंफ्लुएंजा निगरानी के लिए 12 प्रयोगशालाओं का एक नेटवर्क को विकसित किया गया है। ये प्रयोगशालाएं देश के विभिन्न क्षेत्रों में इंफ्लुएंजा ए एच1एन1 के क्लिनिक नमूनों की जांच कर रही हैं।

2008] 2009] 2010] 2011] 2012] 2013] 2014 vkj 2015 ¼08-11-2015 dk lekIr lIrkg rd½ e lHkh jkT;k@l?k jkT; {k=k }kjk fjikVZ fd, x, dy idkik dh jkT;okj l[;k¼

Ø- l-	jkT;@l?k jkT; {k=	o"k								dy
		2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	
1	अंडमान एवं निकोबार	0	0	0	0	0	1			1
2	आंध्र प्रदेश	72	64	75	91	97	123	64	47	633
3	अरूणांचल प्रदेश	6	6	6	10	9	7	8	17	69
4	असम	16	30	53	97	75	70	84	68	493
5	बिहार	1	6	21	144	181	134	86	96	669
6	चंडीगढ़	3	3	2	1	5	0		7	21
7	छत्तीसगढ़	1	7	2	55	45	58	50	49	267
8	दादरा और नगर हवेली	0	0	1	0	0	2	3	16	22
9	दमन और दीव	0	1	1	0	2	0		3	7
10	दिल्ली	3	1	0	3	1	4	4	11	27
11	गोवा	2	3	0	2	1	8		5	21
12	गुजरात	24	49	83	150	102	117	109	113	747
13	हरियाणा	10	9	18	21	19	15	27	24	143
14	हिमाचल प्रदेश	3	13	7	4	13	5	11	22	78
15	जम्मू–कश्मीर	*	*	2	23	43	54	33	41	196
16	झारखंड	*	5	4	29	24	50	53	62	227
17	कर्नाटक	54	97	89	196	156	251	163	161	1167
18	केरल	17	47	54	56	80	76	74	83	487
19	लक्षद्वीप	*	*	*	*	*	*	2	1	3
20	मध्य प्रदेश	16	65	70	89	65	98	83	123	609
21	महाराष्ट्र	99	27	65	141	215	256	205	167	1175
22	मणिपुर	1	2	2	4	1	4	4	4	22
23	मेघालय	5	3	2	1	1	1	3	12	28
24	मिजोरम	5	0	0	0	1	1	2	4	13
25	नगालैंड	0	1	2	1	0	1	1	2	8
26	ओड़िशा	17	38	19	55	36	113	87	66	431

27	पुद्दुचेरी	3	2	4	1	2	0	5	1	18
28	पंजाब	17	22	18	44	34	24	21	39	219
29	राजस्थान	8	43	84	68	41	33	33	58	368
30	सिक्किम	3	0	2	4	1	3	3	3	19
31	तमिलनाडु	50	113	90	127	173	149	122	112	936
32	तेलंगाना							7	27	34
33	त्रिपुरा	1	2	2	7	3	4	13	8	40
34	उत्तर प्रदेश	40	67	98	34	40	37	35	112	463
35	उत्तराखंड	27	30	25	36	23	33	19	19	212
36	पश्चिम बंगाल	49	43	89	181	95	232	148	136	973
	d|y	553	799	990	1675	1584	1964	1562	1719	10846

16-12-2 jk"Vh; jkx fu;=.k dUæ dk 382 djkM #i;s dh ykxr l mUur cuk;k tk jgk gA

- अभी तक फेज –1 के तहत 95 प्रतिशत कार्य पूरा कर लिया गया है।
- सभी राज्यों एक केन्द्र शासित प्रदेश में 367.60 करोड़ रुपए की लागत पर एनसीडीसी की 30 शाखाओं (8 मौजूदा शाखाओं सहित) की स्थापना करने का प्रस्ताव है।
- राज्यों से एनसीडीसी शाखा की स्थापना के लिए 2–3 एकड़ भूमि निःशुल्क उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया है।

16-12-3 ijthoh jkx iHkkx

¼i½ ;kt mUeyu dk;Øe ¼okbbZih½

याज उन्मूलन कार्यक्रम को ओडिशा के कोरापुट जिले में वर्ष 1996–97 में केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना के रूप में शुरू किया गया था, जिसे बाद में दस राज्यों (आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, झारखंड, असम और गुजरात) में सभी 51 याज स्थानिक जिलों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया गया था। कार्यक्रम का लक्ष्य देश के दुर्गम आदिवासी क्षेत्रों तक पहुंच बनाना था।

इस कार्यक्रम की योजना, निगरानी और मूल्यांकन के लिए राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र को नोडल एजेंसी के रूप में चिह्नित किया गया था। 1996 से 2003 तक की अवधि के दौरान सूचित मामलों की संख्या 3751 से घटकर शून्य हो गई है और उसके बाद नवम्बर, 2013 तक किसी भी राज्य से किसी मामले की सचूना प्राप्त नहीं हुई है।

इस रोग को दिनांक 19 सितम्बर, 2006 को उन्मूलित घोषित कर दिया गया है। डब्ल्यूएचओ के एक अन्तर्राष्ट्रीय सत्यापन दल (आईवीटी) जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय विशेषज्ञ शामिल होते है, नें 4–17 अक्तूबर, 2015 के दौरान भारत की यात्रा की। आईवीटी ने विश्व स्वास्थ्य संगठन को दृढ़तापूर्वक सिफारिश किया कि वह भारत के लिए याज उन्मूलन प्रमाण पत्र जारी करने पर विचार करे।

¼ii½ fxuh dfe mUeyu dk;Øe ¼thMCY;bih½ %

वर्ष 1983–84 में, भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा गिनी कृमि उन्मूलन कार्यक्रम (जीडब्ल्यूईपी) की योजना, समन्वयन, मार्गदर्शन और मूल्यांकन के लिए राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र को नोडल एजेंसी बनाया गया था। वर्ष 1984 में कार्यक्रम की शुरूआत में, सात स्थानिक राज्यों अर्थात आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के 89 जिलों में 12,840 गिनी कृमि स्थानिक गांवों में लगभग 40,000 गिनी कृमि के मामले सूचित किए गए थे। तमिलनाडु राज्य 1982 से गिनी कृमि रोग से मुक्त रहा है।

भारत में अंतिम गिनी कृमि मामला जुलाई 1996 में राजस्थान के जोधपुर जिले से सूचित किया गया था। विश्व स्वास्थ्य

संगठन ने फरवरी 2000 में भारत को गिनी कृमि रोग मुक्त राष्ट्र घोषित किया। तथापि, रोग के वैश्विक रूप से उन्मूलन होने तक नेमी सर्विलांस जारी रखा जा रहा है।

16-12-4 i'kqtU; jksx izHkkx

इस प्रभाग का उद्देय, देश में पशुजन्य रोग एवं उसके नियंत्रण के क्षेत्र में इसके फैलने की जांच हेतु तकनीकी सहायता प्रदान करना, प्रचलनात्मक शोध करना और प्रशिक्षित जन शक्ति का विकास करना है। राज्य सरकारों को जन स्वास्थ्य महत्व के पशुजन्य संक्रमणों के प्रयोगशाला निदान हेतु नैदानिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

इस प्रभाग में प्लेग हेतु संदर्भ प्रयोगशाला है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा इसे रेबीज हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोगी केंद्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। वर्तमान में निम्नलिखित पशुजन्य रोग पर कार्य किया जा रहा हैः रेबीज, काला अजार, टोक्सोप्लास्मा, ब्रूसेलोसिस, संक्रमण (डेंगू, जेई व चिकुनगुनिया), और लेप्टोस्पायरोसिस, रिकेटसियोसिस, हाइडेटीडोसिस अर्बोवायरल रोग, प्लेग–रोडेंट सीरा और ऑर्गन एंथ्रेक्स। वायरस आइसोलेशन एलिसा द्वारा लाईम रोग, एलिसा द्वारा सिस्टीसेरकोसिस निदान और एलिसा द्वारा हांटा वायरस।

12oha iapo"kh; ;kstuk dh rgr ¼2012&2017½ rhu ubZ igysa

- jk"Vªh; jschl fu;a=.k dk;Øe½ इसके दो घटक है अर्थात मानव घटक जिसे सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। एनसीडीसी नोडल केंद्र है। पशु स्वास्थ्य घटक का हरियाणा और चेन्नई में पायलट परीक्षण किया जा रहा है। भारतीय पशु कल्याण बोर्ड, पर्यावरण और वन मंत्रालय नोडल एजेंसी है।
- yIVkLikbjksfll jksdFkke vkSj fu;a=.k dk;Øe½ इसे स्थानिक राज्यों अर्थात तमिलनाडु, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, केरल और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में लागू किया जा रहा है
- vUr{ks=h; tukfVd jksx jksdFkke vkSj fu;a=.k leUo; dk lq–<+hdj.k

16-12-5- lw{e tho foKku izHkkx ¼lh,vkjMh rFkk tSo izkS|ksfxdh lfgr½

¼i½ izHkkx dh eq[; xfrfof/k;ka

- वायरल, बैक्टीरियल और माइकोटिक रोगों के लिए रेफरल निदान सेवाएं। इनमें प्रमुख हैं, इन्फ्लुएंजा, पोलियो, हेपेटाइटिस, खसरा, हैजा, मेनिंगोकोकस इत्यादि।
- पोलियो सर्विलांस (एएफपी), और पर्यावरणीय (मलमूत्र) पोलियो वायरस सर्विलांस हेतु राष्ट्रीय प्रयोगशाला।
- प्रकोप अन्वेषणों के लिए प्रयोगशाला सहायता।
- एकीकृत रोग सर्विलांस प्रोजेक्ट (आईडीएसपी) हेतु प्रयोगशाला सहायता।
- पर्यावरणीय नमूनों का सूक्ष्म जीव विज्ञानी विश्लेषण।
- संचारी रोगों के प्रयोगशाला पहलुओं संबंधी प्रशिक्षण।
- देश में विभिन्न संगठनों और संस्थानों में सहयोगी प्रयोगशालाओं हेतु प्रकोप अन्वेषण के रूप में अभिकर्मकों, संवर्धन माध्यम, नैदानिक किट और अन्य सामग्री तैयार करना और उसकी आपूर्ति; और
- दुर्लभ तथा नए पैथोगेन की जांच (उदाहरण इबोला वायरस)।

¼ii½ dk;Øe

jk"Vªh; ,Vh&ekbØkscs;y izfrjks/k jksdFkke dk;Øe

- कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए डीजीएचएस की अध्यक्षता में 2 पृथक समूहों अर्थात् विशेषज्ञ कार्य दल और निगरानी समिति का गठन किया गया है।
- कार्यक्रम के पहले चरण में 10 मेडिकल कॉलेज लैब की पहचान की गई है। इन कॉलेजों और एनसीडीसी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

कर लिया गया है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के आईएफडी से धनराशि का हस्तातंरण किया जा रहा है।

- चिकित्सा विज्ञान के विभिन्न संकायों में विशेषज्ञ कटिंग के बड़े समूह द्वारा विभिन्न संक्रामक रोगों में एंटिमाइक्रोबायल के प्रयोग हेतु एक सामान्य यूनिफायड jk"Vªh; mipkj fn'kkfun'sZ'k विकसित किया गया है।

Hkkjr esa jk"Vªh; ok;jy gsisVkbfVl fuxjkuh dk;ZØe

- सुरक्षित इंजेक्शन रीतियों पर दिशानिर्देश तैयार किए गए हैं और डॉक्टरों तथा अन्य स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों के उपयोग के लिए जारी किए गए हैं।
- वायरल हैपेटाइटिस रोकथाम और नियंत्रण पर दिशानिर्देश पूरा होने की अंतिम अवस्था में हैं और इन्हें शीघ्र ही जारी किया जाएगा।
- देश भर में वायरल हैपेटाइटिस पर प्रयोगशाला आधारित डेटा तैयार करने के लिए कुछ ही समय में 10 प्रयोगशालाओं का एक नेटवर्क स्थापित किया जाएगा।

jk"Vªh; bU¶yq,atk fuxjkuh

आईएलआई निगरानी के माध्यम से इन्फ्लूएंजा वायरस पर गुणवत्तापूर्ण डेटा तैयार करने के लिए देश भर के मेडिकल कॉलेजों में स्थित 12 प्रयोगशालाओं का एक नेटवर्क स्थापित किया गया है।

¼iii½ ifj;kstuk,¡

- एनसीडीसी पहले से ही कई वर्षों से खसरा के लिए परीक्षण कर रहा है। अब एनसीडीसी डब्ल्यूएचओ के साथ सहयोग में [kljk mUewyu ifj;kstuk का एक हिस्सा है क्योंकि एनसीडीसी के विषाणु विज्ञान प्रयोगशाला को इस परियोजना के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। कर्मचारियों को पहले से ही खसरा नमूनों की जांच के लिए प्रशिक्षित कर दिया गया है।
- एनसीडीसी पहले से ही jk"Vªh; iksfy;ks fuxjkuh ifj;kstuk ¼,uih,lih½ का एक हिस्सा हो गया है। वर्तमान में, प्रयोगशाला द्वारा पोलियो वायरस का अलगाव और पोलियो वायरस का इंट्रा–टाइप विशिष्टिकरण किया जा रहा है। पोलियो वायरस के नमूने को जीनोमिक अनुक्रमण के लिए ईआरसी, मुम्बई भेजा जाता है।
- ,Mªl çHkkx ने परियोजना को पूरा कर लिया था। एनएफएचएस 4 आईआईपीएस द्वारा वित्त पोषित परियोजना है, अप्रैल, 2015 से अक्टूबर, 2015 तक के महीने में लॉग इन नमूनों की संख्या 17,481 थी।
- vfrlkjh; jksx iz;ksx'kkyk द्वारा (डीडीएल) 1968 के बाद से प्रयोगशाला ¼fnYyh vkj mlds vklikl iz;ksx'kkyk vk/kkfjr gStk dh fuxjkuh½ संचालित किया गया है। प्रयोगशाला को संदिग्ध तीव्र आंत्रशोध या हैजा के मामलों से वर्ष के दौरान आईडी अस्पताल से 104 रेक्टल स्वाब नमूने प्राप्त हुए।
- MhMh,y (पिछले 10 साल से) ^^v:.kk vklQ vyh vLirky dh cky fpfdRlk vkcknh esa rhoz vka=‘kkFk ds ekeyksa dk v/;;u** uked ,d vU; ifj;kstuk lapkfyr dj jgk gSA इस बाल चिकित्सा आबादी से तीव्र आंत्रशोथ के 67 मल के संदिग्ध नमूने प्राप्त हुए थे।
- शुरू की गई नई परियोजनाएं: ^^v:.kk vklQ vyh vLirky] fnYyh esa HkrhZ fd, x, 0&5 lky ds cPpksa esa jkVk ok;jl ij fuxjkuh v/;;u**A कुल 67 नमूने प्राप्त किए गए।
- नई परियोजना: एएए अस्पताल के सहयोग से जनवरी, 2014 में ^^fnYyh ljdkj ds ,d vLirky ds cky jksx xgu fpfdRlk d{k esa cDVhfj;k ;k dod jksxtudksa ds dkj.k uotkr lsfIVlhfe;k dk tYnh irk yxkus ds fy,** एक नई परियोजना शुरू की गई थी। इसे एक अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष में नवजात सेप्टीसीमिया के लिए जिम्मेदार फंगल और बैक्टीरियल रोगजनकों का बोझ निर्धारित करना था। अवधि के दौरान रक्त कल्चर के 16 नमूनें प्राप्त हुए।

¼iv½ izdksiksa dh tkap

- डॉ. सोमनाथ करमाकर, संयुक्त निदेशक, एनसीडीसी ने एवियन इन्फ्लुएंजा रोकथाम के उपायों के लिए

हैदराबाद (15 से 24 अप्रैल, 2015 तक) का दौरा किया।

- कानपुर, उत्तर प्रदेश में एनसीडीसी के अधिकारियों की एक टीम द्वारा रहस्यमय बुखार के प्रकोप की जांच की गई।

¼v½ okf"kZd mRiknu

ySc dk uke	tkap dk uke lalkf/kr	ueuksa dh la[;k@ifj.kke
fo"kk.kq foKku ç;kx'kkyk&1	पोलियो वायरस आयसोलेशन	9055 स्टूल नमूनों और 248 सीवेज नमूनों को संसाधित किया गया
	खसरा, ईबीवी, पार्वो वायरस, छोटी चेचक दाद वायरस और मंप्स निदान।	382 सीरम
fo"kk.kfoKku&II ¼,p1,u1½ ç;kx'kkyk	पीसीआर द्वारा पेंडेमिक इन्फ्लूएंजा ए एच1एन1, एच3एन3 और इन्फ्लूएंजा बी।	रियल टाईम पीसीआर द्वारा वीटीएम नमूनों में 929 थ्रोट स्वाब का परीक्षण किया गया
	इन्फलुएंजा प्रहरी निगरानी।	दिल्ली के 2 साइटों से 261 नमूनों को प्रोसेस किया गया
	रूबेला आईजीजी/आईजीएमय सीएमवीआईजीएम और एचएसवी–1/2आईजीएम के लिए।	टेराटोजेनिक वायरस के लिए 1,262 सीरम नमूनों का परीक्षण
gsiVkbfVl ç;kx'kkyk	एंटी एचएवी–आईजीएमय एंटि एचईवी–आईजीएमय एंटि एचसीवी और एचबीएसएजी के लिए	400 सीरम
thok.kq ç;kx'kkyk	विभिन्न रोग जनकों जैसे ई. कोलाई, क्लेबसिएला, स्यूडोमोनास, स्ताफ्ग्लोकोच्चुस औरेटस, स्ट्रैपटोकोकस, प्रोटियस, एसेनेटोबैक्टर, इन्टेरोकोकस और कोरिनेबैक्टेरियम डिफ्थेरिया के आईसोलेशन के लिए।	267 यूरिन कल्चर 93 ब्लड कल्चर, 15 पस 22 सीएसएफ/रक्त के नमूने (दिमागी बुखार के लिए) और (वाईडल परीक्षण के लिए) 60 रक्त के नमूने प्रोसेस किए गए।
vfrlkj jkx ç;kx'kkyk	प्योर कल्चर, विब्रियो हैजा, एनएजी विब्रियो, शिगेला, साल्मोनेला, गियार्डिया और रोटा वायरस में ई.कोलाई का पता लगाने के लिए।	कल्चर, माइक्रोस्कोपी और एलिसा तरीकों से 184 स्टूल/रेक्टल स्वाब प्रोसेस किए गए।
	बैक्टीरियल आइसोलेट के एंटीबायोटिक सेंसिविटी पैटर्न की जांच।	32 रोगाणुरोधी सेंसिविटी के परीक्षण किए गए।
i;kZoj.k ç;kx'kkyk	नमूना पोर्टेबिलिटी निर्धारित करने के लिए जल का जीवाणु विश्लेषण।	एमपीएन विधि द्वारा जीवाणु विश्लेषण के लिए 184 पानी के नमूने प्रोसेस किए गए।
	पोलियो वायरस के आयसोलेशन के लिए।	राष्ट्रीय पोलियो निगरानी कार्यक्रम के तहत 276 सीवेज नमूने प्रोसेस किए गए
{k; jkx ç;kx'kkyk	आयसोलेशन के लिए–माइकोबेक्टीरियम क्षयरोग की पहचान	माइक्रोस्कोपी/कल्चर के लिए थूक के 22 नमूने
efMdy ek;dksy,th ç;kx'kkyk	फंगल कल्चर/सेरो–निदान के लिए	सीएसएफ, थूक, ऊतक के 18 नमूनों को संसोधित किए गए।
dYpj ehfM;k vkiwfrZ	प्रयोगशाला निदान, निगरानी और क्षेत्र जांच के लिए	कल्चर प्लेटों और ट्यूबों की कुल 14860 संख्या तैयार की गई और विभिन्न प्रयोगशालाओं/प्रभागों की आपूर्ति की गई।
tSo çkS|kfxdh çHkkx	एचआईवी–1 में डीसी–साईन जीन रीजन (634 बीपी) और पी–24जीन रीजन (717 बीपी): एचसीवीआरएनए, (249 बीपी) के लिए और डेंगू विशिष्ट–सीपीआरएम जीन (511 बीपी) का पता लगाने के लिए।	पीसीआर/आरटीपीसीआर प्रवर्धन और बाद में स्वचालित अनुक्रमण के लिए सीरम के 80 नमूने
,M~l vkSj lacf/kr jksx dsUæ	एचआईवी सिरोस्टेटस, प्रहरी निगरानी जांच और आईसीटीसी ग्राहक परीक्षण की पुष्टि के लिए।	सीरम के 873 नमूनों का परीक्षण किया गया
	लिंक्ड एसआरएल और उनके संबद्ध आईसीटीसी के लिए प्रवीणता परीक्षण (पीटी) पैनल तैयार करना और वितरण करना	12 सदस्यों को वितरित किया गया।
	एनएआरआई, पुणे द्वारा एचआईवी सीरम विज्ञान आयोजन के लिए ईक्यूएएस में भाग लिया।	100% सामंजस्य प्राप्त।
	एचआईवी/एचबीवी/एचसीवी के लिए।	निदान किट के 20 बैचों का मूल्यांकन किया गया।

16-12-6 ,ulhMh dsUnz vkSj tSo jlk;u foHkkx

गैर–संचारी रोग (एनसीडी) को एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरे के रूप में उद्भव को देखते हुए निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ 24 फरवरी, 2015 को राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र में गैर–संचारी रोग केन्द्र की स्थापना की गई:

- देश में गैर–संचारी रोगों (एनसीडी) की रोकथाम और नियंत्रण के लिए नीतिगत विश्लेषण और नीतिगत विकास को सुविधाजनक बनाना।
- देश में एनसीडी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल पर विशेष ध्यान देने के साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के मानव संसाधन और निदान मामले में क्षमता निर्माण।

2015 के दौरान एनसीडी ने जन स्वास्थ्य महत्व के अंतर्राष्ट्रीय दिवसों अर्थात् विश्व तम्बाकू निषेध दिवस, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और विश्व हृदय दिवस को मनाने की वकालत के साथ अपनी गतिविधियों को शुरू किया।

एनसीडी केन्द्र के स्पष्ट रूप से अधिदेश निर्धारित करने के लिए दिनांक 25 जून, 2015 को डॉ. एन.एस. धर्मशक्तु, स्वास्थ्य सेवा अपर महानिदेशक की अध्यक्षता में एनसीडी पर एक विशेषज्ञ समूह की बैठक का आयोजन किया गया।

एनसीडी केन्द्र अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियमों (आईएचआर 2005) के साथ भी समन्वय कर रहा है।

ck;kdfeLVh iHkkx

अपर महानिदेशक स्वास्थ्य सेवा डॉ एन.एस. धर्मशक्तु की अध्यक्षता में 13.2.2015 को एनसीडीसी के बॉयोकैमिस्ट्री प्रभाग के सुदृढ़ीकरण हेतु सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया था। समिति की प्रमुख सिफारिशें हैं: (i) ढांचागत विकास (इम्युनोलॉजी, टॉक्सीकोलॉजी, जेनेटिक्स और मॉल्यूकुलर बॉयोलॉजी हेतु) (ii) उत्कृष्टता के राष्ट्रीय संस्थानों के साथ नेटवर्क लिंकेज और सहयोग तथा (iii) परामर्शदाताओं की भर्ती।

16-12-7 i;koj.k ,oa 0;kolkf;d LokLF; dsaæ

¼i½ çHkkx dh mi & ,dd @ mi&çHkkx @ ç;kx'kkykvksa dk fl)karoykdu

पर्यावरण एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य केंद्र एनसीडीसी में एक नया प्रभाग है जिसकी स्थापना निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ फरवरी, 2015 माह में की गई थी:

- पर्यावरण एवं स्वास्थ्य संबंधी व्यावसायिक चुनौतियों के मूल कारणों से निपटने तथा विकास के उभरते हुए एवं पुनः उभरते परिणामों की अनुक्रिया में सभी क्षेत्रों में लोक नीतियों को प्रभावित करने पर लक्षित प्राथमिक निवारण में तेजी लाकर स्वास्थ, पर्यावरण बनाने के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र के नेतृत्व में वृद्धि करना।
- पर्यावरण एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य नीति–निर्धारण, निवारक कार्यकलापों की आयोजना, सेवा प्रदानगी तथा निगरानी के सुदृढ़ीकरण के लिए केंद्र तथा राज्य सरकारों को तकनीकी सहायता एवं मदद प्रदान करना।
- पर्यावरण प्रदूषण एवं व्यावसायिक जोखिमों से जुड़ी बीमारियों के भार को कम करने वाले कार्यों की पहचान, मूल्यांकन तथा संवर्धन करना।
- पर्यावरण तथा स्वास्थ्यं संबंधी व्यावसायिक मुख्य जोखिमों के संबंध में साक्ष्य आधारित मूल्यांकन करना तथा मानक एवं दिशा–निर्देश तैयार करना और इनका अद्यतन करना।
- आपदा आने के उपरांत स्वास्थ्य संबंधी दुष्परिणामों को कम करने के लिए तैयारी तथा समय–पूर्वक अनुक्रिया के लिए तकनीकी एवं प्रचलनात्मक दिशा–निर्देश तथा मैनुअल, क्षमता–निर्माण विकसित करने हेतु सहायता।
- कार्यक्रम संबंधी गतिविधियों में सहायता प्रदान करने हेतु महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ऑपरेशनल रिसर्च की योजना बनाना तथा ऑपरेशनल रिसर्च करना।

¼ii½ i;koj.k ,oa 0;kolkf;d LokLF; dsaæ }kjk vk;ksftr eq[; fØ;kdyki

- केंद्र द्वारा जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य संबंधी राष्ट्रीय विशेषज्ञ समूह (एनईजीसीसीएच) को सहयोग प्रदान किया गया है। देश में जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य के संबंध में नीति, कार्यनीति तथा कार्ययोजना तैयार करने के लिए उपलब्ध तकनीकी संसाधनों का उपयोग करने हेतु प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों, अनुसंधानकर्त्ताओं, प्रशासकों और

नीति–निर्माताओं को शामिल करते हुए जलवायु परिवर्तन एवं स्वास्थ्य संबंधी एक राष्ट्रीय विशेषज्ञ समूह का गठन किया गया है।

- केंद्र द्वारा व्यापक पर्यावरण प्रदूषण सूचकांक (सीईपीआई) के लिए गंभीर रूप से प्रदूषित क्षेत्रों में स्वास्थ्य प्रभाव के संबंध में जानकारी देने/सृजित करने हेतु पद्धति विकसित करने के लिए निदेशक, एनसीडीसी की अध्यक्षता में गठित कोर समिति की बैठकों में समन्वय स्थापित किया जा रहा है।

16-12-8 tkuifnd jksxfoKku izHkkx

1- tu'kfä fodkl% राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) दिल्ली जानपदिक रोग विज्ञान और प्रशिक्षण हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन का सहयोगी केंद्र है। इन पाठ्यक्रमों में देश के विभिन्न राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से भागीदार आते हैं। इसके साथ–साथ, कुछ पड़ोसी देशों जैसे नेपाल, भूटान, श्रीलंका, थाइलैण्ड, तिमोरलेस्टे, मालदीव और इंडोनेशिया से भी कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी प्रशिक्षु भाग लेते हैं। एनसीडीसी द्वारा एमपीएच (एफई) पाठ्यक्रम के लिए जीजीएसआईपी विश्वविद्यालय के साथ और जानपदिक रोग विज्ञान में कार्मिकों के सृजन के लिए जीडीडी भारत के साथ सहयोग किया जा रहा है।

lfpr vof/k dk nkjku vk;ksftr çf'k{k.k ikBîØe%

- दक्षिण पश्चिम एशियाई क्षेत्र के पेरामेडिकल कर्मियों के लिए lapkjh jksxksa dk fuokj.k vkSj fu;=.k ij çknsf'kd çf'k{k.k dk;ZØe 28 अक्टूबर, से 24 नवंबर, 2014 में शुरू किया गया। प्रशिक्षण में दो देशों के 9 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- Hkkjr&egkekjh vklpuk lsok, ¼bZvkbZ,l½(भारत ईआईएस प्रशिक्षण का चौथा बैच 5 अक्तूबर, 2015 को शुरू किया गया। यह संयुक्त राज्य अमेरिका रोग नियंत्रण केंद्र, अटलांटा के सहयोग से भारत सरकार द्वारा की गई एक पहल है। [कुल 24 अधिकारी (तीसरे बैच में तेरह और चौथे बैच में ग्यारह) प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं]।

2. जानपदिक रोग विज्ञान प्रभाग के अधिकारियों ने ईआईएस अधिकारियों द्वारा किए गए प्रकोपों की जांच की निगरानी की। रोग के प्रकोपों की जांच और उनके नियंत्रण के लिए राज्य सरकार को तकनीकी सहयोग प्रदान करने का प्रावधान।

3. संस्थान की तीन शाखाओं, नामतः अलवर (राजस्थान), जगदलपुर (छत्तीसगढ़) और कुन्नूर (तमिलनाडु) को i'kklfud ,oa rduhdh lg;ksx miyC/k djkuk।

4. विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों को विभिनन घटकों/संकेतकों के नियंत्रण, कार्मिक सृजन तथा मूल्यांकन के लिए दिशा–निर्देश तैयार करने के रूप में rduhdh lg;ksx उपलब्ध कराना।

5. tkap fd, x, izdksi@Rofjr LokLF; vkdyu% इस अवधि के दौरान, जानपदिक रोग विज्ञान प्रभाग के अधिकारियों ने देश में प्रकोपों की जांच की और प्राधिकारियों को उनके नियंत्रण के उपाय सुझाए।

6. lhMh prkouh% राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र, दिल्ली ने संचारी रोग नियंत्रण और रोग नियंत्रण की सूचना के तीव्र प्रसार हेतु महत्वपूर्ण उपकरण पर एक बुलेटिन प्रकाशित किया है।

7. ,ulhMhlh U;wtyssVj% यह राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एनसीडीसी) का तिमाही प्रकाशन है। इस न्यूजलेटर का उद्देश्य है कि प्रकोपों पर जानकारी, एनसीडीसी में विभिन्न विभागों के कार्यक्रमों की जानकारी, तकनीकी और कार्यक्रम संबंधी समाचार उपलब्ध कराना है।

16-12-9 fpfdRlk dhVfoKku ,oa oSDVj çca/ku dsæ

चिकित्सा कीटविज्ञान एवं वेक्टर प्रबंधन केंद्र को, अनुसंधान करने, तकनीकी सहायता प्रदान करने और वेक्टर जनित रोगों और उनके नियंत्रण के क्षेत्र में प्रशिक्षित जनशक्ति विकसित करने के लिए, एक राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के रूप

में विकसित करने हेतु पुनर्गठित किया जा रहा है। यह केंद्र वेक्टर–जनित रोगों और उनके नियंत्रण के प्रकोप अन्वेषणों एवं कीट विज्ञान सर्विलांस पर विभिन्न राज्यों और संगठनों तकनीकी मार्गदर्शन, सहायता और सुझाव प्रदान करता है। प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैंः–

- एमपीएच, चिकित्सा – कवक विज्ञानी तथा पी.जी. डिप्लोमा की स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से स्वीकृति मिल गई है और इसे संबद्धता हेतु गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय को प्रस्तुत कर दिया गया है।

- बौहारा ग्राम, भीतर गांव पीएचसी, कानपुर देहात जिला, उत्तर प्रदेश में रहस्यमयी ज्वर के प्रकोप की जांच तथा पुन्हातना सीएचसी मेवात जिला, हरियाणा में मलेरिया के प्रकोप की जांच की गई थी।

- गोवा, अमृतसर, कांडला तथा विशाखापट्टनम में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों/बंदरगाहों में *एडीज* निगरानी भी की गई थी तथा अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य, एमओएचएफ एवं डब्ल्यूएफ को सूचना दी गई।

- {kerk fuek.k

  (1) केंद्रीय सरकार के दिल्ली स्थित अस्पताल, के सेनेटरी अधिकारी, सेनेटरी निरीक्षक तथा स्वास्थ्य निरीक्षक के लिए डेंगू निगरानी संबंधित प्रशिक्षण आयोजित किया गया है।

  (2) वेक्टर जनित रोगों से संबंधित कीट विज्ञान पहलुओं के संबंध में bvkb,l vf/kdkfj;k d fy, dhV foKkuh çf'k{k.k भी आयोजित किया गया था।

- çxfr jr vul/kku ifj;ktuk,% Þ dhV foKkuh fuxjkuh d fy, rFkk fnYyh e Mx d çdki d fy, 'kh?k prkouh ldrk dk irk yxku d fy, çkVkd,y r;kj djuk% कुल 252 स्थानों पर एडीज के पनपने की खोज की गई थी और फरवरी 2016 तक कुल 110 स्थानों को पॉजिटिव पाया गया था। मुख्य रूप से IykfLVd LVkj t] dyjk] lheV Vdk rFkk vkoj gM Vdk में मच्छर पनपने का पता लगाया गया। प्लास्टिक भंडारण पात्रों में अपरिपक्व का अधिकतम प्रजनन होता है।

16-12-10 eyfj;k foKku ,o leUo; çHkkx%

प्रभाग की व्यापक गतिविधियां

- प्रकोप अन्वेषणों हेतु तकनीकी सहायता प्रदान करना, प्रचलनात्मक अनुसंधान करना और देश में मलेरिया रोग व उसके नियंत्रण के क्षेत्र में प्रशिक्षित जनशक्ति विकसित करना;
- मलेरिया संक्रमण की प्रयोगशाला निदान हेतु राज्य सरकार को चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराना
- एनसीडीसी में उच्चाधिकारियों/प्रतिनिधिमंडलों के दौरों का समन्वय; और
- मेडिकल, नर्सिंग और होमियोपैथिक स्नातक–पूर्व और परास्नातक छात्रों के लघु अवधि के अभिमुखी/प्रशिक्षण दौरों का समन्वय।

1. कुल 1479 (1 अप्रैल, 2015 से 17 नवंबर, 2015 तक) रक्त स्लाइडों की जांच की गई थीं और 90 पॉजीटिव पाई गईं (पीवी–84 और पीएफ–05 और पीएम–01)। 848 स्लाइडें सरकारी अस्पतालों से और 599 निजी अस्पतालों से प्राप्त हुई थीं। 32 स्लाइडें एनसीआर क्षेत्र से प्राप्त हुई थीं (गाजियाबाद, सोनीपत, बागपत, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और फरीदाबाद)।
2. यह प्रभाग दौरे पर मेडिकल, नर्सिंग और होमियोपैथिक स्नातक–पूर्व और परास्नातक छात्रों को नियमित लघु अवधि अभिमुखी/प्रशिक्षण प्रदान करता है। विभिन्न संस्थानों अर्थात् अस्पतालों, पशुचिकित्सा आर्मी अधिकारी, आर्मी के एमबीबीएस छात्र, एएफएमसी के मेडिकल अधिकारी, बीएसएफ के वरिष्ठ मेडिकल अधिकारी, एमडी (सीएचए) एवं डीएचए के अंतिम

वर्ष के छात्र, विभिन्न नर्सिंग संस्थानों के नर्सिंग छात्र (स्नातक और स्नातकोत्तर), मेडिकल कॉलेजों के सामुदायिक चिकित्सा के स्नातककोत्तर छात्रों को मिलाकर कुल 205 छात्र हैं।

16-12-11 lkf[,kdh; ekuhVfjax rFkk eY;kadu ,dd%

I. tu LokLF; esa LukrdksRrj ¼,QbZ½ यह संस्थान द्विवर्षीय मास्टर इन पब्लिक हैल्थ (फील्ड जानपदिक रोग विज्ञानी) (एमपीएच(एफई)) पाठ्यक्रम संचालित करता है। वर्ष 2014 में कुल 6 (छः) तथा वर्ष 2015 में 4 (चार) विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। वर्ष 2015–17 के बैच के लिए तीन (3) छात्रों को नामांकित किया गया है।

II. çf'k{k.k जून–जुलाई, 2014 के दौरान एनसीडीसी के अधिकारियों / स्टॉफ तथा एनसीडीसी शाखा के अधिकारियों / स्टॉफ के लिए कंप्यूटर प्रशिक्षण सहित जैव सांख्यिकी संबंधी दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

16-13 dsaæh; vuqla/kku laLFkku ¼lhvkjvkbZ½] dlkSyh

केंद्रीय अनुसंधान संस्थान की स्थापना 1905 में की गई थी। यह भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय का अधीनस्थ कार्यालय है। वर्तमान में, यह संस्थान (i) वैक्सीन तथा सीरा के उत्पादन (ii) प्रतिरक्षण विज्ञान तथा टीकाविज्ञान के क्षेत्र मैं अनुसंधान तथा विकास, और (iii) शिक्षण एवं प्रशिक्षण दे रहा है।

16-13-1 pkyw o"kZ dk nkSjku fu"iknu

Ø-l-	Vhdk vkSj ,UVh lhje	LFkkfir {kerk ¼yk[k 'kh'kh e½	mRiknu	% mRikfnr	ekax	vkiwfrZ	% vkiwfrZ
1	डीपीटी	255	41,16,490	16.14%	75,00,000	52,00,000	69.33%
2	डीटी	200	–	–	–	–	
3	टीटी (यूआईपी) टीटी (नान यूआईपी)	300	35,19,190	11.73%	1,01,00,000 81,060	34,00,000 71,560	33.66% 88.28%
4	यलो फीवर टीका (सीआरआई के)	0.35	93,600	267%	52,965	41,700	78.73%
5	एआरएस	2.50 (लाख)	22.407	8.96%	53,375	18,500	34.66%
6	एएसवीएस (आईवाईओ)	3.00 (लाख)	1,519	5.06%	– 6,901	– 1,421	– 20.59%
7	डीएटीएस (आईवाईओ)	0.80 (लाख)	5,154	6.42%	– 8,165	– 4,240	– 51.92%
8	एनएचएस	0.004 (लाख)	–	–	225	10	4.44%
9	डीआर	2.75 (लाख)	14,250	5.09%	27,066	12,200	45.07%

16-13-2 pkyw o"kZ dh nkSjku miyfC/k;k¡

टी.टी. टीके के छः बैच बनाए गए हैं तथा डीपीटी टीके का न्यू सीजीएमपी सुविधा केंद्र में निर्माण किया जा रहा है।

16-14 jk"Vh; tfod lLFkku ¼,uvkbch½] uk,Mk

16-14-1 iLrkouk

राष्ट्रीय जैविक संस्थान (एनआईबी), जैविक और जैव चिकित्सीय उत्पादनों जिनमें एल्बूमिन सामान्य और विशिष्ट, एम्मूनोग्लोबिन, कोएगूलेशन कारक VIII, इंसूलिन और इसके एनालोगस, इरीथ्रोपोइटीन, ग्रेनुलोसाइट कॉलोनी स्टीमुलेटिंग फैक्टर (जीसीएसएफ) स्ट्रेप्टोकिनेस, इम्मूनोडायग्नोस्टिक किटें (एचआईवी एचसीवी, एचबीएस एजी), ब्लड ग्रुपिंग रिएजेन्टस और ग्लूकोज टेस्ट स्ट्रिप सम्मिलित हैं, का विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय फार्माकोमिया को अपनाते हुए अपनी विभिन्न अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं और जन्तु गृह में गुणवत्ता मूल्यांकन करता है। संस्थान ने 2014–15 के दौरान विभिन्न जैविकों के 159 किस्मों के 1978 बैचों का गुणवत्ता मूल्यांकन किया है।

हाई प्रोफाइल नोबेल औषधियां जैसे थिरेप्यूटिक मोनोक्लोनल एंटीबॉडीज जिनका उपयोग हेमाटोलोजिकल, इम्मूनोलोजिकल और ओंकोलोजिकल विकारों के लिए किया जाता है, के मूल्यांकन करने के लिए एक नई प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए कदम उठाए गए हैं। इस संबंध में रिटुक्सिमैब और हरसेप्टिन का मानकीकरण और वैधीकरण किया गया है। ग्लूकोज टेस्ट स्ट्रिप्स की जांच भी पूरी कर ली गई है।

सेल कल्चर रेबीज वैक्सीन (सीसीआरवी), एमएमआर वैक्सीन, लाइव एटेन्युएटिड मीजल्स वैक्सीन, रुबेला वैक्सीन और बीसीजी वैक्सीन जैसे वायरल वैक्सीनों का मानकीकरण एवं वैधीकरण पूरा कर लिया गया है। जेई वैक्सीन, एचपीवी, पोलीसेकराइड क्वाड्रिवेलेंट, टाइफाइड वी आई पोलीसेकराइड जैसे अन्य टीकों का मानकीकरण एवं वैधीकरण प्रक्रियाधीन है।

16-14-2 lLFkku dk 12 vfrfjä tfod vkj ck;kFkjI;fVdYk mRiknk vkfn dk fy, dæh; vk"k/k i;kx'kkyk ¼lhMh,y½ dk :i ei ?kkf"kr fd;k x;k gA

निरंतर अभ्यास के रूप में संस्थान आवश्यकता पड़ने पर स्वदेशी विनिर्माताओं को इंसुलिन के राष्ट्रीय संदर्भ मानक तथा एचआईवी, एचसीवी, एचबीएसएजी के संदर्भ सीरा पैनल की आपूर्ति कर रहा है। संस्थान ने राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला, ऑस्ट्रेलिया के साथ एचआईवी, एचबीएसएजी, एचसीवी तथा सिफिलिस के बाह्य गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम में सफलतापूर्वक हिस्सा लिया है। संस्थान, क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज (सीएमसी), वेल्लूर, भारत में ग्लूकोज परीक्षण के ईक्यूएएस में नियमित रूप से भाग ले रहा है। संस्थान द्वारा एचसीवी आरएनए जांच और कोएगुलेशन फैक्टर VIII के लिए यूरोपीय गुणवत्ता मेडिसिन निदेशालय, स्ट्रैट्सबर्ग, फ्रांस द्वारा किए गए क्षमता परीक्षण में भी सफलतापूर्वक भागदारी की गई है। जैविक संस्थानों का एनएबीएल प्रमाणन 61 तक पहुंच गया है इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा जैविक संस्थानों पर 27 मोनोग्राफ तैयार किए गए हैं और इसे भारतीय फर्माकोपिया, 2014 में शामिल किया गया है।

16-14-3 देश में रक्त और रक्त उत्पादों के प्रयोग के कारण होने वाली विपरीत औषधि प्रतिक्रिया (एडीआर) सूचित करने के लिए संस्थान द्वारा हीमो–विजिलेंस कार्यक्रम शुरू किया गया है। एनआईबी ने अब तक देश भर में 21 सतत आयुर्विज्ञान शिक्षा (सीएमई) का आयोजन किया गया है और 4200 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया गया है। इसके अलावा तीन हीमो–विजिलेंस समाचार पत्र प्रकाशित किए गए हैं। भारत अब अंतर्राष्ट्रीय हीमो–विजिलेंस नेटवर्क का सदस्य है।

निदेशक, एनआईबी की प्रत्यक्ष निगरानी में नकली और अवमानक गुणवत्ता की (एनएसक्यू) दवाइयों की व्याप्ति का सर्वेक्षण किया जा रहा है।

16-14-4- ctV

संस्थान को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सहायता अनुदान के रूप में निधियां उपलब्ध कराई जाती है। संस्थान का बजट अनुमान और संशोधित अनुमान निम्नवत है:

(करोड़ में)

o"k	ctV vuqeku	Lak'kkf/kr vuqeku	0;;
2014-15	31.00	31.00	30.93
2015-16	35.00	34.60	15.75*

** अक्तूबर, 2015 तक*

16-15 chlhth oSDlhu iz;ksx'kkyk] ÇxMh

16-15-1- iLrkouk

बीसीजी वैक्सीन प्रयोगशाला, गिंडी की स्थापना वर्ष 1948 में की गई थी। संस्थान की मुख्य गतिविधियां निम्नलिखित हैं:–

- वर्ष 1948 से बाल्यावस्था के क्षयरोग के नियंत्रण के लिए बीसीजी वैक्सीन (10 खुराक प्रति वायल) का उत्पादन करना और विस्तारित टीकाकरण कार्यक्रम (ईपीआई) के लिए इसकी आपूर्ति करना।
- वर्ष 1993 से कार्सिनोमा यूरिनरी ब्लाडर के कीमोथेरेपी में प्रयोग के लिए बीसीजी थेरेप्यूटिक (40 मिग्री) का उत्पादन।

16-15-2 chlhthoh,y dk dk;Z&fu"iknu ¼mRiknu] ekax vkSj vkiwfrZ½

Øe- Lk-	fooj.k	ek=k
1	संस्थापित क्षमता प्रतिवर्ष	400 लाख खुराक
2	विनिर्मित प्रमात्रा	शून्य
3	प्राप्त मांग की प्रमात्रा	9.00 लाख खुराक
4	की गई आपूर्ति की प्रमात्रा	9.00 लाख खुराक

16-15-3 egRoiw.kZ miyfC/k;k¡

- नई सुविधाएं पूरा होने के करीब है। सभी प्रमुख उपकरण और सभी जानोपयोगी सेवा ने परिचालन योग्यता स्तर को पूरा कर लिया है। परीक्षण बैचों को शीध्र आरंभ किया जाएगा।
- सीजीएमपी के अनुसार बीसीजी के टीके के नियमित उत्पादन के बाद नए सुविधा केन्द्र से बीसीजी टीके के परीक्षण बैच की मान्यता दी जायेगी।
- सीजीएमपी मानको/प्रलेखन/एसओपी पर बीसीजीवीएल स्टाफ को आंतरिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। प्रलेखन जैसा आवश्यक और सीजीएमपी अनुपालन कार्य किया जा रहा है।

16-16 ik'pj bULVhV~;wV vkWQ bafM;k ¼ihvkbZvkbZlh½] dqUuwj

16-16-1 iLrkouk

पाश्चर इंस्टीट्यूट आफ इंडिया, कुनूर (वीआईआईसी) ने 6 अप्रैल 1907 को पाश्चर इंस्टीट्यूट ऑफ सदर्न इंडिया के रूप में कार्य करना शुरू किया और संस्थान का नामकरण पाश्चर इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, (सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन सोसाइटी के रूप में पंजीकृत) के रूप में किया गया। 10 फरवरी, 1977 से स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त निकाय के रूप में कार्य करना आरंभ किया, संस्थान के मामले शासी निकाय द्वारा निपटाए जाते हैं।

16-16-2 orZeku xfrfof/k;k¡ %&

- यह संस्थान डीपीटी तथा टीशू कल्चर एंटी रेबीज (टीसीएआर) टीके का उत्पादन करता है।
- सीजीएमपी के अनुरूप डीपीसी वैक्सीन प्रयोगशाला की स्थापना प्रक्रिया में है।
- अकादमी कार्यक्रम जैसे पीएचडी सूक्ष्मजीव विज्ञान, जीव रसायन तथा जैव प्रौद्योगिकी (अंशकालिक व पूर्णकालिक) भरथिअर विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर से संबद्ध हैं।
- प्रयोगात्मक उद्देश्य जैसे डीपीटी समूह और टीसीएआर टीके की गुणवत्ता नियंत्रण हेतु चूहों और गिनी सुअरों का प्रजनन कराया जाता है।
- संस्थान के पास सामान्य लोगों की आवश्यकता पूर्ति के लिए रेबीज़ नैदानिक प्रयोगशाला और रेबीज़ रोधी उपचार केन्द्र है।

16-16-3 MhihVh Vhdk mRiknu gsrq xzhu QhYM eSU;qQSDpfjax th,eih dsUæ dk LFkkfir djus dk lzc/k esa fØ;kdyki

- मंत्रालय ने डीपीटी समूह के टीका निर्माण हेतु पीआईआईसी में ग्रीन फील्ड जीएमपी केन्द्र बनाने

के लिए प्रस्ताव रखा है। एचएलएल लाइफ केयर लिमिटेड, तिरुअनन्तपुरम 149.16 करोड़ रूपये के अनुमानित व्यय से परियोजना को संचालित कर रहा है।

- अपेक्षित मुख्य उपकरण अनुकूल हेतु विशेषताओ का अंतिम रूप दिया गया है। उपकरणों की खरीद हेतु तकनीकी निविदा मूल्याकन चल रहा है।

उपकरण प्रतिष्ठापन, वैधीकरण और प्रक्रिया मान्यकरण के पश्चात वार्षिक आधार पर 130 मिलियन खुराक (डीपीटी–60 एमआईडी, टीटी–55 एमआईडी, डीटी–15 एमआईडी) की आपूर्ति करेगा।

16-17 lhje foKku lLFkku] dkydkrk

16-17-1 iLrkouk

सीरम विज्ञान संस्थान, कोलकाता स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय का एक अधीनस्थ कार्यालय है।

bl lLFkku d mnn'; fuEufyf[kr g%&

- विभिन्न गुणवत्तापूर्ण नैदानिक री–एजेंटों, जैसे यौन रोग अनुसंधान प्रयोगशाला (वीडीआरएल) एंटीजन, प्रजाति विशिष्ट एंटीसीरम, एंटी–एच लेक्टिन आदि का उत्पादन;
- विभिन्न फॉरेंसिक विज्ञान प्रयोगशालाओं (एफएसएल) और क्षेत्री फॉरेंसिक विज्ञान प्रयोग्शालाओं (आरएफएसएल) से इस संस्थान को भेजे गए विभिन्न जैविक एजेंटों की प्रजातियों की उत्पत्ति के निर्धारण के लिए फॉरेंसिक सीरम विज्ञान और साथ ही, यदि प्रजातियों की उत्पत्ति मानव में पाई गई हो, तो उसका रक्त समूह सीरम विज्ञान। इस चिकित्सीय वैधानिक रिपोर्ट को न्यायालय में विशेषज्ञ की राय के रूप में स्वीकार किया जाता है;
- प्रसव–पूर्व मामलों से ए, बी, ओ रक्त समूह और आरएच टाइपिंग निर्धारित करने हेतु संदर्भ केंद्र;
- वी.डी. सीरम विज्ञान अनुभाग वीडीआरएल एंटीजन के आंतरिक गुणवत्ता नियंत्रण तथा एंटीजन उत्पादन (ए.पी) अनुभाग में उत्पादित वीडीआरएल एंटीजन के मानकीकरण का कार्य करता है।
- नाको के तहत पूर्वी प्रमंडल के लिए क्षेत्रीय एसटीडी संदर्भ प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है।
- सीरम विज्ञान तथा यौन–संचारित रोगों (एसटीडी) के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोगशाला तकनीशियनों को प्रशिक्षित करना और एमडी (एफएसएम) के स्नातकोत्तर छात्रों को फॉरेंसिक सीरम विज्ञान में प्रशिक्षण देना।
- डब्ल्यूएचओ और एनपीएसपी के तहत राष्ट्रीय पोलियो प्रयोगशाला द्वारा पूर्वी एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा बिहार एवं झारखंड के कुछ हिस्सों से आए एएफपी मामलों के मल नमूनों से पोलियो वायरस को पृथक करना।
- आईटीडी प्रयोगशाला द्वारा पीसीआर तकनीक का प्रयोग करते हुए पोलियो वायरस का इंट्राटाइपिक डिफरेंशिएशन।
- पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों तथा बिहार एवं झारखंड के कुछ हिस्सों से आए लोगों में खसरा रोग का पता लगाने के लिए राष्ट्रीय खसरा प्रयोग्शाला।

16-17-2 miyfC/k;k

- फॉरेंसिक सीरम विज्ञान अनुभाग में प्रजातियों की उत्पत्ति और समूह निर्धारण हेतु 2838 नमूनों की जांच की गई।
- वीडी सीरम विज्ञान अनुभाग में सिफिलिस के लिए 1447 रक्त नमूनों की जांच की गई।
- एंटीबॉटी उत्पादन अनुभाग में 3180 मिली. एंटी–सीरा का उत्पादन किया गया तथा 2615 मिली. की विभिन्न राज्य एवं केंद्रीय फॉरेंसिक विज्ञान प्रयोगशालाओं को आपूर्ति की गई।
- ीजीआरसी अनुभाग में 2600 मिली. एंटी एच लेक्टिन का उत्पादन किया गया और विभिन्न फॉरेंसिक प्रयोगशालाओं में उसकी आपूर्ति की गई।
- खसरा और रुबेला के लिए 1054 नमूने प्राप्त हुए और उनकी जांच की गई।

- वीडीआरएल एंटीजन उत्पादन इकाई में 920 मिली एंटीजन का उत्पादन किया गया और संपूर्ण भारत में विभिन्न अस्पतालों और एसटीडी क्लीनिकों को 1600 मिली एंटीजन की आपूर्ति की गई।
- एनपीवी और वीडीपीवी के लिए 8104 मल नमूनों की जांच की गई और पर्यावरणीय निगरानी हेतु 120 नमूनों की जांच की गई।
- कोलकाता के मेडिकल कॉलेजों के एसटीआई क्लीनिकों से एसटीआई के विभिन्न प्रकारों के निदान के लिए 8821 जांच की गईं।

16-18 vrjk"Vh; tul[;k foKku lLFkku] eEcb

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, (आईआईपीएस) मुम्बई की स्थापना सन् 1956 में की गई थी। दिनांक 19 अगस्त, 1985 को भारत सरकार द्वारा संस्थान को 'मानित विश्वविद्यालय' घोषित किया गया था।

16-18-1 f'k{k.k

वर्ष 2014–15 के दौरान संस्थान ने निम्नलिखित नियमित पाठ्यक्रम चलाएः (क) स्वास्थ्य प्रोत्साहन शिक्षा में डिप्लोमा (डीएचपीई), (ख) सामुदायिक स्वास्थ्य परिचर्या स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीसीएचसी) (ग) मास्टर ऑफ आर्ट्स/साईंस इन पापुलेशन स्टडीज (एमए/एमएससी), (घ) जैव–सांख्यिकी और जानपदिक रोग विज्ञान में एमएससी (ङ) जनसंख्या अध्ययन में स्नात्तकोतर (एमपीएस), (च) जनसंख्या अध्ययन में मास्टर ऑफ फिलॉसाफी (एमफिल), और (छ) जनसंख्या अध्ययन में डॉक्टर ऑफ फिलॉसाफी (पीएचडी)। उपर्युक्त पाठ्यक्रमों के अलावा, संस्थान दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से जनसंख्या अध्ययन में मास्टर (एम.पी.एस) तथा जनसंख्या अध्ययन में डिप्लोमा (डीपीएस) भी संचालित करता है।

वर्ष 2014–15 के दौरान 24 विद्यार्थियों को स्वास्थ्य प्रोत्साहन शिक्षा में डिप्लोमा प्रदान किए जाने के लिए योग्य घोषित किया गया, 3 विद्यार्थियों को सामुदायिक स्वास्थ्य में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के लिए योग पाया गया, जनसंख्या विज्ञान में कला/विज्ञान निष्णात में 32 विद्यार्थियों को योग्य पाया गया, 7 विद्यार्थियों को जैव सांख्यिकी और जानपदीक रोग विज्ञान में विज्ञान निष्णात के लिए योग पाया गया, जनसंख्या अध्ययन में मास्टर की डिग्री के लिए 38 विद्यार्थियों को योग्य माना गया, जनसंख्या अध्ययन में मास्टर ऑफ फिलासॉफी डिग्री के लिए 35 विद्यार्थियों को योग्य घोषित किया गया, 11 विद्यार्थी जनसंख्या अध्ययन में डाक्टर ऑफ फिलासफी प्रदान करने हेतु योग्य पाए गए, जनसंख्या अध्ययन में मास्टर की डिग्री (दूरस्थ शिक्षा) के लिए 17 विद्यार्थी योग्य घोषित किए गए और जनसंख्या अध्ययन में डिप्लोमा (दूरस्थ शिक्षा) की डिग्री के लिए 6 विद्यार्थी योग्य घोषित किए गए।

16-18-2 vul/kku vkj idk'ku

संस्थान ने अपने स्वयं के संसाधनों का प्रयोग करते हुए और बाहरी वित्त–पोषण से भी अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित किए। बाहरी वित्त–पोषित परियोजनाएं मुख्यतः संबंधित एजेंसियों के अनुरोध पर शुरू की जाती है। संस्थान पर पूरी हो चुकी और चल रही परियोजनाएं निम्नानुसार हैं–

d- lLFkku }kjk foŸk ikf"kr vul/kku ifj;ktuk,

- भारत में जनसंख्या परिदृश्यः दीर्घावधि परिप्रेक्ष्य
- भारत में कालाजार की व्याप्ति, कारण और परिणामः पूर्वी बिहार का एक अध्ययन
- महाराष्ट्र के अमरावती जिले में मृत्यु के कारणों का अनुमान लगाने के लिए वर्बल ओटॉप्सी का प्रयोग;
- औपनिवेशिक अवधि में मुंबई प्रेजिडेंसी हेतु जन्म–मृत्यु दरों का अनुमान
- भारत की घरेलू सुविधाओं तथा परिसंपत्तियों में परिवर्तनः जनगणना आधारित अध्ययन।
- भारत में बडे स्तर पर सर्वेक्षण में प्रयुक्त आंकड़ों के संग्रह के दो भिन्न तरीकों का तुलनात्मक अध्ययन – प्रश्नावली/पेपर–पेन और तकनीक आधारित सीएपीआई;
- महाराष्ट्र के अमरावती और नासिक प्रभागों में विस्तृत आहार सर्वेक्षण को पूरा करने की अनुवर्ती कार्रवाई करना

- भारत में जनसंख्या और विकास की एतिहासिक प्रवृत्तियां और पैटर्न; जिला स्तर विश्लेषण।

[k- ckgjh ,tfl;k }kjk foŸk ikf"kr vu|l/kku ifj;ktuk,|

- भारत में देशांतरीय वृद्धावस्था अध्ययन (एलएएसआई) मुख्य धारा (2014–19)
- वैश्विक वृद्धावस्था और वयस्क स्वास्थ्य अध्ययन (सेज) –भारत, वेव–2, 2014–16
- परिवार स्वास्थ्य और संपत्ति अध्ययन (एफएचडब्ल्यूएस)
- नीति–निर्माण में अनुसंधान साक्ष्य का प्रयोग करने के लिए क्षमता में वृद्धि
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–4
- भारत में अवांछित गर्भधारण और प्रेरित गर्भपात मामले (यूपीएआई)
- जनसंख्या परिवेश और बंदोबस्त (ईएनवीआईएस)
- गुजरात में व्यापक पोषण सर्वेक्षण
- महिलाओं के काम की गिनती

भारतीय जनसंख्या अध्ययन संघ (आईएएसपी) की व्यावसायीक पत्रिका का प्रबंधन आईआईपीएस द्वारा किया जाता है। इस दीर्घकालीक पत्रिका में जनांकिकी स्वास्थ्य और विशेष रूप से भारतीय जनांकिकी पर ध्यान केंद्रित करते हुए विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित लेख और पुस्तक समीक्षाएं प्रकाशित की जाती हैं।

16-18-3 iqLrdky;

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान के पुस्तकालय में लगभग 83,156 पुस्तकें, 15,959 सजिल्द आवधिक पत्रिकाएं, 16,767 पुनर्मुद्रित पुस्तकें और 600 श्रव्य–दृश्य सामग्री हैं और 300 से अधिक पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित किए जाते हैं।

इस पुस्तकालय में आजादी से पूर्व की अवधि से लेकर (1872 से 1941 तक भारत की जनगणना पीडीएफ फॉर्मेट में) वर्ष 2011 की नवीनतम जनगणना तक सभी जनगणना पुस्तिकाओं का विशेष संग्रह उपलब्ध है। पुस्तकालय द्वारा स्वास्थ्य और जनसंख्या विज्ञान से संबंधित ऑन–लाइन संग्रह के संबंध में जेएसटीओआर, साइंस डाइरेक्ट (सामाजिक विज्ञान संग्रह), एससीओपीयूएस, इंडिया स्टैट और अन्य प्रमुख प्रकाशकों जैसे अनेक ऑन–लाइन डाटा–वेस पर सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

आईआईपीएस पुस्तकालय में आईएनएफएलआईबीएनईटी (यूजीसी), डीईएलएनईटी सहित संस्थागत सदस्य होते हैं और संस्थान के लाभ के लिए अधिकतम सेवाओं का अन्वेषण किया जाता है।

16-18-4 ieq[k ?kVuk

30–31 अक्तूबर, 2014 के दौरान 'उत्तरी और दक्षिणी देशों में साहाय्य प्रदत्त प्रजनन प्रौद्योगिकीः मुद्दे, चुनौतियां एवं भावी दृष्टिकोण' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

16-19 egkRek xka/kh vk;qfoZKku laLFkku lsok xzke ¼,e th vkb,e ,l½] egkjk"Vª

महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (एमजीआईएमएस) अपने कस्तूरबा अस्पताल के साथ सार्वजनिक निजी साझेदारी का संभवतः बेहतरीन उदाहरण है जब निजी पार्टी सेवा के लिए समर्पित गैर–लाभार्जन संगठन है। एमजीआईएमएस भारत सरकार, महाराष्ट्र सरकार तथा कस्तूरबा स्वास्थ्य सोसाइटी की संयुक्त सहयोगी परियोजना है। इन तीनों का भाग क्रमशः 50:25:25 के अनुपात में है। अब यह संस्थान सभी आधुनिक सुविधाओं और अत्याधुनिक आईसीयू सहित सुसज्जित विभागों के साथ 972 बिस्तर वाले अस्पताल में विकसित हो गया है। संस्थान 100 पूर्व स्नातक छात्रों तथा 70 स्नातकोत्तर छात्रों को प्रवेश देता है।

16-19-1 jksxh ifjp;kZ

- दिनांक 16 दिसंबर, 2014 को कस्तूरबा अस्पताल ने रोगियों को सुविधा प्रदान करने हेतु कार्डियक कैथीटेराइजेशन प्रयोगशाला का निर्माण किया है। 5000 वर्गफुट कार्डिओलॉजी ब्लॉक बनाया गया है जिसकी छत पर कैथ लैब लगी हुई है। इसके अलावा, पेंडेंट, केन्द्रीय ऑक्सीजन, केन्द्रीय सक्शन, केन्द्रीय कार्डियक निगरानी प्रणाली, पेसमेकर, डिफिब्रील्लेटर

से सुसज्जित 10 बिस्तर वाला आईसीसीयू है तथा कैथ लैब में एचआईएस द्वारा निगरानी की जाने वाली रेडियोलॉजी इमेजिस को प्रदर्शित करने वाली प्रणाली भी जोड़ी गई है।

- बाल चिकित्सा विभाग आईएपी प्रत्यामित सीपीआर प्रशिक्षण केन्द्र बन गया हैः बाल चिकित्सा विभाग महाराष्ट्र मे भारतीय बाल चिकित्सा अकादमी द्वारा प्रत्यायित कार्डिओप्लमोनरी रिसुस्क्टेशन (सीपीआर) प्रशिक्षण केन्द्र शुरू करने वाला दूसरा केन्द्र बन गया है। यह केन्द्र तथा स्वास्थ्य परिचर्या व्यावसायियों और जनता को रिसुस्क्टेशन कौशल प्राप्त करने में मदद करेगा।
- लिनीयर एक्सेलेटर यूनिट रेडियोथेरेपी विभाग में आरंभ की गई है।
- एक नया ऑपरेशन थिएटर (ओटी) बनाया गया है जिसमें दस अत्याधुनिक ऑपरेशन थिएटर, गहन परिचर्या यूनिट और प्रत्येक में 10 बिस्तर वाली ऑपरेशन पूर्व मूल्यांकन यूनिट, दो रिकवरी कक्ष और एक मेडिकल स्टोर बनाए गए हैं।
- नेत्र रोग विज्ञान विभाग, कस्तूरबा अस्पताल, एमजीआईएमएस, सेवाग्राम निवारणात्मक, उपचारात्मक तथा पुनर्वास नेत्र परिचर्या प्रदान कर रहा है। यह विभाग प्रतिदिन नेत्र जांच शिविर आयोजित कर रहा है तथा 50 वर्ष से अधिक आयु वाली जनसंख्या को कवर करते हुए वर्धा जिले के 8 ब्लॉकों के सभी गांवों में घर–घर जाकर नेत्र जांच भी करता है। घर–घर में दृष्टिहीनता और ऑपरेशन योग्य मोतियाबिंद हेतु जांच की गई। गांव स्तर पर दृष्टिहीन रजिस्टर तैयार किया गया है। इस वर्ष 855 गांवों में घर पर डॉक्टरों द्वारा 52,432 ग्रामीणों की जांच की गई। 50 वर्ष के आयु वाले व्यक्तियों, जिनकी आंख में मोतियाबिंद के कारण दृष्टि तीक्ष्णता 6/60 है और जिन्हें मोतियाबिंद ऑपरेशन कराना आवश्यक है, को ऑपरेशन हेतु प्रेरित किया तथा निःशुल्क आने–जाने के लिए परिवहन सुविधा देकर कस्तूरबा अस्पताल सेवाग्राम लाया गया। सर्जीकल उपचार, दवाइयां, इन्ट्रा ओक्यूलर लैंस तथा चश्में सहित सभी सेवाएं निःशुल्क प्रदान की गईं। सभी जांच किए रोगियों और ऑपरेशन के अनुवर्ती के बाद डाटा रिकार्ड रखने के लिए कम्प्यूटरीकृत डाटा बैंक रखा जाता है।
- डॉ. सुशीला नय्यर आई बैंक नेत्र रोग विज्ञान कस्तूरबा अस्पताल में प्रचालित है जो नेत्र दान गतिविधियों का प्रचार–प्रसार करता है कार्निया दृष्टिहिनता से पीड़ित रोगियों के लिए तथा कार्निया प्रत्यारोपण हेतु सुविधाएं प्रदान करता है। वर्ष के दौरान, 40 आंखों को नेत्र बैंक में प्रोसेस्ड किया गया। इनमें से 22 नेत्रों को वर्धा जिले में दाताओं से एकत्र किया गया था और 18 नेत्रों को सरकारी अस्पताल चंद्रपुर एवं लायंस नेत्र बैंक चंद्रपुर से लाया गया था। दान किए गए 40 नेत्रों में से, प्रत्यारोपण के लिए 17 नेत्रों में कोर्निया को उपयुक्त पाया गया तथा 17 रोगियों को निशुल्क केराटोप्लास्टी (कोर्नियल प्रत्यारोपण) की सुविधा प्रदान की गई। दो स्वैच्छिक संगठनों के सदस्यों को नेत्र दान के लिए संक्षिप्त परामर्श तथा प्रेरणा देने के लिए प्रशिक्षित किया गया है।
- 100 fcLrjk okyk ekMy ekr` vkj f'k'k LokLF; ¼,e lh,p½ fox] जो 20 करोड़ रूपए के बजटीय प्रावधान के साथ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित विस्तृत प्रजनन, मातृ, नवजात और शिशु तथा किशोर स्वास्थ्य (आरएमएनसीएच+ए) के लिए प्रस्तावित किया गया था, निर्माण के अंतिम चरण में है। इस केन्द्र का उद्देश्य आरएमएनसीएच+ए के संपूर्ण परिप्रेक्ष्य को शामिल करते हुए गुणवत्तायुक्त मातृ और शिशु स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है। एमसीएच विंग में बाहय रोग विभाग 10 बिस्तरों वाली प्रसव इकाई, प्रसूति गहन चिकित्सा इकाई,

प्रसवपूर्व और प्रसव पश्चात वार्ड, ऑपरेशन थिएटर, बाल चिकित्सा वार्ड, नवजात आईसीयू (स्तर 1,2, और 3) बाल चिकित्सा आईसीयू, आउटबोर्न नर्सरी और कौशल प्रयोगशाला होगा। अक्टूबर, 2015 तक प्रसूति और स्त्री रोग तथा बाल चिकित्सा विभागों के नए भवन में स्थापित होने की संभावना है।

- Ckk>iu i;kx'kkyk

➢ दस युगलों में एक युगल के मामले में वर्षों प्रत्यन करने के बाद भी गर्भधारण नहीं होता जिसके पश्चात चिकित्सक आमतौर पर बांझपन निर्धारण की जांच की सिफारिश करते हैं। बांझपन का उपचार महंगा होता है और छोटे कस्बों में उपलब्ध नहीं होते। बांझपन उपचार को प्रत्येक चक्र में अत्यधिक लागत की आवश्यकता होती है और अधिकांश रोगियों को जांच और उपचार के लिए अपनी जेब से खर्च करना पड़ता है।

➢ अस्पताल के स्त्री रोग ओपीडी में स्थित बांझपन प्रयोगशाला का शुभारंभ जनवरी, 2015 में किया गया था। प्रयोगशाला में (क) शुक्राणु गणना और गतिशीलता की जांच करने के लिए शुक्राणु विश्लेषण; (ख) प्रजनन संबंधी 4 प्रमुख हारमोनः प्रोलेक्टिन, एलएच (ल्यूटीनाइजिंग हारमोन), एफएसएच (फालीकल स्टीम्यूलेटिंग हारमोन) और टीएसएच (थायराइड स्टीम्यूलेटिंग हारमोन); (ग) अल्ट्रासाउंड (फालिकलों को स्कैन करने के लिए) और (घ) यह सुनिश्चित करने के लिए कि गर्भाशय और नलियां सामान्य हैं अथवा नही के लिए हिस्टेरोसैल्पिगोंग्राम की सुलभता है। इन बुनियादी परीक्षणों से स्त्री रोग विशेषज्ञों को जांच करने में सुविधा मिलती है। शुक्राणुओं की कम गणना अथवा शुक्राणु की गतिशीलता में कमी के कारण बांझपन का उपचार अब सेवाग्राम में अंतर्गर्भाशयी गर्भाधान (इंट्रायूटरिन इनसेमिनेशन) आईयूआई एक जनन क्षमता उपचार जिसमें गर्भाधान को सुविधाजनक बनाने के लिए गर्भाशय में शुक्राणु को रखना होता है, के द्वारा किया जाता है।

- एमजीआईएमएस में डेंटल सर्जरी विभाग में दांतों के उपचार कराने वाले रोगी वहनीय मूल्य पर अत्याधुनिक सिरामिक क्राउन, ब्रिज के साथ–साथ जिरक्रोनिक क्राउन प्रत्यारोपण करवा सकते हैं। विभाग में आंशिक रूप से बिना दांतों वाले रोगियों के लिए पूरे मुंह का पुनः उपचार और चेहरे और जबड़ों में विसंगति को सुधारने के लिए फेस मास्क की भी सुविधा है।

- बहु–स्पेशिलिटी ओपीडी को चिकित्सा, सर्जिकल, हड्डी रोग, नेत्र रोग, कान नाक गला और स्त्री रोग की समस्याओं के रोगियों को स्वास्थ्य देखभाल की सुलभता प्रदान करने के लिए गांधी मेमोरियल लेप्रोसी फाउंडेशन के परिसर में आरंभ किया गया। केन्द्र में ऑटोएनालाईजर पर सभी जैव रसायन परीक्षण भी किए जाते हैं।

- एमजीआईएमएस ने स्नातक पूर्व और स्नातकोत्तर छात्रों के कक्षा, क्लीनिकल और सामुदायिक आधारित प्रशिक्षण को पूरा करने के लिए ई–लर्निंग प्लेटफार्म आरंभ किया है। इस पहल के संभावित उपयोग सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में, छात्रों के व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक विकास, ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी तैनाती के दौरान, चिकित्सकों की व्यावसायिक शिक्षा में विकासोन्मुख पाठ्यक्रमों, जन स्वास्थ्य प्रणाली में स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के विभिन्न संवर्गों की तैनाती में प्रशिक्षण के लिए विकासोन्मुख पाठ्यक्रम को विकसित कर लिया है तथा संकाय सदस्यों के प्रथम बैच का प्रशिक्षण पूरा किया गया। एमजीआईएमएस में सभी संकाय सदस्यों को 6 माह की अवधि में प्रशिक्षित करने की योजना थी।

- मासिक पत्रिका 'करियर्स 360' जो भारत के सबसे बड़ी उच्च शिक्षा और करियर परामर्श पोर्टल है तथा विश्व भर के लोकप्रिय अध्ययन स्थानों का विहंगम दृष्टि प्रदान करता है, ने छात्रों की गुणवत्ता, आउटपुट, प्रभाव और शिक्षण के आधार पर भारत के उत्तम मेडिकल कॉलेजों की सूची में महात्मा गांधी चिकित्सा विज्ञान संस्थान को 10वें स्थान पर रखा गया है।

16-19-2 vuqla/kku vkj if'k{k.k

- प्रयोगशाला सेवाओं के गुणवत्ता कार्य में सुधार के लिए रोग केन्द्र, महाराष्ट्र सरकार और भारत सरकार ने 'लैब्स फॉर लाइफ' नामक गैर–वित्तपोषित समर्थन परियोजना एमजीआईएमएस को स्वीकृत की गई।

- माइक्रोबॉयोलॉजी, सामुदायिक चिकित्सा, चिकित्सा और बाल रोग विभाग के लिए भी आईसीएमआर

कार्यबल अध्ययन, 'सरविलेंस ऑफ सेलेक्ट जूनेटिक डिसिस इन सेंट्रल इंडिया' भी स्वीकृत की गई थी।

- प्रसूति और स्त्री रोग विभाग ने 'एपीडेमिओलॉजिकल डिटरमिनेट्स ऑफ हाइपरटेंसिव डिसआर्डर ऑफ प्रेगनेंसी इन ए कोहर्ट ऑफ रूरल विमेन इन सेंट्रल इंडिया' शीर्षक से आईसीएमआर प्रायोजित परियोजना स्वीकृत किया है।
- डा. सुशील नायर जन स्वास्थ्य स्कूल को समुदाय आधारित मातृ नवजात और शिशु स्वास्थ्य के लिए उन्नत अनुसंधान केन्द्र के लिए स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (आईसीएमआर) द्वारा 4.31 करोड़ रूपए का वित्तपोषण स्वीकृत किया गया है।

16-19-3 lii"k.k

स्व–सहायता समूह ने केवल महिला सशक्तिकरण किंतु समुदाय के समग्र विकास के लिए भी अत्यंत प्रभावी उपकरण है। वर्तमान में समुदायिक स्वास्थ्य विभाग ने अपने फील्ड अभ्यास क्षेत्र के सभी गांवों में प्रति गांव 3–4 एसएचजी का गठन कर लिया है। विभाग एसएचजी को उनके प्राथमिक वित्तीय कार्य (वित्त प्लस) में स्वास्थ्य कार्य से संबंधित एजेंडा को शामिल करने के लिए सहायता प्रदान करता है जिससे महिलाएं स्वास्थ्य प्राथमिकताओं का निर्धारण कर सकें और अपने गांवों में स्वास्थ्य देखभाल प्रदानगी में सक्रिय भूमिका निभा सके। 31 मार्च, 2015 को संस्थान द्वारा अपनाए गए गांवों में कुल 276 स्व–सहायता समूह कार्य कर रहे हैं। किसान विकास मंच (कृषक क्लब) का उपयोग भी पुरूषों को गांव के स्तर पर स्वास्थ्य गतिविधियों में शामिल करने के लिए किया जा रहा है। 31 मार्च, 2015 को संस्थान के अपनाए गए गांवों में कुल 12 किसान विकास मंच कार्य कर रहे हैं।

समुदाय चिकित्सा विभाग ने विभिन्न गांवों में स्कूल नहीं जाने वाली किशोरियों के समूह बनाने के लिए पहल की है और किशोरी पंचायतों का गठन कर रहे हैं। इन समूहों के माध्यम से इन सभी गांवों में किशोर से किशोर को शिक्षा कार्यक्रम लिया गया है। इन समूहों को किशोर स्वास्थ्य, बाल उत्तरजीविता, पर्यावरण संबंधी स्वास्थ्य, पारिवारिक जीवन से संबंधित शिक्षा, आरटीआई/एसटीडी, एचआईवी/एड्स आदि मामलों की ओर उन्मुख किया गया है। इसके बदले में ये किशोरियां अपने गांवों में अपने साथियों और युवा किशोरियों को प्रशिक्षित करेंगी।

16-19-4 xkeh.k LFkkiu ;ktuk

गांवों में सामना की जा रही स्वास्थ्य समस्याओं तथा गांवों की विशेष आवश्यकताओं से छात्रों को पूरी तरह से अवगत कराने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में स्नातक छात्रों के स्थानन के लिए वर्ष 1992 में एक कार्य कार्यक्रम बनाने वाला एमजीआईएमएस पहला संस्थान था। इस कार्यक्रम के तहत, यदि स्नातक एमजीआईएमएस में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम करना चाहते हैं तो उन्हें आवश्यक रूप से दो वर्ष की अवधि के लिए गांवों में सेवा करनी होगी। यह स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त करने की पात्रता मापदंड है। तथापि ग्रामीण क्षेत्र में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए पात्र हो जाते हैं, बशर्ते वे स्नातकोत्तर पूर्ण होने के बाद शेष अवधि की सेवा को पूरा करने का अनुबंध करना होगा।

ग्रामीण स्थानन योजना इतनी लोकप्रिय हो गयी है कि लगभग सभी छात्र इसका चयन कर रहे हैं और अब तक 19 बैच ने अपने ग्रामीण सेवा के 2 वर्ष पूरा कर चुके हैं तथा विभिन्न विशेषज्ञताओं में स्नातकोत्तर अध्ययन ले लिया है।

16-20 dsaæh; LokLF; vklpuk C;jks ¼lhch,pvkbZ½

16-20-1 iLrkouk

केंद्रीय स्वास्थ्य आसूचना ब्यूरो, जिसकी स्थापना 1961 में की गई थी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधीनस्थ स्वास्थ्य आसूचना विंग है, जिसका उद्देश्य ^^lii.kZ ns'k esa ,d l–< LokLF; çca/ku lpuk ç.kkyh^^ विकसित करना है। सीबीएचआई के तीन प्रभाग हैं अर्थात (I) नीति, प्रशिक्षण एवं समन्वयन, (II) सूचना एवं मूल्यांकन; तथा (III) प्रशासन। इसमें बेंगलुरू, भोपाल, भुवनेश्वर, जयपुर, लखनऊ और पटना में छह स्वास्थ्य सूचना क्षेत्र सर्वेक्षण इकाइयां (एफएसयू) और मोहाली, पंजाब में सीबीएचआई का क्षेत्रीय स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण केन्द्र (आरएचएसटीसी) भी शामिल हैं।

lhch,pvkbZ dk fuEufyf[kr mís'; gS &

- साक्ष्य के आधार पर नीति निर्धारण करने, योजना तैयार करने तथा अनुसंधान क्रियाकलाप संचालित करने हेतु देश में स्वास्थ्य क्षेत्र से संबंधित आंकड़ों का संग्रह, विश्लेषण एवं प्रचार–प्रसार करना।
- स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए अभिनव कार्य–व्यवहार की पहचान करके उसका प्रचार–प्रसार करना।
- भारत में सरकारी एवं निजी दोनों चिकित्सा संस्थानों में चिकित्सा अभिलेखों के वैज्ञानिक ढंग से रखरखाव के लिए मानव संसाधन विकसित करना।
- भारत में स्वास्थ्य सूचना प्रणाली के प्रभावकारी कार्यान्वयन हेतु आवश्यकता आधारित प्रचालनात्मक अनुसंधान संचालित करना और फैमिली ऑफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन का उपयोग करना।
- भारत में फेमिली ऑफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन के कार्यान्वयन हेतु स्वास्थ्य क्षेत्र में मास्टर प्रशिक्षकों को सुग्राही बनाना और उनका एक पूल सृजित करना।
- जानकारी उपलब्ध कराने तथा कौशल का विकास करने हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग करना।
- स्वास्थ्य संबंधी सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों के लिए संकेतकों का संग्रह एवं उनका प्रचार–प्रसार करना।
- भारत तथा दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र (एसईएआर) के देशों में डब्ल्यूएचओ एफआईसी के लिए सहयोग केंद्र के रूप में कार्य करना।

16-20-2 vkdMk laxg

- सीबीएचआई अपने वार्षिक प्रकाशन ''राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल'' जिसमें 6 प्रमुख संकेतकों, अर्थात जनसांख्यिकीय, सामाजिक–आर्थिक, स्वास्थ्य स्तर, स्वास्थ्य वित्त, स्वास्थ्य अवसंरचना एवं मानव संसाधन के तहत अधिकांश स्वास्थ्य सूचना का प्रमुखता से उल्लेख किया जाता है, के माध्यम से विभिन्न संचारी एवं गैर–संचारी रोगों, स्वास्थ्य क्षेत्र में मानव संसाधन एवं स्वास्थ्य अवसंरचना के संबंध में स्वास्थ्य सांख्यिकी के रख–रखाव एवं प्रचार–प्रसार के लिए विभिन्न सरकारी संगठनों/विभागों से प्राथमिक एवं द्वितीयक स्तर के आंकड़ों का संग्रह करता है।
- सीबीएचआई, स्वास्थ्य क्षेत्र नीतिगत सुधार विकल्प डाटाबेस (एचएस–पीआरओडी) [www-hsprodindia-nic-in], के लिए सुधार के प्रयास के संबंध में सूचना एकत्र करता है। यह वेब समर्थित डाटाबेस है जो दस्तावेजीकरण करता है और स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन में उत्तम कार्य व्यवहार, खोजों संबंधी सूचना की भागीदारी के लिए मंच तैयार करता है तथा इसकी कमियों को भी उजागर करता है जो राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- क्षमता निर्माण तथा मानव संसाधनों के विकास हेतु स्वास्थ्य क्षेत्र में सीबीएचआई विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से निजी स्वास्थ्य संस्थानों के साथ–साथ विभिन्न चिकित्सा रिकार्ड विभाग तथा केंद्रीय/राज्य सरकारों के स्वास्थ्य विभागों में ईएसआई, रक्षा तथा रेलवे में अधिकारियों तथा कार्यरत स्टाफ हेतु तैनाती के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। निम्नलिखित सेवा–कालीन प्रशिक्षण चलाए जा रहे हैं

Ø-l	çf'k{k.k dk uke	cSp	vof/k	çf'k{k.k dsUæ
1	चिकित्सा रिकार्ड अधिकारी	2 (प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र पर)	1 वर्ष	1. सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में चिकित्सा रिकार्ड विभाग एवं प्रशिक्षण केन्द्र 2. जिपमेर, पुदुच्चेरी
2	चिकित्सा रिकार्ड तकनीशियन	4(प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र पर)	6 माह	1. सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में चिकित्सा रिकार्ड विभाग एवं प्रशिक्षण केन्द्र 2. जिपमेर, पुदुच्चेरी

- सीबीएचआई द्वारा राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों को इन्टर्नशिप तथा स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यक्रम प्रदान किया जाता है।
- सीबीएचआई अपने वार्षिक प्रकाशन राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल में सभी एमडीजी की एक संक्षिप्त सूची

और स्वास्थ्य संबंधी एमडीजी अर्थात लक्ष्य–4 (बाल मृत्यु को कम करना) तथा लक्ष्य–5 (मातृ स्वास्थ्य में सुधार) और लक्ष्य–6 (एचआईवी/एड्स मलेरिया एवं अन्य रोगों की रोकथाम) की व्यापक सूची प्रकाशित करता है।

- भारत में अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीडी–10 तथा आईसीएफ) के परिवार के संबंध में डब्ल्यूएचओ सहयोगी केंद्र के रूप में इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं:

  - ➢ रोगों और संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं का अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकी वर्गीकरण (आईसीडी), कार्यकरण, निःशक्तता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएफ) और अन्य व्युत्पन्न और संबंधित वर्गीकरणों सहित डब्ल्यूएचओ फैमिली आफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन (डब्ल्यूएचओ–एफआईसी) के विकास और उपायों को बढ़ावा देना और बहु–पक्षों के समान भाषा के रूप में अनुभव के प्रकाश में उनके कार्यान्वयन और सुधार में सहयोग करना।

    - ✓ निम्नलिखित द्वारा देशों के भीतर और दो देशों के बीच तुलना करने के लिए निरंतरता एवं विश्वसनीयता के आधार पर स्वास्थ्य स्तर, उपाय एवं परिणाम की माप को सुविधाजनक बनाने के लिए डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के उपयोग हेतु पद्धतियां तैयार करने में योगदान करना:

    - ✓ डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के सदस्य घटकों के विकास, परीक्षण, कार्यान्यवन, उपयोग, सुधार, अद्यतन करना और संशोधन में डब्ल्यूएचओ को सहयोग प्रदान करने हेतु गठित विभिन्न समितियों एवं कार्य समूहों के कार्य में सहयोग प्रदान करना।

    - ✓ उपयोग, प्रशिक्षण एवं आंकड़ा संग्रह के मानकों तथा अनुप्रयोग नियमों के संबंध में डब्ल्यूएचओ–एफआईसी वर्गीकरणों की गुणवत्ता आश्वासन प्रक्रियाओं में भागीदारी करना।

  - ➢ निम्न के द्वारा डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के वर्तमान और संभावित प्रयोक्ताओं के साथ संपर्क स्थापित करना और संदर्भ केंद्र के रूप में कार्य करना।

    - ✓ डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के सदस्य घटकों और अन्य संबंधित सामग्री तैयार करने में डब्ल्यूएचओ मुख्यालय और क्षेत्रीय कार्यालयों की सहायता करना।

    - ✓ डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के सदस्य घटकों के अद्यतनीकरण और संशोधन में सक्रियता में सहयोग करना।

    - ✓ डब्ल्यूएचओ–एफआईसी तथा भारत व एसईएआरओ क्षेत्र में व्युत्पन्न आंकड़ों के मौजूदा व संभावित प्रयोक्ताओं को सहयोग देना। एफआईसी के कार्यान्वयन की स्थिति जानने के लिए एशिया प्रशांत क्षेत्र के अन्य देशों के साथ लिंकेज स्थापित किया जाएगा।

  - ➢ डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के कम से कम एक संबंधित और / या उससे निर्गत क्षेत्र में कार्य: विशेषज्ञता आधारित अनुकूलन, प्राथमिक परिचर्या अनुकूलन, उपाय / प्रक्रियाएं, आघात वर्गीकरण (आईसीईईसीआई)।

16-21 dæh; LokLF; f'k{kk C;jk ¼lh,pbch½

केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वास्थ्य शिक्षा हेतु अग्रणी संस्थान है, इसकी स्थापना वर्ष 1956 में हुई थी। सीएचईबी की धारणा है, स्वास्थ्य परिचर्या प्रदानगी प्रणाली के अनिवार्य अंग के रूप में स्वास्थ्य सेवा को संस्थागत बनाना। सीएचईबी का मत है देश में स्वास्थ्य शिक्षा संवर्धन हेतु योजना तथा कार्यक्रम तैयार करना; स्वास्थ्य शिक्षा क्षेत्र में व्यवहार्य अनुसंधान आयोजित करना; स्वास्थ्य व्यावसायिकों तथा विद्यालय अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करना; तथा स्वास्थ्य जागरुकता निर्माण हेतु विभिन्न प्रकार के मुद्रित, इलेक्ट्रोनिक तथा संचार मीडिया सामग्री का उत्पादन करना।

16-21-1 ie[k dk;dyki

Ikn'kuh vk;ktu@ifrHkkfxrk

- संसद सौध में दिनांक 30 नवंबर से 4 दिसंबर, 2015 तक सांसदों के लिए “स्वास्थ्य जागरुकता सप्ताह” नामक प्रदर्शनी लगाई गई।

- 14 से 27 नवम्बर, 2015 तक भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला–2015 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के स्वास्थ्य पवेलियन में आम लोगों के लिए स्वास्थ्य जीवन शैली और संबद्ध स्वास्थ्य मामलों पर जागरूकता कार्यक्रम।
- दिनांक 24 अप्रैल, 2015 को आर्मी बेस अस्पताल में "स्वस्थ जीवन शैली" पर प्रदर्शनी लगाई गई।
- डब्ल्यूएचओ, एनसीडीसी और एफएसएसएआई के साथ होटल ताज पैलेस, नई दिल्ली में "खेत से थाली तक–भोजन सुरक्षित बनाएं" विषय पर दिनांक 1 अप्रैल, 2015 को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' पर प्रदर्शनी आयोजित की तथा उसमें भाग लिया।
- अंग एवं उत्तक प्रत्यारोपण पर लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के संकाय, छात्रों तथा सरकारी व निजी विद्यालयों से आए 600 छात्रों के बीच जागरूकता लाई गई जो 29 जुलाई, 2015 को एलएचएमसी के "शताब्दी समारोह" का भाग थे।
- सांसदों के बीच स्वास्थ्य सूचना के प्रचार–प्रसार हेतु स्वस्थ जीवन शैली पुस्तिका का मुद्रण किया गया।
- भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2015 में समान्य जनता के बीच प्रचार हेतु 'स्वस्थ जीवन शैली' नामक पुस्तिका का मुद्रण किया गया।
- भारत के विभिन्न मेडिकल/नर्सिंग कॉलेज/एएनएम प्रशिक्षण केन्द्रों और ग्रामीण स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण प्रशिक्षण केन्द्रों से भाग लेने वाले 528 छात्रों के लिए 17 अभिमुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इनमें उन्हें स्वास्थ्य शिक्षा तथा स्वास्थ्य संवर्धन पर जागरूक किया गया। उन्हें विभिन्न स्वास्थ्य शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से स्वास्थ्य जागरूकता निर्माण हेतु सीएचईबी द्वारा किए गए परिचालन, उपलब्धियों तथा प्रयासों के विषय में भी बताया गया।
- सीएचईबी ने डीजीएचएस, एनसीडीसी, मौलाना आजाद मैडिकल कॉलेज के विशेषज्ञों के साथ फलोरोसिस तथा अर्सेनिक विषाक्ता का निवारण व नियंत्रण के लिए आईईसी संदेश तैयार किए तथा उन्हें अंतिम रुप दिया।

16-22 {k=h; dk;kZy;] LokLF; ,oa ifjokj dY;k.k] ubZ fnYyh

- क्षेत्रीय कार्यालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण की स्थापना वर्ष 1978 में केंद्र प्रायोजित स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रमों से संबंधित मामलों के पर्यवेक्षण, निगरानी और समन्वयन के लिए क्षेत्रीय समन्वय कार्यालयों (आरसीओ) तथा क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यालयों (आरएचओ) के विलयन के माध्यम से हुई थी। वर्तमान में विभिन्न राज्य राजधानियों में स्थित स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक की अध्यक्षता में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधीन 19 क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यालय कार्यरत है। आरओएच एंड एफडब्ल्यू की अनिवार्य इकाइयां हैं (i) मलेरिया ऑपरेशन क्षेत्रीय अनुसंधान योजना (एमओएफआरएस) (ii) कीट विज्ञान अनुभाग, (iii) वीबीडीसी अनुभाग (iv) स्वास्थ्य सूचना क्षेत्रीय इकाई (एचआईएफयू) तथा (v) क्षेत्रीय मूल्यांकन दल (आरईटी)।

16-22-1 Hkfedk vkj tckonsgh

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के कार्यान्वयन हेतु केन्द्र राज्य गतिविधियों का समन्वयन।
- कार्यालय परिसर में मलेरिया कार्य और मलेरिया युक्त क्लिनिक की गुणवत्ता की जांच तथा एनवीबीडीसीपी से संबंधित तकनीकी रिपोर्टों की समीक्षा/विश्लेषण।
- परिवार कल्याण सेवा के लाभार्थियों और क्षेत्रीय दौरों के दौरान बनाए गए अन्य रजिस्टरों से संबंधित रिकार्ड की जांच करना तथा परिवार कल्याण कार्यक्रम गतिविधियों से संबंधित फीडबैक देना।
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में प्रयोगशाला तकनीशियनों, मेडिकल व परामेडिकल स्टाफ के साथ अन्य श्रेणी के स्टाफ के लिए अभिमुखी प्रशिक्षण आयोजित करना।

- क्षेत्रीय मूल्यांकन दल (आरईटी), स्वास्थ्य सूचना क्षेत्रीय इकाई (एचआईएफयू) तथा मलेरिया अभियान क्षेत्रीय अनुसंधान योजना (एमओएफआरएस) के दायित्वों को विशिष्ट जबावदेही।

16-22-2 Rkduhdh xfrfof/k;k dk fu"iknu

वर्ष 2015–16 में आरओएचएफडब्ल्यू द्वारा की गई गतिविधियां निम्नलिखित है:

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के कार्यान्वयन की समीक्षा हेतु राज्य कार्यक्रम कार्यालयों के साथ 257 समीक्षा बैठकें आयोजित की गईं।
- जिला और उप–जिला स्तरीय स्वास्थ्य केन्द्रों के क्षेत्रीय दौरों के माध्यम से राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की समीक्षा की थी।
- 143 राष्ट्रीय व 379 राज्य स्तरिय बैठकों में आरओएचएफडब्ल्यू से प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- 74 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए थे जिनमें मलेरिया माइक्रोस्कोपी, आईसीडी–10 व अन्य गतिविधियों में 2054 प्रतिभागी प्रशिक्षित किए गए थे।
- एमओएफआरएस, आरईटी तथा सीबीएचआई दलों के माध्यम से 4 औषधि रोधी अध्ययन, 61 कीट–विज्ञानी सर्वेक्षण और 22 मूल्यांकन अध्ययन किए गए थे।
- मलेरिया के 372036 परिधीय धब्बों की जांच की गयी थी। जिसमें से 2092 स्लाइडस विसंगति वाली पाई गई। संबद्ध स्वास्थ्य परिचर्या केन्द्र को फीडबैक दिया गया था और सुधारात्मक कार्रवाई की गई थी।

16-22-3 rduhdh xfrfof/k;k

xfrfof/k;k		dy
समीक्षा बैठकें	257	
राष्ट्रीय स्तर की बैठकें	143	
राज्य स्तर की बैठकें	379	
प्रशिक्षण कार्यक्रम • मलेरिया माइक्रोस्कोपी में • सीबीएचआई संबंधित प्रशिक्षण • अन्य प्रशिक्षण	20 21 33	74
प्रतिभागी • मलेरिया माइक्रोस्कोपी में • सीबीएचआई संबंधित प्रशिक्षण • अन्य प्रशिक्षण	391 419 1244	2054
औषध रोधी अध्ययन	4	
कीट विज्ञानी सर्वेक्षण	61	
मूल्यांकन अध्ययन	22	
परिधीय धब्बा जांच	372036	
विसंगति	2092	

16-23 jk"Vªh; efMdy ykbcsjh ¼,u,e,y½] ubZ fnYyh

16-23-1 ifjp;

राष्ट्रीय मेडिकल लाइब्रेरी (एनएमएल) देश में स्वास्थ्य विज्ञान के प्रोफेशनलों को अकादमिक, अनुसंधान एवं क्लिनिकल कार्य में सहयोग देने के लिए मूल्यवान पुस्तकालय सूचना सेवाएं प्रदान करती है। यह देश की स्वास्थ्य देखभाल सूचना सुपुर्दगी प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

यह पुस्तकालय मार्च से अक्टूबर तक प्रातः 9.30 से सांय 08.00 बजे तक और नवंबर से फरवरी (शीतकाल) तक प्रात 9.30 से सांय 07.00 तक वर्ष के 359 दिन खुली रहती है। प्रतिदिन 200 से अधिक उपभोगकर्ता संदर्भ एवं परामर्श, अपेक्षित लेखों की फोटोकॉपियां प्राप्त करने तथा सूचना पुनःप्राप्ति सेवा के लिए पुस्तकालय में आते हैं।

16-23-2 'kgjh lsok,a

नेशनल मेडिकल लाइब्रेरी को उसके पुस्तकों, सामयिक पत्रों, रिपोर्टों, विशेष निबंध प्रकाशनों और पत्रिकाओं के आबद्ध खंडों का समृद्ध संग्रह के लिए जाना जाता है। लाइब्रेरी ने 1520 मुद्रित चिकित्सा पत्रिकाओं की सदस्यता ली और 90 पत्रिकाएं मुफ्त प्राप्त हुई। लाइब्रेरी ने 48.58 लाख रू. की 616 पुस्तकें और 167 सामायिक पत्र खरीदे और 37 पुस्तकें मुफ्त मिली।

लाइब्रेरी में 1.50 लाख से अधिक पुस्तकों और 6 लाख से अधिक आबद्ध पत्रिकाओं का संग्रह है। वर्ष के दौरान इसमें 29630 आगंतुक आए।

16-23-3 nLrkost fMyhoj i.kkyh

सरकारी और निजी फोटोकॉपी काउंटरों के माध्यम से डाक, ई–मेल और फैक्स के जरिये दिल्ली के बाहर से लेखों की फोटोकॉपी के लिए बड़ी संख्या में अनुरोध प्राप्त होते हैं। देशभर के चिकित्सा अनुसंधान अध्येताओं को वार्षिक रूप से लगभग 60,000 प्रतियां प्रदान की जाती है। इसमें दिल्ली से बाहर के राज्यों को लेखों की डिलीवरी के लिए डाक खर्च पर शुल्क नहीं लिया जाता।

16-23-4 vkuykbu ifCyd ,Dlsl dEI;wVj dSVykx ¼vksid½

पुस्तकालय के सर्वर और कंप्यूटर नेटवर्क से जुड़े हुए हैं जो एक समेकित पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर पैकेज–लिबसिस के साथ एक लोकल एरिया नेटवर्क बनाते हैं। अब, पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं द्वारा ओपेक कंप्यूटर खोज के जरिए लगभग 42,500 पुस्तकों का रिकार्ड उपलब्ध है। इंटरनेट सेवाएं, जिनमें पत्रिकाओं के पूर्व पाठ शामिल हैं, प्रदान करने के लिए 2 एमबीपीएक की लीज्ड लाइनें और ब्रॉडबैंड इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है।

16-23-5 bZvkj,ebZMh&Hkkjr bZ&if=dk la?k

एनएमएल ने देशभर में चिकित्सा अध्येताओं को प्रतिमाह चिकित्सा पत्रिकाओं से लिए गए लेखों की 8000 (8000 x 5 = 40,000 पृष्ठ) से अधिक प्रतिलिपियों का प्रसार किया। इस प्रणाली में बड़े आकार की फोटोकॉपी मशीने+श्रमशक्ति+चिकित्सा पत्रिकाओं के पुराने संस्करणों का रखरखाव, उन्हें अलमारियों में रखना तथा पत्रिकाओं के लगातार उपयोग के कारण बार–बार जिल्द चढाना।

समस्या का सामना करने के लिए, एनएमएल ने 2.5 करोड रू. खर्च करते हुए 39 संगठनों (28 आईसीएमआर संस्थान+10 डीजीएचएस संस्थान/मेडिकल कॉलेज+एम्स) हेतु जनवरी 2008 से ईआरएमईडी (चिकित्सा में इलैक्ट्रॉनिक संसाधन) इलैक्ट्रॉनिक पत्रिका संघ की शुरूआत की है।

वर्ष 2015 में एनएमएल ने कलेंडर वर्ष 2016 के लिए 70 सदस्यों हेतु ईआरएमईडी संघ के लिए 15 करोड रू. (लगभग) हेतु 249 ई–पत्रिकाओं की सदस्यता का प्रस्ताव रखा। सदस्यता को दो हिस्सों स्तर । और स्तर ।। में बांट दिया है ताकि संघ को लागत प्रभावी बनाया जा सके। (संस्थान के आकार और अंतिम उपभोक्ताओं की संख्या पर निर्भर)

16-23-6 'kk[kk iqLrdky;

एनएमएल पढ़ने के उद्देश्य से स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधिकारियों एवं स्टाफ की पुस्तकालय और सूचना संबंधी जरूरतों को पूरा करने हेतु निर्माण भवन में एन एम एल का शाखा पुस्तकालय चला रहा है।

16-24 xzkeh.k LokLF; izf'k{k.k dsaæ] utQx<] ubZ fnYyh

ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र, नजफगढ, नई दिल्ली की स्थापना 1937 में की गई थी। ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने के लिए अभिमुखी प्रशिक्षण केन्द्र के कार्यों को करने के लिए इसे 1954 में पुनर्गठित किया गया था। इस केन्द्र को 1960 में ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र, नजफगढ़ के रूप में पुर्नगठित किया गया था।

16-24-1 izf'k{k.k

- रोम योजना के तहत मेडिकल इंटर्न को प्रशिक्षण इस केंद्र से लगभग 350 अवैतनिक चिकित्सा इंटर्न की ग्रामीण तैनाती हुई है।
- प्रति शैक्षणिक सत्र में 40 छात्रों के वार्षिक प्रवेश के साथ एएनएम 10+2 (व्यावसायिक) छात्रों को प्रशिक्षण।
- बीएससी/ एमएससी/ जीएनएम छात्रों को सामदुायिक स्वास्थ्य नर्सिंग प्रशिक्षण अवधि के दौरान लगभग 1000 प्रशिक्षु प्रशिक्षित किए गए थे।

16-24-2 LokLF; lsok inkuxh

नजफगढ़ क्षेत्र के 64 गांवों और 9 कस्बों के लोगों का निम्न सामाजिक–आर्थिक समूह को पीएचसी नजफगढ़ में 24x7 आपातकालीन सेवाओं सहित तीन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों और 16 उप–केन्द्रों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या, निवारणात्मक, संवर्धनात्मक और उपचारात्मक सेवाएं दी जा रही है। 30.9.2015 तक 209360 रोगियों को ओपीडी सेवाएं प्रदान की थीं। इसी अवधि में 42 संस्थागत प्रसव कराए गए थे।

16-24-3 {k= v/;;u

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, आरसीएच, पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और संचारी रोगों के पहलुओं का क्षेत्र अध्ययन किया गया तथा जन स्वास्थ्य में विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों अर्थात् एनआईएचएआई, एम्स को अनुसंधान कार्य हेतु क्षेत्र सेवाएं भी प्रदान की गईं।

16-24-4 vU; xfrfof/k;k

vkVh dk mUu;u% एनआरएचएम के तहत राज्य राजधानी क्षेत्र की वित्तीय सहायता से इस केन्द्र के ऑपरेशन थिएटर को पूर्णतः वातानुकुलित बनाया गया है।

,,u,e if'k{k.k fo|ky; dk l`n<hdj.k% एएनएम प्रशिक्षण विद्यालय को एएनएम विद्यालय में दो व्याख्यान कक्षों और छात्रावास में तीन कमरों और संलग्न प्रसाधन कक्षों के निर्माण के साथ सुदृढ़ किया गया है। एनआरएचएम के तहत सीडीएमओ (दक्षिण–पश्चिम), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली द्वारा निधि निर्गत की गई थी।

vf[ky Hkkjrh; iYl ikfy;k dk;Øe% विगत बीस वर्षों से इस केन्द्र में जीएनसीटी/एमसीडी के सहयोग से प्लस पोलियो कार्यक्रम चल रहा है। इस केन्द्र में क्षेत्रीय टीका केन्द्र स्थापित किया गया है तथा गतिविधियों के पर्यवेक्षण हेतु नोडल चिकित्सा अधिकारी नियुक्त किया गया है।

MkV~l dUn% इस केन्द्र में टीबी रोगियों की जांच और उपचार के लिए जीएनसीटी/एमसीडी का एक डॉट्स केन्द्र स्थापित किया गया है। इस केन्द्र में पीएचसी के चिकित्सा अधिकारियों द्वारा बलगम की जांच के लिए रोगी भेजे जा रहे हैं।

vkbZlhVhlh dUn% एचआईवी/एड्स रोगियों के परामर्श और उपचार हेतु जीएनसीटी/एमसीडी के सहयोग से एक आईसीटीसी केन्द्र स्थापित किया गया है।

eysfj;k fDyfud% इस केन्द्र में एमसीडी का एक मलेरिया क्लिनिक संचालित है। इस केन्द्र में मलेरिया जांच हेतु चिकित्सा अधिकारियों द्वारा रोगी भेजे जा रहे हैं।

vkjlh,p f'kfoj% पीएचसी नजफगढ़ के अंतर्गत गोपाल नगर और कुतुब बिहार में आरसीएच शिविर आयोजित किए गए। आरसीएच शिविरों में आरएचटीसी द्वारा निम्नलिखित सेवाएं प्रदान की गई थीं: (i) सामान्य ओपीडी (ii) टीकाकरण सहित नवजात परिचर्या (iii) पांच वर्ष से कम बच्चों का टीकाकरण (iv) परिवार नियोजन सेवाएं (v) स्त्री गुप्तांग मार्ग रोग (vi) गर्भनिरोधक परामर्श (vii) प्रयोगशाला जांच (viii) रोगियों को औषधि वितरण (ix) दंत, नेत्र रोग तथा बाल चिकित्सा की विशेषज्ञ सेवाएं।

16-25 yMh jhfMx gYFk Ldy fnYyh

16-25-1 ifjp;

1918 में स्थापित, लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल, (एलआरएचएस), दिल्ली की अग्रणी संस्थानों में से एक माना जाता है और यह स्वास्थ्य–आगंतुकों के प्रशिक्षण के लिए अपनी तरह का पहला संस्थान है। स्कूल का लक्ष्य सामुदायिक स्वास्थ्य में नर्सिंग कार्मिकों की विभिन्न श्रेणियों को प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ–साथ सम्बद्ध रामचन्द्र लोहिया एमसीएच व परिवार कल्याण केन्द्र के माध्यम से एमसीएच और परिवार कल्याण सेवाएं उपलब्ध कराना। 1952 में भारत सरकार ने स्कूल को अपने अधिकार में ले लिया और इसके साथ राम चंद लोहिया एमसीएच केन्द्र को जोड़ दिया।

16-25-2 xfrfof/k;k

संस्थान वर्तमान में निम्नलिखित पाठ्यक्रम प्रदान कर रहा है–

¼i½ lgk;d ul&lg&feMokbQ ikB~;Øe

यह पाठ्यक्रम भारतीय नर्सिंग परिषद के तहत है तथा इसके लिए योग्यता मापदंड 12वीं कक्षा उत्तीर्ण है। सत्र 2015–17 के लिए इस वर्ष 40 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। कुल विद्यार्थियों की संख्या 80 है अर्थात 2014–16 व 2015–17 प्रत्येक हेतु 40 विद्यार्थी।

¼ii½ cg&mn~ns'; dk;ZdrkZ ;kstuk ds rgr LokLF; dk;ZdrkZ ¼efgyk½ ds fy, iquk&i= ikB~;Øe

इस पाठ्यक्रम की अवधि छः माह है। वर्ष में दो बार अर्थात प्रत्येक वर्ष जनवरी व जुलाई में विद्यार्थी प्रवेश लेते हैं। 34 विद्यार्थी जनवरी, 2014 से जून, 2014 के लिए चयन किए गए। सभी 34 विद्यार्थियों ने पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया और वे सभी जून 2015 में उत्तीर्ण हुए। जुलाई, 2015 से दिसंबर, 2015 बैच के लिए 35 अभ्यर्थी चुने गए और सभी ने पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। ये छात्र दिसंबर, 2015 में अंतिम परीक्षा में बैठेंगे।

¼iii½ ikLV cfld ch-,l-lh- ¼uÉlx½ % इस संस्थान में पोस्ट बेसिक बीएससी (नर्सिंग) पाठ्यक्रम चलाने हेतु मंत्रालय का प्रशासनिक अनुमोदन स्वीकृत किया गया है।

¼iv½ unkfud vuHko

विद्यार्थियों को चिकित्सकीय अनुभव हेतु ग्रामीण और शहरी स्वास्थ्य केन्द्रों, विभिन्न अस्पतालों जैसे दिल्ली में सफदरजंग, आरएमएल अस्पताल, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज और कलावती सरन बाल अस्पताल और दिल्ली से बाहर के अस्पतालों में भेजा जाता है।

विद्यार्थियों को ग्रामीण क्षेत्र में अनुभव हेतु ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र, नजफगढ़ और ग्रामीण क्षेत्र प्रशिक्षण केन्द्र छावला मे भी नियुक्त किया जाता है। विद्यार्थियों को स्कूल की 2 किमी. की परिधि में दिल्ली नगर निगम के विभिन्न एमसीएच केन्द्रों में भेजा जाता है।

¼v½ jke pan ykfg;k ,elh,p rFkk ifjokj dY;k.k dsUæ

यह विद्यार्थियों को शहरी स्वास्थ्य अनुभव हेतु क्षेत्रीय अभ्यास प्रदान करवाता है। यह 40,000 जनसंख्या को एकीकृत मातृत्व और बाल स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवाएं देता है। साप्ताहिक क्लिनिक आयोजित किए जाते है जैसे प्रसव पूर्व परिचर्या, स्वास्थ्य शिशु टीकाकरण, परिवार नियोजन क्लिनिक, हमारे छात्रों और स्टाफ द्वारा समुदाय में घर–घर सेवाएं भी दी जाती हैं।

समुदाय में टीकाकरण की स्थिति और लक्षित जोड़ों की संख्या का पता लगाने हेतु लेडी हार्डिंग स्वास्थ्य स्कूल को राम चंद लोहिया मातृत्व एवं बाल स्वास्थ्य नवजात शिशु कल्याण केन्द्र के अधीन नियमित सर्वेक्षण जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अवधि के दौरान पता लगाए गए जोड़े 7054 थे जिसने परिवार नियोजन को लगभग 70% कवरेज दी तथा सभी टीकाकरणों की 100% कवरेज पाई गई।

16-25-3 vU; xfrfof/k;k

स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम स्कूल के साथ–साथ समुदाय एवं केन्द्र में विभिन्न उपागमों द्वारा आयोजित किया गया अर्थात फिल्म प्रदर्शन, बाल प्रदर्शन, जादूगर प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कठपुतली प्रदर्शन, भूमिका नाटक के पश्चात समूह प्रदर्शनी, भाषण प्रतियोगिता।

vkbvkbVh,Q% छात्रों एवं कर्मचारियों ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रगति मैदान में भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में आयोजित निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में हिस्सा लिया।

iYl ikfy;k dk;Øe% हमारे विद्यार्थियों और स्टाफ ने दिल्ली में आयोजित पल्स पोलियो कार्यक्रम, प्रजनन बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम तथा संपूर्ण स्वास्थ्य मेला आदि में भाग लिया।

,l,u, xfrfof/k;k % एलआरएचएस में पाठ्यंतर गतिविधियों के रूप में नियमित एसएनए गतिविधियां की।

16-25-4 ctV

वर्ष 2015–16 के लिए संस्थान एवं कल्याण स्टाफ के लिए कुल बजट 4,13,00,000 रूपये (चार करोड़ तेरह लाख मात्र) है।

16-26 ,p,llhlh ¼bfM;k½ fyfeVsM] uk,Mk

16-26-1 ifjp; vkj dk;

- एचएससीसी को मार्च, 1983 में कंपनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत 50 लाख रूपए की प्रदत्त पूंजी और 40 लाख की भुगतान पूँजी के साथ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रलय के अंतर्गत एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में समावेशन किया गया है। दिनांक 31.3.2015 के अनुसार कंपनी की अधिकृत पूंजी 500 लाख रुपए है जो 100/–रूपए के 5,00,000 इक्विटी शेयर में विभाजित है। दिनांक 31.3.15 के अनुसार कंपनी की प्रदत्त पूंजी 240 लाख रूपए है। इसमें इसके रिजर्व और अधिशेष में से मौजूदा शेयर होल्डर्स को वित्तीय वर्ष 2003–04 और 2008–09 के दौरान जारी क्रमशः 120 लाख और 80 लाख रूपए का बोनस शामिल है। शुरूआत से ही कंपनी के सारे कारोबार का प्रबंधन सरकार या अन्य किसी स्रोत से किसी भी ऋण के बगैर किया गया है। एचएसएलसी ने सितम्बर, 1999 से 'मिनी रत्न' का दर्जा कायम रखने में उत्कृष्टता दर्शायी है।

- एचएससीसी स्वास्थ्य परिचर्या अवसंरचना जैसे अस्पताल मेडिकल कॉलेज प्रयोगशालाएं तथा चिकित्सा उपकरणों एवं भेषजों के प्रापण के क्षेत्रों में एक बहुविषयक प्रसिद्ध परामर्शदाता संगठन है। इसके सेवा स्पेक्ट्रम में संभाव्यता अध्ययनों, डिजाइन इंजीनियरिंग, विस्तृत निविदा प्रलेखन, निर्माण पर्यवेक्षण, व्यापक परियोजना प्रबंधन, सिविल, विद्युत, मेकनिकल, सूचना प्रौद्योगिकी एवं सहायक चिकित्सा सेवा क्षेत्रों में प्रापण सहायता सेवाएं कवर की गई है। इसके प्रमुख ग्राहक हैं:

  - ➢ स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और इसके अस्पताल/संस्थान,
  - ➢ विदेश मंत्रालय एवं अन्य मंत्रालय,
  - ➢ राज्य सरकार एवं उनके अस्पताल/संस्थान,
  - ➢ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/अन्य संस्थान जैसे आईसीएमआर, सीएसआईआर, आईसीएआर, डीओबीटी, पीआईएमएस, पीजीआई, चंडीगढ़ और अन्य व्यापार सहयोगी।

स्वास्थ्य अवसंरचना क्षेत्र में ज्ञान प्रबंध कंसलटेंसी कंपनी होने के कारण एचएससीसी आर्किटेक्ट, इंजीनियर, इकोनोमिस्ट, चार्टर्ड एकाउंटेंटस, कोस्ट एकाउंटटेंटस, एमबीए का प्रतियोगी और अत्यंत दक्ष संवर्ग है और मेडिसिन एवं कोरपोरेट प्लानिंग आदि के लोगों में कंसलटेंटस का पूल है। एचएससीसी में सभी स्तरों पर कार्यरत कर्मचारियों के संबंध अच्छे हैं।

विश्वस्तरीय परामर्शी संगठन में विकसित करने के लिए कंपनी के ऑपरेशनों और ग्राहक आधार का विस्तार करने तथा विविधीकरण पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त, कंपनी विदेश मंत्रालय के जरिए व्यावसायिक अवसरों को तलाशने पर विचार कर रही है।

कंपनी आईएसओ 9001 मान्यता प्राप्त कंपनी है। कंपनी ने समय–समय पर गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली और अपने ग्राहकों के गुणवत्ता आश्वासन तथा अपने ग्राहकों की संतुष्टि में वृद्धि के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। कंपनी "आईएसओ 9001:2008" प्रमाणित कंपनी है और इसके पास अपनी विभिन्न परियोजनाओं और दायित्वों की आवश्यकतानुसार आंतरिक गुणवत्ता नियंत्रण है।

कंपनी अच्छे कॉरपोरेट शासन आचरणों का अनुसरण करती है। कंपनी में कॉरपोरेट शासन आचरण पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा, व्यावसायिकता, जिम्मेवारी और उपयुक्त प्रकटीकरण, ज्ञान प्रबंध प्रणाली, ई–टेंडरिंग, ई–प्रापण, आतंरिक सह सहवर्ती ऑडिट पर केन्द्रित हैं।

16-26-2 py jgh ieq[k ijke'khZ ifj;kstukvksa dk lkj

d- okLrq vk;kstuk] fMtkbu bathfu;fjx ,oa ifj;kstuk izca/ku lsok,a

- एम्स कैंपस, अंसारी नगर, नई दिल्ली में एम्स के ओपीडी ब्लाक, छात्रावास ब्लाक, मदर एंड चाइल्ड ब्लाक, पेड वार्ड, सर्जिकल ब्लॉक के लिए एम्स में विनिर्माण कार्य।
- सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली का सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक और आपातकालीन ब्लॉक का पुनर्विकास (चरण–I) किया जा रहा है।
- डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली में सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक।
- सरिता विहार, नई दिल्ली में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (आयुष विभाग, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय) का निर्माण।
- लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली के लिए व्यापक पुनर्विकास योजना।
- राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एमसीडीसी), नई दिल्ली
- एम्स, रायबरेली में आवास तथा अस्पताल का विनिर्माण
- एम्स, झज्जर (हरियाणा), दूसरे परिसर में राष्ट्रीय कैंसर संस्थान का विनिर्माण

- जीएमसी, पटियाला में नर्सिंग कॉलेज और राष्ट्रीय स्तर फिजियोथिरेपी वर्कशाप और सब– स्टेशन कार्य, जीएमसी, पटियाला।
- उन्नत कैंसर नैदानिक, उपचार और अनुसंधान केन्द्र, भटिंडा।
- कल्पना चावला शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, करनाल, हैदराबाद
- पीजीआईएमईआर, संगरूर (हरियाणा), ने सेटेलाइट केन्द्र का निर्माण
- पीएमएसएसवाई के तहत सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय, अमृतसर में गुरू तेग बहादुर नैदानिक केन्द्र का निर्माण
- पीएमएसएसवाई के तहत कोलकाता चिकित्सा महाविद्यालय में सुपर स्पेशियलिस्टी ब्लाक, ओपीडी और शैक्षणिक ब्लाक का निर्माण
- पीएमएसएलवाई के तहत भुवनेश्वर (ओडिसा) मे एम्स आवासीय बैलेंस तथा फेस II का निर्माण
- आईआईटी खडगपुर के लिए 750 बिस्तरों वाले अस्पताल (चरण–I 400 बिस्तर) का निर्माण
- पशु चिकित्सा जैविक उत्पाद संस्थान, पुणे के लिए वैंक्सीन प्रोसेसिंग सुविधाएं
- कोचीन (केरल) में कैंसर अस्पताल का विनिर्माण
- चरण III कार्य के तहत राष्ट्रीय यूनानी औषध संस्थान (एनआईयूएम) बैंगलुरू, रेजीमेंटल थेरेपी ब्लाक, ऑडिटोरियम एवं फार्मेसी भवन का निर्माण
- राष्ट्रीय पशु जैव–प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद
- डॉ. आर.पी. मेडिकल कॉलेज, कांगडा के लिए आवास व छात्रावास का निर्माण।
- निम्हांस, बैगलुरू के तंत्रिका विज्ञान सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक निर्माण
- बैंगलुरू मेट्रो रेल निगम के लिए बेंगलुरू चिकित्सा महाविद्यालय के परिसर में माता एवं शिशु मेट्रो ब्लाक
- एनआरएचम – छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, केरल और हिमाचल प्रदेश
- नाहरलागुन (आंध्र प्रदेश) में सार्वजनिक अस्पताल का निर्माण
- आरआईएमएस, इम्फाल ओपीडी ब्लॉक का निर्माण
- क्षेत्रीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान (आरआईएमएस) इम्फाल में पीजी पुरूष एवं महिला होस्टल, यूजी
- महिला हास्टल, नर्सिंग होम और इंटरनी अस्पताल का निर्माण (पैकेज–I)
- आरएमआरसी, डीब्रूगढ़ में बायो–सेफ्टी स्तर–3 प्रयोगशाला निर्माण
- तेजपुर स्थित एलजीबीआरआईएमएच (मुख्य भवन) (175.16 करोड रू.) का उन्नयन कार्य।
- एनईआईजीआरआईएचएमएस, शिलांग के लिए पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान का निर्माण

fon'k

- बीर अस्पताल, काठमांडू, नेपाल के लिए 200 बिस्तर वाला आपातकालीन एवं अभिघात केन्द्र
- डिकोया, श्रीलंका में जिला जनरल अस्पताल

[k- iki.k ic/ku lok,

- सुपर स्पेशियलिटी एवं आपातकालीन ब्लॉक/ सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली के लिए मेडिकल उपकरण।
- कल्पना चावला सरकारी मेडिकल कॉलेज, करनाल, हरियाणा के लिए मेडिकल उपकरण।
- केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना के लिए औषध एवं उपकरण।
- एआईआईए, सरिता विहार के लिए उपकरण की खरीद

- एनईआईजीआरआईएचएमएस, शिलांग के लिए चिकित्सा उपकरण।
- बीर अस्पताल, काठमांडू, एमईए के लिए चिकित्सा उपकरण।
- श्रीलंका के लिए चिकित्सा उपकरण की आपूर्ति।
- यांगान और सितवे म्यांमार के लिए चिकित्सा उपकरण।

16-26-3 foÙkh; fof'k"Vrk,¡

कंपनी ने अब तक का सबसे अधिक कुल आय, परामर्श शुल्क, कर पूर्व लाभ, कर पश्चात लाभ राजस्व और अतिरिक्त तथा लाभांश रिकार्ड किया।

विगत वर्ष के 60.45 करोड़ रुपए की तुलना में इस वर्ष 63.65 करोड़ रुपए की आय प्राप्त की जो 5.62% की वृद्धि दर्शाती है। विगत वर्ष के 39.19 करोड़ रुपए के परामर्श शुल्क की तुलना में इस वर्ष 42.28 करोड़ रुपए प्राप्त किया जो 7.88 प्रतिशत की वृद्धि है।

कंपनी ने विगत वर्ष के 32.14 करोड़ रुपए की तुलना में इस वर्ष 37.95 करोड़ रुपए की कर पूर्व लाभ कमाया। अतः कंपनी ने वर्ष 2014–15 के लिए कर पूर्व लाभ में 2.18 प्रतिशत की वृद्धि की। कंपनी ने विगत वर्ष के 23.98 करोड़ रुपए की तुलना में इस वर्ष 24.54 करोड़ रुपए का निवल लाभ अर्जित किया जो 2.34 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

एचएससीसी में वर्ष 2014–15 के लिए वर्तमान वर्ष के लाभ में से 2.18 करोड़ रुपए की प्रदत्त पूंजी पर 205 प्रतिशत के लाभांश की सिफारिश की गई है। कंपनी ने लगातार 30वें वर्ष लाभांश घोषित किया। इस वर्ष लाभांश का भुगतान करने पर भारत सरकार को भुगतान किया गया, संचयी लाभांश 42.42 करोड़ रुपए होगा जो कंपनी के प्रदत्त इक्विटी पूंजी का लगभग 17 गुना होगा।

16-26-4 dkikjV lkekftd mRrjnkf;Ro

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान कंपनी ने कोर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में निम्नलिखित प्रयास किए हैं:

- डीपीई दिशानिर्देशों के अनुसार कंपनी ने वित्तीय वर्ष 2014–15 के दौरान ''स्वच्छ गंगा निधि'' और रक्तदान शिविर के योगदान हेतु 40.20 लाख रू. (चालीस लाख बीस हजार रूपए मात्र) का योगदान किया।

16-27 ,p,y,y ykbQd;j fyfeVM

16-27-1 ifjp;

एचएलएल लाइफकयर लिमिटेड (एचएलएल) का गठन वर्ष 1966 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में किया गया। एचएलएल का पहला प्लांट दिनांक 5 अप्रैल, 1969 को केरल राज्य के तिरुवनंतपुरम जिले में पेरूरकाडा में मैसर्स ओकामोटो इंडस्ट्रीज जापान के तकनीकी सहयोग से शुरू किया था। आज 7 विनिर्माण प्लांटों के साथ एचएलएल एक बहुउत्पाद, बहुइकाई संगठन के रूप में विकसित हो गया है जो मानव जाति की विभिन्न जन स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करता है। वर्ष 2003 में, जब एचएलएल का 163 करोड़ आईएनआर का अच्छा टर्नओवर था, उसने वर्ष 2010 तक 1000 करोड़ आईएनआर टर्नओवर की कम्पनी बनने का लक्ष्य निर्धारित किया था। एचएलएल ने वर्ष 2010 तक न केवल उससे अधिक लक्ष्य हासिल किया बल्कि वर्ष 2020 तक 10 गुना अधिक विकास का लक्ष्य निर्धारित किया है।

अब, एचएलएल एक मिनी रत्न, अनुसूची 'ख' केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। एचएलएल विश्व की एकमात्र कंपनी है जो इतनी व्यापक किस्मों के गर्भनिरोधकों का निर्माण और विपणन करती है। आज एचएलएल के पास प्रतिवर्ष 1.9 बिलियन कंडोम का उत्पादन करने की क्षमता है, जो इसे कंडोम निर्माण में विश्व की अग्रणी कंपनी बनाता है, जो कि विश्व उत्पाद क्षमता का लगभग 10% है।

देश की स्वास्थ्य परिचर्या की आवश्यकता को पूरा करने के लिए नवप्रवर्तन उत्पादों, सेवा और सामाजिक कार्यक्रम की व्यापक श्रृंखला के साथ एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड "स्वस्थ पीढ़ी हेतु नवप्रवर्तन" के लक्ष्य के साथ कार्य कर रहा है।

16-27-2 foRrh; ifj.kke% 2014&15

कंपनी का 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष का वित्तीय निष्पादन निम्नवत् हैं:

(लाख में)

foRrh; fooj.k	Lor¡=		Lkefdr	
	2014-15	**2013-14**	**2014-15**	**2013-14**
परिचालन से आय (सकल)	106438.70	94726.54	111363.76	95421.00
उत्पाद शुल्क	633.74	558.38	810.69	563.04

परिचालन से आय (निकल)	105804.96	94168.16	110553.07	94857.96
अन्य आय	398.37	1200.67	455.49	1189.49
कुल आय	106203.33	95368.83	111008.56	96047.45
कराधान से पूर्व लाभ	3752.79	3621.08	3903.12	3627.69
कराधान व्यय	597.65	1050.31	589.22	1048.84
वर्ष के दौरान लाभ	3155.14	2570.77	3313.90	2578.85
लाभांश (लाभ वितरण पर कराधान सहित)	465.87	452.86	465.87	452.86
जनरल रिजर्व को स्थानांतरण	2689.31	2081.11	2801.22	2086.44

एचएलएल ने अपने कार्यों से पिछले वर्ष के 941.68 करोड़ रुपए की तुलना में वर्ष 2014–15 के दौरान 1,058.04 करोड़ रुपए का सर्वाधिक राजस्व प्राप्त किया। वर्ष 2013–14 के 78.73 करोड़ रुपए के मुकाबले ब्याज, कर, स्फीति और ऋणमुक्ति (ईबीआईटीडीए) से पहले आय 9.71% बढ़कर 85.99 करोड़ रुपए हो गई। कर चुकाने से पहले लाभ (पीबीटी) पिछले वर्ष 2013–14 में 36.21 करोड़ रुपए की तुलना में 37.53 करोड़ रुपए था। कर चुकाने के बाद लाभ (पीएटी) वर्ष 2013–14 के 25.71 करोड़ रुपए की तुलना में 31.55 करोड़ रुपए था। निवल संपत्ति 426.28 करोड़ रुपए थी जो पिछले वित्तीय वर्ष 399.39 करोड़ रुपए की तुलना में 6.7% अधिक थी।

16-27-3 Hkkfrd fu"iknu% 2014&15

एचएलएल की विनिर्माण गतिविधियों की समीक्षा निम्नवत् है:

d- l	mRikn	bdkb	LFkkfir {kerk	x|.kkRed fofuekZ.k ¼fiNyk o"kZ½	{kerk mi;kx ¼%½
1	कंडोम	मिलीयन. पीस	1801.00	1819.00 (1638.00)	101.00
2	रक्त बैग	मिलीयन. पीस	12.50	12.52 (11.05)	100.14
3	टांका	लीटर डजन	6.00	1.74 (1.42)	29.12
4	सीयू–टी	मिलीयन. पीस	5.50	4.87 (5.12)	88.63
5	सेटेरिओडल ओ सी पी	मिलीयन साइकलस	98.66	41.25 (32.25)	41.81
6	गैर सेटेरिओडल ओ सी पी	मिलीयन टबलेटस	30.00	38.81 (28.49)	129.37
7	सेनेट्री नेपकीन	मिलीयन. पीस	315.00	126.44 (97.60)	40.14
8	गर्भ जांच कार्ड	मिलीयन. पीस	26.00	13.67 (17.75)	52.58

16-27-4 vu"kxh vkj l;Dr mn;e

¼i½ ,p,y,y ck;kVd fyfeVM ¼,pch,y½

एच एल एल बायोटेक लिमिटेड (एचबीएल) जो पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, ने 12 मार्च, 2015 को अपनी स्थापना के तीन वर्ष पूरे कर लिए हैं। भारत सरकार के वैश्विक टीकाकरण कार्यक्रम (यूआईपी) हेतु टीके के निर्माण और आपूर्ति के राष्ट्रीय महत्व की परियोजना अत्याधुनिक एकीकृत टीका परिसर का निर्माण अपनी समापन के अंतिम चरण में है। इंजीनियरिंग कार्य जैसे सिविल, इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, एचवीएसी, मोडयूलर, जलशोधन प्रणाली, डीजी कार्य, ईटीपी/एसटीपी, सब–स्टेशन और लोंग लीड प्रोसेस इंजीनियरिंग उपकरण खरीद आदि परियोजना कार्यान्वयन सूची के अनुसार हो रहे हैं।

एच बी एल ने लोन लाइसेंस करार के तहत टीका ब्रांड 'पेंटाहिल' (पैंटावेलेंट हेतु) और "हिवेक–बी" (हेपाटाइटिस–बी हेतु) के प्रमोशन के साथ 30 जनवरी, 2015 को व्यापार परिचालन शुरू किया।

एच बी एल ने रेबिज टीके के लिए गृह प्रौद्योगीकी विकास सफलतापूर्वक कर लिया है। टीआईसीईएल बायोपार्क में कंपनी द्वारा रेबिज टीका तैसार किया गया और मई 2014 के दौरान एक वर्षीय रियल टाइम स्टेबिल्टी हेतु एनसीएलएएस, हैदराबाद में जांच किया गया था। एचबीएल रेबिज टीके की अपेक्षित स्टेबिल्टी जांच से संपुष्टि हुई। दो वर्षीय रिपल टाइम स्टेबिल्टी मई, 2015 के बाद भारतीय पाश्चर संस्थान, कूनूर में निर्धारित है।

एच बी एल ने क्रिश्चन मेडिकल कॉलेज (सीएमसी), वेलोर से क्लिनीकल आयसोलेट/स्ट्रेन की व्यवस्था कर टीआईसीएल बॉयोपार्क में हेपाटाइटिस टीके का प्रयोगशाला स्तरीय निर्माण भी आरंभ किया है।

एच बी एल ने बीसीजी–वीएल, गुएंडी को बीसीजी टीके के लिए सीड और प्रौद्योगिकी हेतु प्रौद्योगिकी साझेदार के रुप में चुना है। खसरे का विकास और निर्माण, जेई और पेटावेलेंट टीके का सूत्रीकरण हेतु समान प्रौद्योगिकी चयन की प्रक्रिया चल रही है।

एच बी एल ने फरवरी, 2016 आईवीसी परियोजना के मेकेनिकल समापन तथा तक वैधकरण प्रक्रिया शुरू करने, सितंबर, 2016 तक टीकों के परिक्षण बैचों का उत्पादन करने और दिसंबर, 2017 तक वाणिज्य उत्पादन आरंभ करने लक्ष्य निर्धारित किया है।

¼ii½ xkok ,Vhck;kfVd ,M QkekZflfVdy fy-

वर्ष 2013–14 के दौरान, एचएलएल ने फार्मा क्षेत्र में एचएलएल द्वारा लक्षित वृद्धि के अनुरूप एचएलएल की फार्मा निर्माण क्षमताएं बढ़ाने हेतु मैसर्स गोवा एंटीबायोटिक फार्मासिटिकल लि. (जीएपीएल), गोवा सरकार का सार्वजनिक उपक्रम के भुगतान किए गए शेयर का 74% प्राप्त किया है।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, जीएपीएल की परिचालन राजस्व विगत वर्ष की तुलना में 22.58% बढ़ी है। जीएपीएल फार्मा सिटीकल सूत्र निर्माण कंपनी है और चिकित्सा की एलोपेथी, आयुर्वेद और होम्योपैथी प्रणालियों की औषधियां बनाती है। सूत्रों की बहुतायत आपूर्ति राज्य संस्थानों/अस्पतालों को की जाती है। जीएपीएल स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के अधीन एकमात्र फार्मासिटिकल सूत्र निर्माण कंपनी है जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कंपनी ने मुख्यतः तीन क्षेत्रों अर्थात् (i) जेनेरिक औषधि (ii) ओवर द काऊंटर ड्रग्स (ओटीसी) तथा (iii) एचएलएल के कारपोरेट विजन 2020 योजना के साथ समानता रखने और व्यापार बढ़ाने हेतु अनुबंध निर्माण पर ध्यान देने की योजना बना रही है।

31 मार्च 2015 तक जीएपीएल की प्राधिकारी तथा भुगतान की अंशपूंजी क्रमशः 25 करोड़ रुपए और 19.02 करोड़ रुपए है। जीएपीएल में एचएलएल लाइफ केयर लिमिटेड (धारक कंपनी) का शेयर धारण 74% है और शेष 26% ईडीसी लिमिटेड द्वारा धारण किए गए है।

¼iii½ ,p ,y ,y bQkVd lfofll fyfeVM ¼,pvkbVhb,l½

एचआईटीईएस, की गठन एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड के स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के रूप में 03 अप्रैल, 2014 को सेवा प्रदान करने के कारोबार को संभालने अर्थात् अवसंरचना विकास, सुविधा प्रबंधन, प्रापण परामर्श और संबद्ध सेवाएं, प्रदान करने तथा इन क्षेत्रों में व्यवसाय सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए किया गया था। प्रारंभिक वर्ष के दौरान सभी चल रही परियोजनाएं एचएलएल द्वारा व्यवस्थित की जा रही थी, तदनुसार कंपनी ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान राजस्व नहीं बनाया। एचएलएल संबंधित ग्राहकों की मंजूरी के बाद उप–संविदा परियोजनाओं को एचआईटीईएस (चल रही और आगामी परियोजनाएं) को देने की योजना बना रहा है। अतः कंपनी को वर्ष 2015–16 से राजस्व प्राप्त करने की अपेक्षा है।

केन्द्र सरकार के पास कई ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा केन्द्र, एम्स जैसे संस्थान, नए चिकित्सा महाविद्यालय, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय नर्सिंग और पेरामेडिकल विज्ञान संस्थान आदि के गठन का प्रस्ताव हैं। ग्रामीण और शहरी भारत में स्वास्थ्य परिचर्या अवसंरचना में निवेश करने के लिए प्रचुर अवसर है। वर्ष 2025 के अंत तक 1.8 मिलियन बिस्तर वाले अस्पताल की आवश्यकता होगी। भौतिक अवसंरचना भारत में आने वाले वर्षों में उच्च वृद्धि दर की दिशा में और सामाजिक अवसंरचना (विशेषतः स्वास्थ्य, स्वच्छता व शिक्षा) में समावेशी वृद्धि की दिशा में देश की सहायता करेगी। एचआईटीईएस मुख्य तौर पर स्वास्थ्य परिचर्या अवसंरचना विकास और संबद्ध क्षेत्रों पर केन्द्रित होगा। अतः आशा है कि उपर्युक्त अवसरों से एचआईटीईएस के व्यवसाय संभावनाएं बढ़ेंगी।

¼iv½ ykbQ fLiax gkfLiVYl ikboV fyfeVM

वर्ष 2014–15 के दौरान, लाइफ स्प्रींग होस्पिटलस प्राइवेट लिमिटेड (एलएसएच) एचएलएल लाइफ केयर और एक्यूमेन फंड के बीच 50:50 का संयुक्त उद्यम की व्यापार आय में वर्ष 2013–14 की तुलना में 22.50% की वृद्धि हुई। एलएसएच ने समीक्षाधीन वर्ष के दौरान 7618 प्रसव कराए हैं। वर्तमान में यह संयुक्त उद्यम हैदराबाद में 12 अस्पतालों का समूह चला रहा है। इन अस्पतालों में से 31.03.2015

को एक अस्पताल ने परिचालन के 7 वर्ष पूरे किए है तथा 2 अस्पतालों ने 6 वर्ष, 3 अस्पतालों ने 5 वर्ष तथा शेष 6 अस्पतालों ने 4 वर्ष पूरे कर लिए है। वर्ष 2014–15 के दौरान कंपनी ने 52.59 लाख का नकद लाभ प्राप्त किया है।

16-27-5 fgnLrku yVDl Qfeyh Iykfuax iekk'ku VLV ¼,p,y,QihihVh½

एच एल एल लाइफ केयर लि. द्वारा स्थापित एचएलएफपीपीटी एक लाभरहित व्यवसायिक स्वास्थ्य सेवा संगठन है। यह निम्नलिखित क्षेत्रों की परियोजनाएं चलाता है:

- सामाजिक विपणन एवं फ्रेंचाइजिंग।
- एनआरएचएम को एचआईवी हेतु निवारण, परिचर्या और सहयोग और तकनीकी सहायता देना।
- ज्ञान प्रबंधन
- कॉरपोरेट सामाजिक जबावदेही परियोजना पर पीएसयू तथा निजी कॉपोरेट को लुभाना।

एचएलएफपीपीटी बाल स्वास्थ्य, एचआईवी और एड्स परिचर्या और सहयोग कार्यक्रमों के कार्यान्वयन हेतु स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, कई राज्य सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसियों की साझेदारी में सहयोग प्रदान कर रहा है।

वर्ष के दौरान उपलब्धियां निम्नवत् है:

¼i½ lkekftd foi.ku

वर्ष 2014–15 में, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) ने छह राज्यों अर्थात् आंध्र प्रदेश, बिहार, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड में लक्षित कंडोम सामाजिक विपणन कार्यक्रम का कार्यान्वयन एचएलएलपीपीटी को प्रदान किया है। इन राज्यों में बिक्री उपलब्धि है: उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड में 244.69 मिलियन कंडोम, बिहार में 60.12 मिलियन कंडोम, मध्य प्रदेश में 64 मिलियन कंडोम, दिल्ली में 23 मिलियन कंडोम तथा आंध्र प्रदेश में 34 मिलियन कंडोम।

वित वर्ष 2014–15 के दौरान, एचएलएफपीपीटी बिहार व ओडिशा राज्य में मानकीकृत मूल्य पर गुणवत्ता परक परिवार नियोजन (एफपी) सेवा प्रदान कर सका।

¼ii½ lkekftd QUpkbftx

- उत्तर प्रदेश: मेरीगोल्ड हेल्थ नेटवर्क (एमजीएचएम) मॉडल उच्च गुणवत्ता वाला किफायती एमसीएच और एफपी सेवाएं प्रदान करने हेतु उत्तर प्रदेश के 38 जिलों में स्थापित समाजिक फ्रेंचाइजिंग मॉडल है। उत्तर प्रदेश में वर्ष 2014–15 में एमजीएचएन के तहत सूचना, परामर्श और संदर्भ सेवा के लिए दूरस्थ गांव/झुग्गी झोपड़ी स्थलों पर 9,516 मेरी तरंग सदस्यों सहित 38 जिलों में 80 मेरी गोल्ड अस्पताल, 180 मेरी सिल्वर क्लाइंट परिचालित थे।
- राजस्थान: मेरी गोल्ड के तहत राजस्थान के 19 जिलों में मातृत्व स्वास्थ्य उत्पाद व सेवा तक पहुंच परियोजना परिचालित है। वर्ष के दौरान 40 फ्रेंचाइजिंग सहित एमजीएचएन बढ़ी जिसमें से 21 शहरी और 19 ग्रामिण क्षेत्रों में है। समीक्षा के बाद, हमने 1286 मेरी तरंग सदस्यों का चयन किया है।
- आंध्र प्रदेश: वर्ष 2014–15 के दौरान शुरू सूचना, परामर्श और संदर्भ सेवाएं प्रदान करने के लिए दूरस्थ ग्रामीण स्थलों पर 368 सामुदायिक स्तर स्वैच्छिक अथवा मेरी तरंग साझेदारों सहित 11 मेरी गोल्ड अस्पताल 8 जिलों में परिचालित है। वर्ष 2014–15 में, नेटवर्क को प्रदत्त सेवाओं में एएनसी को 677 बाह्य रोगी सेवा, 91 प्रसव और 5 गर्भाशय सेवाएं शामिल हैं।

¼iii½ ;kSu ,oa iztuu LokLF; esa ,pvkbZoh dk;Z iz/k vkSj rduhdh lg;kx ¼2014&15½

तकनीकी सहयोग समूह (टी एस जी) सामाजिक विपणन कंडोम, लॉगस्टिक सुदृढ़ीकरण, उपलब्धता व सुलभता हेतु मांग वृद्धि जारी रखना सुनिश्चित करने के आशय से अनिवार्य कंडोम संवर्धन है और नाको के साथ मिलकर निःशुल्क कंडोम के अपव्यय को कम करने का काम कर रहा है।

¼iv½ Kku i c/ku

एचएलएफपीपीटी एचआईवी/एड्स की विभिन्न परियोजना, सामाजिक विपणन में दस्तावेजीकरण अध्ययन के और एनएसीपी–IV, एनआरएचएम और एफपी 2020 के तहत प्रजनन स्वास्थ्य व चलाए जाने वाले क्षमता निर्माण से संबंधित अनुसंधान आयोजित करने के उद्देश्य वाली एक ज्ञान प्रबंधन स्थापित इकाई हैं।

¼v½ dkiksjV lkekftd tckongh

एचएलएफपीपीटी का सीएसआर एचएलएफपीपीटी की परियोजनाओं वे कार्याक्रमों के लिए निधि के स्रोत तथा आदि से अंत तक सीएसआर साधन के लिए कॉपोरेट के मुख्य साझेदार के रुप में संगठन की स्थिति बनाए रखने के लिए जबावदेह है। वर्ष 2014–15 में आगे बढ़ते हुए, कॉपोरेट क्षेत्र के साथ सीएसआर की साझेदारी नए कार्यक्रम जोड़ने के माध्यम से बढ़ी है। नए कॉर्पोरेट है सुजलोन एनर्जी, जिंदल स्टील एंड पॉवर लिमिटेड, डीएलएफ, एस्सर स्टील एंड ऑयल एंड गैस।

- सीआईआई (दिल्ली, चैन्नई, लखनऊ व रायपुर)
- एफआईसीसीआई (दिल्ली)
- एसोचेम (दिल्ली)
- पीएचडीसीआईआई (दिल्ली)

एचएलएफपीपीटी का राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, जो सीएसआर पर मुख्य रुप से केन्द्रित है, के साथ सक्रिय समन्वयन है। इनमें शामिल हैः–

- यूनाइटेड नेशनल ग्लोबल कॉमपेक्ट
- आईआईसीए